अभिनव रामानंद : स्वामीरामनरेशाचार्य

सम्पादक

डॉ. उदयप्रताप सिंह

जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्मारक सेवा न्यास

वाराणसी

पुस्तक नाम : **अभिनव रामानंद : स्वामीरामनरेशाचार्य**
सत्प्रेरक : जगद्गुरु रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज
© प्रकाशकाधीन :

संस्करण : प्रथम, सन् २०१५ ई.
मूल्य : ५००/- (पाँच सौ रुपये मात्र)
प्रतियाँ : १००० (एक हजार)
प्रकाशक : जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्मारक सेवा न्यास, वाराणसी
वितरक : श्रीमठ पञ्चगंगा, काशी (वाराणसी)
दूरभाष : (०५४२) २४०२२३०
मुद्रक : डी.जी. प्रिंटर्स, वाराणसी. मो. ९१+९९३५४०८२४७
Email : rajkumarjaiswal2012@gmail.com

ABHINAV RAMANAND SWAMI RAMNARESHACHARYA
d ted by Dr. Udai Pratap Singh

विषय-सूची

|| सुमनस्सुमनोऽञ्जलिः || : *प्रभुनाथ द्विवेदी* ५
सम्पादकीय ७

शुभकामना सन्देश

ज.गु. शंकराचार्य श्रीशारदापीठम्, शृंगेरी ११
श्रीमज्जगद्गुरुशंकराचार्य
श्रीनिश्चलानंद सरस्वती– गोवर्द्धनमठ, पुरी १२
बालयोगी उमेशनाथ १३
महंत रघुबीर दास १५
सेनाचार्य अचलानन्दगिरीजी महाराज १७
डॉ. महेश चंद्र शर्मा १८

१. साधू ऐसा चाहिये : *उदय प्रताप सिंह* १९
२. गुणग्राहक : स्वामी रामनरेशाचार्यजी : *देवर्षि कलानाथ शास्त्री* २५
३. षष्टिपूर्ति पर शत्-शत् अभिनंदन : *आचार्य रमाकांत आंगिरस* २९
४. जगद्गुरुरामानन्दाचार्य-श्रीमद्रामनरेशाचार्याणां
किमप्यद्भुतमाचार्यत्वम् : *वेदप्रकाशः शास्त्री* ३२
५. जगद्गुरु श्रीरामानंदाचार्य की परम्परा और
जगद्गुरु श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज : *कमलेशदत्त त्रिपाठी* ३८
६. लोकनायक श्रीरामनरेशाचार्य : *बलदेव वंशी* ४४
७. सन्त मिलन-सम सुख जग नाहीं : *विवेकी राय* ४९
८. एक शिखा शीतल : *देवेन्द्र दीपक* ५३
९. मानवता के ध्वजवाहक : स्वामी रामनरेशाचार्य : *रामबहादुर राय* ६०
१० स्वामी रामानन्द से श्रीरामनरेशाचार्य तक : *अशोक कुमार सिंह* ६७
११. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य : *ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल* ७१
१२. कर्तृत्त्व से कृतकृत्य होना : *कौशलेन्द्र पाण्डेय* ७४
१३. जगद्गुरुरामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य :
स्वभाव एवम् अनुभाव : *प्रभुनाथ द्विवेदी* ८१
१४. स्वामी रामनरेशाचार्य : बहुआयामी व्यक्तित्व : *बाबूराम त्रिपाठी* ९३
१५. अभिनवरामानन्दाचार्य और नया भारत : *शत्रुघ्न प्रसाद* ९७

१६. आचार्यश्री के कतिपय संस्मरण : *कमलेश झा* १०३
१७. वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि : *ब्रह्मानन्द शुक्ल* ११०
१८. एक सत्त्वसम्भृत व्यक्तित्व :
स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य : *पवनकुमार शास्त्री* ११३
१९. 'श्रीरामानन्दः स्वयं रामः
प्रादुर्भतो महीतले' : *स्वामी फूलडोल बिहारीदास* ११७
२०. ज.गु.रा. श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज : एक
अद्वितीय व्यक्तित्व : *मोहनलाल वर्मा* ११९
२१. फिर धन्ना-रैदास चाहिए : *के.एन. गोविन्दाचार्य* १२३
२२. स्वामीरामनरेशाचार्यजी महाराज को जैसा
देखा-समझा : *देवव्रत चौबे* १२७
२३. बहुआयामी प्रतिभा के धनी : स्वामीरामनरेशाचार्यजी
महाराज : *सेनाचार्य अचलानन्दजी* १३०
२४. रामानन्दसम्प्रदाय की चुनौतियाँ और वर्तमान
आचार्य : *जयकान्तशर्मा* १३४
२५. स्वामीजी सबके लिए वटवृक्ष हैं : *गणेश्वर शास्त्री द्राविड* १४१
२६. गुरु-कृपा : अम्बरीष राय १४३
२७. श्रीमठ : पुनर्जागरण के पचीस वर्ष : *सतीश कुमार* १४५
२८. आचार्यश्री : *प्रेमनारायण सिंह* १५६

भेंटवार्त्ता

२९. स्वामीजी से साक्षात्कार : *उदय प्रताप सिंह* १५९
३०. ज.गु.रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य से
भेंटवार्त्ता : *सत्येन्द्र शर्मा* १६७

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य के प्रवचनांश

३१. दुःख क्यों होता है ? १७८
३२. भ्रूण हत्या अर्थात् आतंकवाद १८०
३३. ईश्वरीय कण की खोज १८५
३४. भगवत्स्मरण करें १८९
३५. रजतजयंती परिक्रमा : अयोध्या महोत्सव : *उदय प्रताप सिंह* १९७
३६. रजतजयंती समापन समारोह २०५

सम्मान एवं अभिनंदनपत्र **२१०**

01.pmd 4 5/25/2015, 3:44 PM

।। सुमनस्सुमनोऽञ्जलिः ।।

प्रभुनाथ द्विवेदी

सीतारामं गुणातीतं सच्चिदानन्दरूपिणम् ।
वन्दे सदा सदाराध्यं विश्वात्मानं सनातनम् ।।१।।
कलौ रामावतारस्य रामानन्दजगद्गुरोः ।
धर्मविग्रहरूपस्य नतोऽहं पादकञ्जयोः ।।२।।
नौमि रामनरेशं श्रीरामानन्दं जगद्गुरुम् ।
श्रीमठकीर्तिसोपानं समारूढं दृढव्रतम् ।।३।।
समन्ततः समाजेऽस्मिन् भक्तानां हृदयेषु च ।
रामभावप्रसारार्थं नित्यं यो यतते सुधीः ।।४।।
देवोपमो विशालाक्षः शालप्रांशुर्महाभुजः ।
यथाकारस्तथा प्राज्ञः सद्गुणानां समाकरः ।।५।।
उदारः शिवसंकल्पो रामाय धृतजीवनः ।
प्रसक्तो रामभक्तेषु ह्यनासक्तो भवाप्लवे ।।६।।
शुभाननः प्रसन्नात्मा राघवाश्रयतत्परः ।
विद्वत्प्रियः स्वयं विद्वान् शास्त्रचक्षुर्विवेकवान् ।।७।।
सदाचाररतः श्रीमान् तपोनिष्ठो विचक्षणः ।
देशिको धर्मनीतीनां प्रेरकः पुण्यकर्मणाम् ।।८।।
आदर्शः सर्वसत्त्वानां नेता सत्पथगामिनाम् ।
विनेता मोहदृप्तानामनुनेता गुरुकर्मणाम् ।।९।।
रक्षितधर्ममर्यादो वर्धितवादिवैभवः ।
पोषितवैष्णवव्रात आदृतविद्वत्तल्लजः ।।१०।।
श्रीमान् रामनरेशोऽयं कीर्तितः स जगद्गुरुः ।
चिरं जीवतु धर्मात्मा सीतारामप्रसादतः ।।११।।
अस्यां वसन्तपञ्चम्यां षष्टिपूर्तौ शुभे दिने ।
श्रीवृद्ध्यै देशिकस्यास्य शुभाशंसा तनोतु मे ।।१२।।

पूर्व प्रो., महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

01.pmd 5 5/25/2015, 3:44 PM

सादा रहेगा

६/अभिनव रामानंद : स्वामीरामनरेशाचार्य (षष्टिपूर्ति पर्व)

सम्पादकीय

'अभिनव रामानंद : स्वामीरामनरेशाचार्य' ग्रंथ का चिंतन विगत तीन वर्षों से चल रहा है। पर लगता है कि इस चिंतन की परिपक्वता इसी वर्ष पूर्ण होनी थी। जगद्गुरु रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य महाराज के पदप्रतिष्ठित होने का यह रजत-जयंती वर्ष पूर्ण हो रहा है और भौतिक जीवन की षष्टिपूर्ति का मंगलमय क्षण भी है। इससे अधिक इस ग्रंथ की प्रासंगिकता और उपयोगिता क्या हो सकती है?

वर्तमान आचार्यश्री ने रामानंद सम्प्रदाय को सक्रियता की दृष्टि से एक नया स्वरूप प्रदान किया है। गत् सात-सवा सात सौ वर्षों में यह सम्प्रदाय अनेक धार्मिक आंदोलनों को पराभूत करता अपना अस्तित्व सुरक्षित रखे हुए है। यह सम्प्रदाय की शक्तिमत्ता ही कही जाएगी। हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि जयशंकर प्रसाद ने भारतीय संस्कृति के संदर्भ में सत्य ही कहा है कि 'ठहरा जिसमे जितना बल है।' साम्प्रदायिक मान्यतानुसार इस सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य भगवान श्रीराम है जिन्हें परमाचार्य कहा जाता हैं। लोक में प्रवर्त्तन करने का श्रेय स्वामीरामानंद (१२९९-१४१०) को दिया जाता है। वर्तमान आचार्य का महत्त्व परमाचार्य, मध्यमाचार्य के उपरांत ही प्रतिष्ठित होता है। फिर भी गत पचीस वर्षों से ज.गु.रा. श्रीरामनरेशाचार्य ने सम्प्रदाय के विस्तार में जिन शाश्वत प्रवृत्तियों को व्यवहारिक धरातल पर आचरित किया है वह सम्प्रदाय के साथ समाज के लिए भी शुभंकर है। प्रतिवर्ष चातुर्मास महोत्सव का आयोजन, स्वजन (भक्तजन), हरिजन और गिरिजन बस्तियों में संस्पर्श यात्राएँ, भण्डारा-सहभोज, प्रवचन और विविध क्षेत्रों के महानुभावों को सम्मानित करना, क्षेत्रीय देवों का पूजन, प्राचीन आश्रमों के जीर्णोद्धार, कुम्भ इत्यादि पर पूर्ण प्रतिष्ठा के साथ उपस्थिति, शास्त्र चर्चा, अद्यतन सामाजिक समस्याओं पर विद्वत् संगोष्ठियों के माध्यम से संवाद स्थापित करना उनके कार्य करने के विशिष्ट एवं विविध आयाम हैं।

वर्तमान आचार्य ने अपने परिश्रम, प्रबंध कौशल, औदार्य, समदृष्टि और समुल्लासपूर्ण स्वभाव एवं अनुभाव से बड़े से बड़ा कार्य सम्पन्न कर लिया

01.pmd 7 5/25/2015, 3:44 PM

है। चातुर्मास के अतिरिक्त अन्य दिनों में उनकी निरंतर रामभाव-प्रसार यात्राएँ होती रहती हैं। सांसारिक धन-वैभव नहीं पर आध्यात्मिक ऐश्वर्य इतना कि भौतिक संसाधन उनके चरण चुंबन करने लगते हैं। स्वामी जी प्रतिवर्ष एक विद्वान् को एक लाख रुपये का 'जगद्गगुरु रामानंदाचार्य पुरस्कार' प्रदान करते हैं। धार्मिक क्षेत्र में यह अपने ढंग का अद्वितीय पुरस्कार है। प्रतिवर्ष 'श्रीमठ संगीत समारोह' में पर्याप्त धन व्यय होता है। साहित्य प्रकाशन, आश्रमों में वटुकों के भोजन, वस्त्र, शिक्षा-शुल्क, गो-सेवा इत्यादि के माध्यम से सम्प्रदायाचार्य की समस्त प्रवृत्तियाँ सम्पन्न होती रहती हैं। पचीस वर्षीय सम्प्रदाय प्रमुख के रूप में उन्होंने चार श्रीराम शतमुखकोटि महायज्ञों का सम्पादन कर लिया है। उनकी प्रबल इच्छा है कि देश के चारों दिशाओं में चार भव्य श्रीराम मंदिरों का निर्माण हो। इस प्रकल्प का शुभारम्भ हरिद्वार में निर्माणाधीन 'अद्वितीय श्रीराम मंदिर' से हो चुका है। सभी प्रमुख तीर्थों में श्रीराम यज्ञ सम्पन्न करने की उनकी हार्दिक इच्छा है। इसके अन्तर्गत काशी, जबलपुर, चण्डीगढ़ व बक्सर में चार शतमुख कोटि श्रीराम यज्ञ सम्पन्न हो चुके हैं। उनके औदार्य एवं संकल्प शक्ति का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि रजतजयंती वर्ष २०१५ ई. में महाराजश्री ने अपने-अपने क्षेत्र के पाँच विशिष्ट विद्वानों को 'जगद्गुरुरामानंदाचार्य पुरस्कार' देने की घोषणा की है। यह अक्षर सेवी भी उस पंक्ति में सम्मिलित है।

पुस्तक में वर्तमान आचार्य के व्यक्तित्व के यही पक्ष मुख्यत: उभर सके हैं। माता-पिता का विवरण कुल-गोत्र, क्षेत्र, सहपाठी, गाँव-गिराव को पुस्तक में जान-बूझकर इसलिए छोड़ दिया गया है कि धर्माचार्य को पूर्वजीवन की सीमा में आबद्ध करना उचित नहीं। उसका कुल-भाई-बंधु, क्षेत्र, जवार, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा, स्वभाव-अनुभाव सब उसके भक्तों के व्यवहार और अनुगतों के आचार में समाहित हो जाता है।

ज.गु.रा. पदप्रतिष्ठा का रजत जयंती समारोह गत वर्ष श्रीरामानंदाचार्य जयंती से प्रारंभ हो वर्ष २०१५ के **रामानंदाचार्य जयंती** तक अनवरत संचलित होता रहा है। इसके अन्तर्गत, काशी, अयोध्या. जबलपुर, चण्डीगढ़, पटियाला, लुधियाना, मोहाली, कुरुक्षेत्र, सामाना, राजपुरा, इंदौर, भोपाल, होशंगाबाद जयपुर, सूरत, मुम्बई, अंकलेश्वर में विविध प्रकार के कार्यक्रम वर्ष पर्यन्त चलते रहे। इन नगरोपनगरों में प्रवचन, पूजन, पधरावणी, विद्वत्संगोष्ठी, दलित बस्तियों में कार्यक्रम तथा आदिवासी क्षेत्रों में विविध प्रकार के धार्मिक कृत्यों

01.pmd 8 5/25/2015, 3:44 PM

द्वारा वर्तमान आचार्य ने पूरे भारतीय समाज को जोड़ने का अद्‌भुत प्रयास किया है। श्रीरामनरेशाचार्य का मानना है कि लोक से जुड़कर ही परलोक को समझा जा सकता है। अत: समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचा धर्माचार्य ही ईश्वर की सच्ची अनुभूति कर सकता है। इन भावों के संकेत, पुस्तक में स्थान-स्थान पर दिखायी पड़ेगें।

धर्म, न्याय और सामाजिक सौहार्द के लिए वर्तमान आचार्य ने रामावत सम्प्रदाय के माध्यम से व्यक्ति एवं व्यक्ति समूहों को जोड़ने का भगीरथ प्रयास किया है। गत पचीस वर्षों से सामाजिक सौमनस्य का धार्मिक आसव पिलाकर उन्होंने न जाने कितने मनुष्यों में रामभाव का प्रसार किया है। इस दौरान वे राजनीतिक षड्यंत्र या उसके अवसरवादी स्वभाव एवं प्रभाव से प्रवंचित भी हुए हैं– पर भगवान् शिव की तरह विषपायी बन दूसरे का दुख ही हरते रहे और उस प्रवंचना से वेपरवाह हो निरंतर धर्म के पथ पर अडिग बने हुए हैं। 'रामालय ट्रस्ट' की स्थापना से कुछ लोग उन्हें कांग्रेस का समर्थक तो कुछ कांग्रेसी उन्हें अपनी पार्टी वाला धर्माचार्य समझने लगे थे। कतिपय लोग मन ही मन पूर्वजन्म का सम्बन्ध जोड़ते हुए उन्हें अपना ही मानने लगे। तीसरे प्रकार के लोगों का एक प्रभावशाली वर्ग उन्हें अयोध्या में श्रीराम मंदिर का विरोधी तक कहने लगा। पर ये तीनों प्रकार के चश्में लोगों को अंधा ही बनाते रहे। साधु-संतों का यह राजनीतिकरण या वर्गीकरण धर्म के लिए मंगलमय नहीं कहा जा सकता है। स्वामीरामनरेशाचार्य तो निरंतर 'रामावत सम्प्रदाय' में रामावत बनकर धर्म का शाश्वत कार्य निष्पादित कर रहे हैं। जो राम को अहर्निश भज रहा है, जिसका जीवन 'मति रामहि सों गति रामहिं सो' तक घनीभूत हो गया है वह राम, राममंदिर और रामसंस्कृति का विरोधी कैसे होगा? लोगों के चश्मे पर चढ़ी कुहेलिका को छँटने का उचित अवसर आ गया है। यह अहमन्यता को समाप्त करने का, सौहार्द को बढ़ाने का, ईर्ष्याद्वेष को मिटाने का और रामभक्ति के मूल आचार्यपीठ को अपनाने की स्वर्णिम बेला है। पुस्तक के बहाने इस संतचरित्र के माध्यम से, रामभक्तों का आवाहन है कि आएँ मिलजुलकर पुन: राम अर्थात भारतीय संस्कृति का पुनर्स्थापन करें।

समता भरी दृष्टि के विस्तारक, उदारतापूर्ण जीवन शैली के प्रयोगकर्त्ता, प्राचीनता और आधुनिकता के समन्वयक, युगानुरूप लौकिक मान्यताओं के आग्रही, सबको साथ लेकर चलने का सामर्थ्य, शास्त्र और लोक समन्वित

01.pmd 9 5/25/2015, 3:44 PM

अवधारणा के पोषक, परम्परा और वर्तमान के बीच सेतु की भूमिका का निर्वाह करने वाले वर्तमान आचार्य को 'अभिनव रामानंद' कहना अत्यंत सार्थक है। स्वामीरामानंद ने सबका रसग्रहण कर एक ऐसा आसव तैयार किया था जिसे रामभक्ति कहते हैं। उसी आसव का पान करने व कराने का वीणा उठाये वर्तमान आचार्य स्वामी रामानंद के अभिनव रूप हैं। इन्हीं विचारों को केन्द्रित कर पुस्तक की परिकल्पना हुई है।

पुस्तक में वर्णित वर्तमानाचार्य के बहाने यदि इन भावों का बोध अत्यल्प भी हो सका तो रजतजयंती समारोह की सार्थकता बढ़ेगी और मैं अपना श्रम सार्थक समझ सकूँगा।

पुस्तक की सम्पूर्णता में जिन विद्वानों ने अपने आलेखों से सहायता प्रदान की है मैं उनका आभारी हूँ। परब्रह्म श्रीराम और उनके प्रतिनिधि वर्तमान आचार्य उनके भवपंथ को सरल, निर्विघ्न और मंगलमय बनाएँ, यही कामना है। प्रूफ संशोधन में पुत्र अवनीकांत एवं पुत्री अवंतिका का सराहनीय सहयोग रहा है। उनका मार्ग भी इस संतचरित्र के माध्यम से मंगलमय होगा ऐसा विश्वास है। पुस्तक को सुन्दर साज-सज्जा देने तथा अल्प समय में छाप कर प्रस्तुत करने के लिए श्री राजकुमार जायसवाल डी.जी. प्रिंटर्स को विशेष धन्यवाद देना अपरिहार्य है। वह श्रीमठ से सम्बंधित कई पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन कर चुके हैं। रामदरबार में उनकी यह सेवा निरंतर बढ़े– यही कामना है। सम्पादक तो निमित्त मात्र बनने में ही आह्लादित है। यह आह्लाद निरंतर बढ़ता रहे यही अभिलाषा है।

षष्टिपूर्ति, वसंत पंचमी
ज.गु.रा. श्रीरामनरेशाचार्यजी
२४/१/१५

उदय प्रताप सिंह
वाराणसी

01.pmd 10 5/25/2015, 3:44 PM

श्री श्री जगद्गुरु शङ्कराचार्य महासंस्थानम्,
दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठम्, शृङ्गेरी
Shri Shri Jagadguru Shankaracharya Mahasamstanam
Dakshinamnaya Sri Sharada Peetham, Sringeri-577 139

Ref : S-18/3704 Camp Sringeri Date : 16.08.2014

शुभकामना सन्देश

यह जानकर दक्षिणाम्नाय शृंगेरी शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य अनन्तश्री विभूषित श्रीश्रीभारतीतीर्थ स्वामी महाराजजी बहुत प्रसन्न हुए हैं कि काशी के श्रीरामानन्द पीठाधीश्वर स्वामी रामनरेशाचार्यजी के षष्टिपूर्ति और उनके रामानन्द पीठाधिपत्य के पच्चीस वर्ष पूर्ति के उपलक्ष्य में ''अभिनवरामानन्द श्रीरामनरेशाचार्य'' ग्रन्थ का प्रकाशन होने जा रहा है। श्रीस्वामीजी श्रीमहाराजजी से बीस साल पहले दिल्ली और काशी में भेंट किये थे। उनके सौजन्य और सरल स्वभाव से महाराजजी बहुत प्रसन्न हुए।

इस शुभ अवसर पर महाराजजी आशीर्वाद देते हैं कि श्रीस्वामीजी दीर्घायु होकर रामानन्द पीठ को सुशोभित करते हुये शिष्यजनों को मार्गदर्शन करते हुये पीठकी कीर्ति को और भी बढ़ावें और यह पुस्तक अच्छी तरह प्रकाशित होकर भक्तजनों को उपादेय होवे।

इति
टि. दक्षिणामूर्ति

01.pmd 11 5/25/2015, 3:44 PM

पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरी-७५२००१, ओड़िशा, दूरभाषफैक्स-०६७५२-२३१०९४
निज सचिव-स्वामीश्रीनिर्विकल्पानन्दसरस्वती,
मो. ९४३७०३१७१६, ९४३७००४७९५
Tele-Fax 06752-231094, Ph.-231716, Mobile No. 9437031716; 9437004795
e-mail contact@govardhanpeeth org. website-ww.govardhanpeeth.org

Letter No. 991/GM/14 Dtd. 17.08.14

सन्देश

श्रीहरिः

।।श्रीगणेशाय नमः।।

जन-गण-मन-अधिनायक श्रद्धेय श्रीरामानन्द-रामनरेशाचार्य-महाभाग मेधावी मनीषी हैं। इनका जीवनचरित मनोहर है। इनके अतीत तथा अनागत जीवनचरित के अवगाहन से द्रुतविलम्बित आह्लाद सुनिश्चित है। माना कि आत्मा की सच्चिदानन्दरूपताकी दृष्टि से आत्मायें और देहों की पाञ्चभौतिकता की दृष्टि से देहों में साम्य है; तथापि शास्त्रसम्मत भेद को स्वीकार किये बिना प्रकृतिप्रदत्त सर्व भेदों का सुमङ्गल उपयोग तथा निर्भेद आत्मस्थिति सर्वथा असम्भव है।

सनातन धर्म में फलचौर्य नहीं है। अतः अपने-अपने अधिकार की सीमायें स्वधर्मपालन के द्वारा सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वर की समर्चा सर्वहितप्रदा है।

निश्चलानन्दसरस्वती
श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरी पीठ
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, २०७१
१७.८.२०१४

बालयोगी उमेशनाथ महाराज
राजकीय अतिथि मध्य प्रदेश शासन
संस्थापाक : श्री क्षेत्र वाल्मीकि धाम, क्षिप्रातट, उज्जैन (म.प्र.)
दूरभाष : 094250-91108,
(0734) 2700274, 2701008

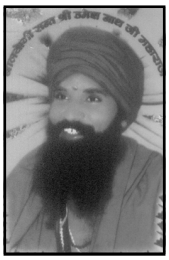

शुभकामना सन्देश

आत्मीय आनन्द का विषय है कि अनन्तश्री विभूषित जगदगुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्यजी के जीवन दर्शन, भक्ति, साधना और लोक मंगलपरक कृत्यों को केन्द्र में रखते हुए ***अभिनव रामानंद : स्वामी रामनरेशाचार्य*** *ग्रन्थ प्रकाशित होने जा रहा है।*

भारतवर्ष की पवित्र भूमि पर समय-समय पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, महर्षि वाल्मीकि, गुरु गोरक्षनाथ जैसे दिव्यात्माओं का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने दीपक की भाँति जलकर समाज को सत्यज्ञान का प्रकाश दिया। इसी कड़ी में रामावतार स्वामी रामानंदजी ने आज से ७१५ वर्ष पूर्व ***रामभक्ति*** *की अलख जगाई थी। वह शास्त्र एवं लोकमत को* ***समान*** *महत्व प्रदान करने वाले* ***प्रथम आचार्य*** *थे। संस्कृत के साथ हिन्दी, ब्राह्मण के साथ दलित, नर के साथ नारी के प्रति समानता का व्यवहार उनके क्रान्तिकारी कदम थे। भक्ति को सर्वसुलभ बनाते हुए उन्होंने सामाजिक न्याय, एकता, अखण्डता, समानता एवं* ***समरसता*** *का संदेश दिया।*

उसी परम्परा का निर्वहन जगतगुरु रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी कर रहे हैं। ***रामानंदाचार्य पद पर वर्तमान***

01.pmd 13 5/25/2015, 3:44 PM

में वह सकमात्र आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आपके उदार

जीवनदर्शन में स्वामी रामानंद की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। आपके व्यक्तित्व में वह ओज व तेज है जो सम्पूर्ण विश्व के दुःख व क्लेश को हरने में समर्थ है। आप सतत 'परहित निरत' बने रहते हैं। दिव्य आभायुक्त प्रफुल्लित चेहरे की मन्द मुस्कान के साथ वाणी की मधुर मिठास ऐसी कि एक बार आपसे जो मिले, वह आपका ही होकर रह जाय है।

बहुमुखी प्रतिभा, शांति, नम्रस्वभाव के धनी होने के साथ ही स्वामीजी बढ़ते जातिवाद, ऊँचनीच का भेदभाव, पाखण्ड, अंधविश्वास, चारित्रिक पतन, अज्ञान आदि को इस धरा से मिटाकर मनुष्य में देवत्व व धरती पर स्वर्ग का अवतरण करने में निरन्तर लगे हुए हैं।

जैसे जल बहता-बहता निर्मल तो होता ही है साथ ही वह दूसरों को उज्ज्वल, पवित्र एवं शीतल बना देता हैं। वैसे ही कार्य जगतगुरु स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी अपने चरित्र के प्रभाव से कर देते हैं। यह उनके जीवन का ६०वाँ बसन्त एवं रामानंदाचार्य पद प्रतिष्ठित होने का २५वां वर्ष है। इतनी लम्बी साधना के उपरांत वसुधा स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है। रजत जयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर प्रकाशित ग्रंथ

''अभिनव रामानंद : श्रीरामनरेशाचार्य'' के लिए मन से, वचन से, कर्म से हार्दिक मंगलमय शुभ कामनाएँ।

यह ग्रन्थ निश्चित ही अध्यात्म जगत एवं मानव समाज में धर्म, संस्कृति, संस्कार को इतना कुछ देगा कि भावी पीढ़ी का भाग्योदय होगा एवं आगामी पीढ़ियाँ आपकी ऋणी रहेगीं।

मंगलाकांक्षी

बालयोगी उमेशनाथ

01.pmd 14 5/25/2015, 3:44 PM

महन्त रघुबीरदास

भगवन्नारायण ठाकुर द्वारा,
दरबार श्रीपिंडोरी धाम,
गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५३१

शुभकामना सन्देश

परम पूज्य जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य पद प्रतिष्ठित स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के चरणों में सादर दंडवत प्रणाम करते हुए प्रभु के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि महाराजश्री का आशीर्वाद सदैव श्रीसम्प्रदाय पर बना रहे। जान कर प्रसन्नता हुई कि जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि महाराज श्री के पदप्रतिष्ठित होने का यह रजत जयंती वर्ष है। इस अवसर पर ''अभिनव रामानंद : स्वामी रामनरेशाचार्य'' ग्रंथ का प्रकाशन भी हो रहा है। इससे भक्तों को तथा वैष्णव समाज को महाराज जी के जीवन दर्शन से प्रेरणा एवं लाभ प्राप्त होगा। हमारी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

आपका सेवक
महन्त रघुबीरदास

01.pmd 15 5/25/2015, 3:44 PM

।। ॐ श्री रामदेवाय नमः ।। ।। ॐ श्री सैनाय नमः ।।

सैनाचार्य आश्रम

अखिल भारतीय सैन भक्तिपीठ

जोधपुर (राजस्थान)

(भारतीय पंजीयन अधिनियम 1956 के अधीन पंजीकृत संख्या 229/95)

पीठाधीश्वर : सैनाचार्य स्वामी श्री श्री 1008 अचलानन्दगिरीजी महाराज

मंगलकामना संदेश

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि मानवता के मसीहा तथा रामभक्तिके अनुपम एवं देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में मानव-मन को आलोकित करने वाले रामावतार जतगद्गुरु रामानंदजी की भास्वर परंपरा के वर्तमान आचार्य जगद्गुरु रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज के सफलतम जीवन के ६० वर्ष पूर्ण होने एवं रामानंदाचार्य पद पर प्रतिष्ठापन के पच्चीस वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में संपूर्ण वैष्णव समाज की ओर से आचार्यश्री के जीवन, तप एवं साधना केंद्रित ग्रंथ ***अभिनव रामानंद : स्वामी रामनरेशाचार्य*** *का प्रकाशन किया जा रहा है। यह सर्वग्राह्य सत्य है कि साहित्य समाज के लिए निर्मल दर्पण के सदृश अपने स्वरूप को पहचानने में मददगार होता है। अज्ञान तिमिर की घनघोर डरावनी वेला में साहित्य रूपी ज्ञानज्योति अपनी प्रबल उपस्थिति से संपूर्ण वातावरण को आलोकित करती है। ऐसे में यदि वह साहित्य प्रेरणास्पद व्यक्तित्व के धनी, समाज सुधार के उत्कट अभिलाषी, देवभाषा संस्कृत एवं संस्कृति के प्रबल पहरेदार संत आचार्यश्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज जैसे प्रेरणापुंज के जीवन, दर्शन एवं वैचारिक मंथन पर आधारित हो तो सोने में सुगंध का संयोग बनता है।*

01.pmd 16 5/25/2015, 3:44 PM

जगद्गुरु रामानंदाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज का जीवन अपने आपमें न केवल सांसारिक मानव समाज के लिए वरन साधु-संतों के लिए भी अत्यन्त प्रेरणास्पद है। आपकी सादगी, सच्चाई, निष्ठा वैचारिक पवित्रता, ईश्वर में अगाध आस्था तथा मानवजीवन के परम लक्ष्य की ओर अनन्य उन्मुखता इत्यादि अनेकानेक विशिष्टताएँ हम सबको अपने मूल मार्ग से भटकने से रोकेंगी तथा सन्मार्ग की ओर अग्रसर करेंगी। अभिनंदनग्रंथ के प्रकाशन से संबंधित इस पावन कार्य के लिए मेरी कोटि-कोटि मंगल कामनाएँ। अपने हृदय की अतल गहराइयों से इस अभिनंदनग्रंथ की पूर्णता एवं परम श्रद्धेय गुरुवर आचार्य श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज के चरणों में शत्-शत् वंदन संप्रेषित करता हूँ।

परिवर्तन प्रकृति का सहज एवं शाश्वत नियम है। इसको दृष्टिगोचर रखते हुए वर्तमान परिवेश के लिए प्रासंगिक अचार-विचार एवं व्यवहार का लोकहितकारी ज्ञान करवाने की दिशा में ***अभिनव रामानंद*** *का संप्रत्यय अतीव उपादेय साबित होगा, ऐसा मेरा मानना है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह अभिनंदन ग्रंथ बिखरते मानवीय मूल्यों के रक्षण, संस्कृति के संरक्षण एवं मानव-मानव में समता एवं सौहार्द का भाव भरने की दिशा में अनुकरणीय कदम सिद्ध होगा। अनन्त मंगल कामनाओं के साथ–*

चरण चञ्चरीक
सेनाचार्य अचलानंद

01.pmd 17 5/25/2015, 3:44 PM

डॉ. महेश चंद्र शर्मा, पूर्व सांसद
सदस्य, राष्ट्रीय कार्यकारिणी
प्रभारी, दीनदयाल समग्र

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

दिनांक : १८ दिसम्बर, २०१४

जगद्गुरु स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज भक्ति परम्परा के अद्भुत रामानंदाचार्य हैं। वह न केवल सम्प्रदाय के सार्थक अधिष्ठाता हैं, भारत की आध्यात्मिक परम्परा के ध्वजवाहक आचार्य तथा साधु संस्था के स्वयंकेतु हैं। रामानंद केवल सम्प्रदाय ही नहीं एक स्वभाव भी है, जो सर्वसमावेशी होता है, अछूत-छूत एवं राग-द्वेष से विरत होता है, स्वामी रामनरेशाचार्य के सान्निध्य में इस स्वभाव को सहज ही अनुभव किया जा सकता है। जाति-पाँति पूछे नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि को होई', इस उक्ति को जो अपने जीवन में धारण किये हुये है, ऐसे स्वामी रामनरेशाचार्य के श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम।

शास्त्रों के ज्ञाता तो शास्त्री होते हैं, आचरण से ही व्यक्ति आचार्य बनता है, स्वामी रामनरेशाचार्य वस्तुत: आचार्य हैं। विद्या व्यक्ति को विनयी बनाती है, इसका साक्षात्कार हम स्वामीजी के सान्निध्य से कर सकते हैं। विद्वता जिनकी विनोद क्षमता को आहत नहीं करती, जो सदैव अपने ईर्द-गिर्द संस्कारक्षम लेकिन सहज वातावरण को बुन लेते हैं। बिना भय एवं संकोच के कोई भी व्यक्ति इनसे संवाद कर सकता है। मताग्रहों से दूर एक समन्वय दृष्टि के प्रतिनिधि हैं स्वामी रामनरेशाचार्य।

मुझे जो सहज स्नेह एवं आदर स्वामीजी ने दिया है, वह अप्रतिम है। उनके सान्निध्य की ललक सदैव बनी रहती है। रामानंदाचार्य पद प्रतिष्ठित होने के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशन की योजना निश्चय ही अभिनंदनीय है। हार्दिक मंगलकामनाएँ। संग्रहणीय सामग्री के इस ग्रंथ की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभम्!

स्नेहाकांक्षी

(महेश चन्द्र शर्मा)

11, अशोक रोड, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : 23005700 फैक्स : 23005787

11, Ashok Road, New Delhi-110001. Phone : 23005700 Fax : 23005787

01.pmd 18 5/25/2015, 3:44 PM

साधू ऐसा चाहिये...

उदय प्रताप सिंह

दिसम्बर १९९४ में कृष्णभक्ति साहित्य पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन वृन्दावन में किया गया था। संगोष्ठी को सम्बोधित करने हेतु प्रो. भगवतीप्रसाद सिंह वृन्दावन जाने की तैयारी में व्यस्त थे। मैं अचानक उनके आवास (गोरखपुर) पर पहुँचा। कुशलक्षेम के उपरान्त वह स्वभावत: 'भगत-भगति भगवंत' की चर्चा करने लगे। उनके सम्पर्क में इस प्रकार की साहित्यिक चर्चाएँ सहजत: चलती रहती थीं। चलते-चलते उन्होंने कहा कि ''२० जनवरी (१९९५) को काशी आना। वहाँ तुम्हें एक तेजस्वी संत और युवा वैरागी साधु का दर्शन होगा''। मैं मन ही मन गुरुदेव की आज्ञा स्वीकार कर भुड़कुड़ा (गाजीपुर) वापस आ गया। यद्यपि प्रो. सिंह का परिवेश सामंती था पर विचार और रहन-सहन के स्तर पर वह किसी भी संत से कमतर नहीं थे। उनकी दिनचर्या संत चरित्र के गायन से शुरू होकर भक्ति साहित्य के गहन अध्ययन तक समाप्त होती थी। विरुद्धों का यह सामंजस्य उन्हें एक दिलचस्प व्यक्तित्व प्रदान करता था। २० जनवरी काशी पहुँचने की मैं आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा था कि अचानक समाचार मिला ''प्रो. सिंह नहीं रहे।'' मैं उस समय वृन्दावन और गोरखपुर से बहुत दूर भोपाल के एक साहित्यिक आयोजन में सहभागिता करने गया था। यह दुखद समाचार सुनते ही मैं हतप्रभ रह गया। उनकी मृत्यु के शोक में काशी जाने और युवा साधु से मिलने की तिथि ही भूल गया; पर कहा जाता है कि जाने वाले के अंतिम शब्द आत्मीय जनों के लिए 'धरोहर' बन जाते हैं। दुख की मनस्थिति में वे शब्द रह-रहकर टीस तो देते ही हैं, निर्दिष्ट मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं।

ब्रह्म की तरह शब्द भी सनातन होते हैं। लिखने पर साकार और सुनने पर निराकार बन अन्तरतम में व्याप्त हो जाते हैं। प्रो. सिंह ने जिस साधु के दर्शन करने की आस जगायी थी, उसकी एक अनगढ़, अपूर्ण व अपूर्व छवि का निर्माण मेरे मानस में हो चुका था। एक वर्ष पश्चात् अकस्मात् गुरुदेव के शब्द कानों में पुन: गूँजने लगे– ''तुम उस वीतरागी साधु से मिले या नहीं।'' इससे प्रेरित हो मैं

डॉ. उदय प्रताप सिंह, एसो. प्रो. हिन्दी पी.जी.कालेज, भुड़कुड़ा, गाजीपुर (उ.प्र.)

01.pmd 19 5/25/2015, 3:44 PM

दूसरे ही दिन 'श्रीमठ' पहुँच गया। पंचगंगा और बनारस की रहस्यमय गलियों से अपरिचित होता हुआ भी श्रीमठ पहुँचना मेरे लिए सर्वथा नवीन अनुभव था। पर इस बार उस संत का दर्शन नहीं हो सका। एक माह बाद दूसरी बार 'श्रीमठ' गया पर इस बार भी न वह साधु मिले और न जानकारी प्रदान करने वाला कोई व्यक्ति ही। मैं निराश और एक सीमा तक खिन्न हुआ पर करता ही क्या? सोचा यदि तीसरी बार उस साधु का दर्शन नहीं हो सका तो 'श्रीमठ' कभी नहीं जाऊँगा। बार-बार यही सोचता था कि गुरुदेव ने अंतस में ऐसी आग जला दी है जो बुझती ही नहीं। अत: खीझभरी मानसिकता से तीसरी बार 'श्रीमठ' पहुँचा। सीढ़ियों पर चढ़ते ही मेरे लिए एक चमत्कार जैसा घटित हो गया। जिस पंचगंगा की सीढ़ियों पर कभी कबीर को रामानंद मिले थे उसी पर मुझे 'मेरे रामानंद' मिल गये। लम्बी छरहरी काया, कौशेय वस्त्र और तेजस्विता की प्रतिमूर्ति सरीखे दिखने वाले साधु का चेहरा रामभक्ति की आभा से दमक रहा था। मन निर्भ्रान्त और चित्त शान्त-शान्त सा लग रहा था। बिना किसी परिचय के मैंने कहा कि ''मैं प्रो. भगवतीप्रसाद सिंह का शिष्य हूँ। आपके दर्शन के लिए आया हूँ।'' उन्होंने अत्यन्त आत्मीयता से कहा कि ''आइये न बैठिये, आप तो डॉ. साहब के प्रतिनिधि ही हैं।'' मेरे लिए अद्भुत अपूर्व था वह सम्बोधन और वह क्षण। मैं आत्मविभोर हो उठा। कृतकृत्य और भाव विह्वल हो उठा। ऐसी आत्मीयता ऐसे कदवाले व्यक्ति की जीवन में पहली बार मिली थी। मैं तय नहीं कर पा रहा था कि मेरे गुरुदेव बड़े हैं या यह 'जगद्गुरु' जिसका अभी-अभी दर्शन हुआ है। उस समय गुरु के प्रति गहन आस्था रखने वाली कबीरदास की साखी स्मरण हो उठी–

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काकै लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपणो गोविंद दियो बताय।।

वर्षों बाद समझ सका कि गुरु अंतिम समय तक शिष्य की चिंता करना नहीं भूलता।

इस आत्मीयता के बाद मेरा 'श्रीमठ' जाना लगातार होता रहा। वे अपरिचित व अनजान गलियाँ अब सरल, सहज मार्ग बन चुकी थीं। महाराजश्री का 'दरसन-परसन' करते दो दशक कब बीत गए पता ही नहीं चला। इधर वर्षों से उनके चरणों में बैठकर कई प्रकार की महत्त्वपूर्ण चर्चाएँ होती रही हैं। कभी व्यक्ति, कभी साधु, कभी संस्कृति, कभी समाज तो कभी धर्म के वास्तविक स्वरूप पर। कहना न होगा कि उनकी सन्निधि और संस्पर्श से मनुष्यता का अंकुरण मेरे हृदय में होने लगा है। साधु का यही आचारगत प्रभाव समाज में

01.pmd 20 5/25/2015, 3:44 PM

संस्कार उत्पन्न करता है। संस्कारवान नागरिक धर्म के सच्चे वाहक बनते हैं। वर्तमान आचार्य के सत्संग में धर्म-अधर्म का अंतर तो समझ में आता ही है, संत, साधु, वैरागी, और गुरु के वास्तविक अर्थ क्या हैं उनका बोध भी होता रहता है। संत के साथ रहने पर ही लिखित ज्ञान का प्रत्यक्षीकरण होता है। प्रेम, सद्भाव, उदारता, परदुख से द्रवित होना, परोपकार, स्वाभिमान, सत्य के लिए संघर्ष और मानवता के लिए सर्वस्व त्यागने वाले संत ही समाज की रीढ़ होते हैं। ये गुण ज.गु.रा. श्रीरामनरेशाचार्य के आचरण में प्रत्यक्ष देखे जा सकते हैं। उनकी निकटता में एक विशिष्ट प्रकार की शीतलता का आभास होता है और वाणी में माधुर्य का आसव घुला मिलता है। उनके साहचर्य में दिव्यानुभूति होती है। कबीर को संतों का यह साहचर्य इतना भा गया था कि वह बैकुंठ त्यागने को तैयार थे–

राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधू संग में, सो बैकुंठ न होय।।

सकारात्मक जीवनदृष्टि मनुष्य के सुखमय होने का प्रमुख आधार है। शक्ति, प्रतिभा, गुण और कुशलता के बावजूद प्राय: लोग नकारात्मकता और निषेधात्मकता के द्वंद्व में जीवन के मधुमय क्षणों से वंचित रह जाते हैं। छिद्रान्वेषण, ईर्ष्या, दूसरों को नहीं के बराबर मानने का दंभ, स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानने की अहमन्यता से मनुष्य परेशान है। ऐसे में संतों की कृपा ही मन की मलिनता का प्रक्षालन कर सकती है। ऐसे अनेक लोग हैं जो वर्तमान आचार्य के निकट बैठकर रामभाव से परिपूर्ण अनेक संकीर्णताओं को तिलांजलि दे पूर्ण मनुष्य बन चुके हैं। आज का संसार भौतिकता की भीषण आग में झुलसता जा रहा है। मनुष्य द्वारा निर्मित ठौर-ठिकाने नष्ट हो रहे हैं। सुरक्षा के लिए एकत्रित धन-दौलत मनुष्य को अधिक बेचैन बना रहे हैं। भौतिक प्रगति के जंजाल में फँसा मनुष्य तड़प रहा है। बचने का का कोई उपाय ही शेष नहीं। बिहारी ने इस सांसारिक मन को सही समझा था–

को छूट्यो इहि जाल परि कत कुरंग अकुलात।
ज्यौं-ज्यौं सुरझि भज्यौं चहत, त्यौं-त्यौं उरझत जात।।

इन भौतिक संतापों की आँच में झुलसने से बचाने की औषधि श्रीरामनरेशाचार्य सरीखे संतों के पास है। साधु-संतों के आचार-विचार में निहित है। इसीलिए तत्वान्वेषी संतों ने वर्तमान संत को ही सतगुरु (ब्रह्म) कहा है। आकाश (संसार) तो जल रहा है। मनुष्य के हृदय में न्यूनताओं का अम्बार लगा हुआ है। रागद्वेष का पारावार फैला हुआ है। ऊँच-नीच की खाई गहरी होती जा रही है। पढ़े-लिखे स्वयं को विचारक कहने वाले जातीय संगठनों के सूत्रधार बन

01.pmd 21 5/25/2015, 3:44 PM

रहे हैं। जाति-पाति का कीचड़ विकराल होता जा रहा है। बाहुबली बनकर दूसरे को मटियामेट करने की कुटिल चालें निरंतर चली जा रही हैं। ऐसे संताप से संसार को बचाने का नुस्खा मात्र संत के पास है। यदि संत न होगा तो संसार ही स्वाहा हो जाएगा। पुन: स्वामी रामानंद के शिष्य कबीर याद आते हैं और उसी परम्परा में वर्तमान आचार्य अधिक प्रासंगिक दिखने लगते हैं–

आग लगी आकास में, झर-झर पड़े अंगार।
जो संत न होते जगत में, जल जाता संसार।।

स्वामी रामनरेशाचार्य की विद्या की दुनिया बहुत बड़ी है। उनके तर्क की शक्ति प्रभावकारी है। उनके प्रबंधन का कौशल बेनजीर है। सामान्य से विशिष्ट जन तक को देखने की उनकी अंतर्भेदी दृष्टि अचूक है। चाहे गृहस्थ धर्म से विचलित होता कोई सामान्य मनुष्य हो या साधु कर्म से वंचित कोई साधु हो, अथवा ब्रह्मचर्याश्रम से भटका कोई वटुक हो, उसे शनै:-शनै: मूलमार्ग पर लाने का जो कौशल स्वामी रामनरेशाचार्य में दिखता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। अन्य कई सम्प्रदायाचार्यों की तरह स्वामीजी अपनी साधुता किंवा आचार्यत्व में आत्ममुग्धता से बचते हैं। समाज को पटरी पर लाने की पूरी कोशिश करते हैं, साधु को अहंकार और भौतिक चाकचिक्य से अलग करते हैं, राजनयिक को नैतिक बनाने की चेष्टा करते हैं। विद्यानुरागी को अध्ययनशील बनाने का सौविध्य प्रदान करते हैं। विद्वान् की विद्वता बढ़े इसलिए उसे पूरा अवसर देते हैं। वर्तमान आचार्य का वैदुष्य से भरा व्यक्तित्व अकादमिक कार्य करने की प्रेरणा देता है। वर्ष में तीन-चार राष्ट्रीय संगोष्ठियों के माध्यम से विद्वानों के बीच रहना उन्हें बहुत प्रिय लगता है। विमर्श, तत्व चिंतन, विश्लेषण, शास्त्रचर्या, वाद-विवाद-संवाद उनके मन के विषय हैं। यात्राएँ करना, छोटे से छोटे सांस्कृतिक धार्मिक केन्द्रों पर जाना, उनके पुनरुद्धार का क्रियान्वयन उनकी साधुता के ही मापदण्ड हैं। औदार्य इतना कि 'जिसको न दे मौला उसको दे शुजाउद्दौला' जैसी कहावत चरितार्थ करते हैं।

स्वामी रामनरेशाचार्य में सत्य कहने का अद्भुत साहस है। शरण में आए हुए को अभयदान देने का दुस्साहस भी बेमिसाल है। धर्म, समाज, सम्प्रदाय, शास्त्र, साधु-जीवन और सनातन संस्कृति के प्रति उनकी आत्यंतिक निष्ठा है। जीवन में वह कभी संक्षिप्त मार्ग का अनुसरण नहीं करते हैं। विधिवत् कर्म सम्पादन उनकी जीवन शैली है। अपनी बेबाक सम्मति के लिए वे प्रसिद्ध हैं। कन्या भ्रूण हत्या और छुआछूत की समस्या पर उनके कई साक्षात्कार देश के प्रमुख अखबारों एवं पत्रिकाओं की सुर्खियाँ बन विचारों को आंदोलित कर चुके

01.pmd 22 5/25/2015, 3:44 PM

हैं। समसामयिक प्रश्नों और समस्याओं पर उनकी शास्त्र सम्मत दृष्टि अन्यों से सर्वथा भिन्न और कालसापेक्ष्य होती है। कालवाह्य शास्त्रीय विधानों का परिष्कार वे उसी प्रकार सरलता से कर देते हैं जैसे स्वामी रामानंद पारम्परिक आचार्य होते हुए भी लोक को महत्व देते किया करते थे। रामानन्दाचार्य के बारह प्रमुख शिष्यों में अधिसंख्य निचले वर्ग से आते थे। सभी शिष्यों पर स्वामी रामानंद की समान कृपाभरी दृष्टि हुआ करती थी। उसी मार्ग का अनुसरण वर्तमान आचार्य भी करते हैं। बारह प्रमुख गद्दियों के वर्तमान श्रीमहंत आज परम्परानुमोदित स्वरूप में विद्यमान हैं। उनका मस्तकाभिषेक वर्तमान मूल आचार्य ही करते हैं। ''जाति न पूछो साधु की खासानुरी पठान। जात-पात पूछे ना कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।। सर्वे प्रपत्ते रधिकारिणोमता:'' जैसे सर्वस्पर्शी वाक्यों को वर्तमान आचार्य चरितार्थ करने की अद्भुत कला जानते हैं। रामानंदकृत वैष्णवमताब्जभास्कर में वर्णित साधु के लक्षणों का परिपालन स्वामी रामनरेशाचार्य यथावत् करते हैं।

स्वामीश्रीरामनरेशाचार्य की मान्यता है कि धार्मिक लोगों का पतन अन्यों की अपेक्षा अधिक हुआ है। नकली धर्माचार्यों और मनगढ़न्त सम्प्रदायों ने शाश्वत सांस्कृतिक मनीषा को कलंकित किया है। योग के नाम पर भोग, आचार के नाम पर अनाचार, स्वसम्वेद्य ज्ञान के नाम पर मनोनुकूल धर्म की व्याख्या, त्याग के नाम पर सम्पत्ति का एकत्रीकरण, पहचान के नाम पर प्रदर्शनप्रियता, सामान्य वेशभूषा के नाम पर चमत्कृत करने वाले परिधान, तरह-तरह के अलंकरण, साधु-संगठन के नाम पर बाहुबलियों की जमात उन्हें धर्म के स्याह पक्ष लगते हैं। अत: वे कुम्भ या अन्य विशेष अवसरों पर निकलने वाले शाही जुलूसों को प्रदर्शन मानते हैं। अहमन्यता का धार्मिक लबादा बताते हैं। सामंती प्रवृत्तियों का द्योतक कहते हैं। यही कारण है कि वह ऐसे संगठनों और धर्माचार्यों को समय-समय पर ललकारते हैं और निर्भय होकर धर्म के सत्यपक्ष का स्थापन करते हैं। उनका धर्मवेष्टित स्वाभिमान सत्य पर चलने की प्रेरणा देता है। साधु संत के ये क्रियाकलाप और आचार-विचार समाज के लिए प्रेरक बनते हैं।

बहुत निकट से देखने पर वर्तमान आचार्य में स्वामी रामानंद की झलक दिखती है। स्वामी रामानंद को मानवीय गुणों और दैवी चेतना के कारण श्रीराम का अवतार कहा जाता है। उदारता, त्यागवृत्ति, कृपालुता, सहृदयता, मनस्विता, अभेद दृष्टि और मनुष्यता की पराकाष्ठा पर पहुँचा व्यक्ति ही देवत्व की ओर प्रस्थान करता है। त्रेता युग में श्रीराम के ये गुण उन्हें ईश्वरत्व तक ले जाने में समर्थ हुए थे। मध्यकाल में वही स्थिति स्वामी रामानंद की थी। नाभादास ने उन्हें

01.pmd 23 5/25/2015, 3:44 PM

अनायास ही नहीं भगवान राम की तरह संसार के उद्धार का 'द्वितीय सेतु' कहा था। कहना है कि वर्तमान आचार्य में भी उन गुणों का अवतरण भरपूर मात्रा में दिखता है। रामानन्द सम्प्रदाय का विस्तार, उसकी लोकप्रियता, दिनानुदिन बढ़ती सर्वग्राह्यता इसके प्रमाण हैं। वर्तमान आचार्य ने श्रीमठ में स्वामी रामानंद की मात्र चरण पादुका से हरिद्वार में निर्माणाधीन अद्वितीय श्रीराममंदिर तक सम्प्रदाय विस्तार का सुदीर्घपथ प्रशस्त किया है। लाखों भक्तों में रामभाव का प्रसार, कई प्राचीन मंदिरों का कायाकल्प, नये आश्रमों का निर्माण, दशाधिक रामभाव प्रसार यात्राओं का सम्पादन, आचार्यत्व के पचीस वर्ष में पचीस दिव्य चातुर्मास महोत्सवों का संयोजन, अनेक राष्ट्रीय विमर्शों का प्रवर्त्तन, संस्कृति-संस्कृत और आधुनिक आर्य भाषाओं का सम्पोषण आपके अवतारी एवं लोकसंग्रही व्यक्तित्व के परिचायक हैं। बहुत मंथन करने पर ज्ञात होता है कि रामानंद सम्प्रदाय में कुछ ही व्यक्तित्व लोक प्रसिद्धि को प्राप्त कर सके हैं। वे ही प्रेरणा के पुंज भी हैं। स्वामीरामानंद, स्वामीभगवदाचार्य और स्वामीरामनरेशाचार्य उसमें अग्रगण्य हैं।

वर्तमान आचार्य के रामदरबार में भी भाँति-भाँति के पार्षद हैं। कोई रागदरबारी है तो कोई रामदरबारी और कोई दोनों का समन्वित रूप साहित्यानुरागी है। कोई तीनों से न्यारा अपनी न्यूनताओं में ही परेशान है। जिसकी जैसी मति वैसी उसकी गति। पर वर्तमान आचार्य की गुण ग्राहकता अद्वितीय व विलक्षण दिखायी पड़ती है। चाहे कोई कुटिल-कुचाली हो, चाहे स्वार्थ में आकण्ठ डूबा हो अथवा संकीर्णता का शिखर स्पर्श करता हो, सबको काटते, छाँटते गुणवान को आप अपना बना ही लेते हैं। व्यक्ति की यह अचूक पहचान वर्तमान आचार्य की विलक्षण प्रतिभा है। यह कोई लिखी-पढ़ी बात नहीं, देखा-सुना तथ्य है। कबीर के शब्दों में–

लिखा पढ़ी की है नहीं देखादेखी बात।
दूल्हा दुलहिन मिल गये फीकी पड़ी बरात।।

साधु-संत के ये गुण मन की मैल को धुल व्यक्ति को निर्मल बना देते हैं, तत्त्व को ग्रहण कर नि:तत्त्व को सूपवत फटक दूर कर देते हैं। वैरागी साधु का यह स्वभाव समाज के लिए शुभंकर और गुणवान के लिए प्रेरणास्पद होता है। कबीर की साखी पुन: कौंधने लगती है–

साधू ऐसा चाहिये जैसे सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहे थोथा देय उड़ाय।।

●

01.pmd 24 5/25/2015, 3:44 PM

गुणग्राहक : स्वामीरामनरेशाचार्यजी

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

सत्य और पाखंड, कथनी और करनी, लोभ और त्याग की अपार भूलभुलैया से सने हुए आज के युग में यदि किसी ऐसे धर्माचार्य को, ऐसे पीठाधीश को देखना हो जिसके हृदय में धर्म, समाज और देश तीनों के प्रति निष्ठा की त्रिवेणी बहती दिखती हो, जिसकी वाणी में संस्कृत, हिन्दी जैसी देश भाषाएँ और आधुनिक जगत् की नवीनतम जानकारी की प्रतीक अंग्रेजी– इन तीनों की त्रिवेणी बहती सुनाई देती हो तो उत्तर भारत की सन्त परम्परा के शिखर प्रवर्तक स्वामी रामानन्द के काशी स्थित प्रधान पीठ श्रीमठ के अधिपति स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी के दर्शन कर लीजिए। रामानन्द संप्रदाय समूचे देश में फैला है, रामभक्ति की सरिता समूचे देश में बह रही है, भगवाधारी साधु भक्ति की धारा बहाते घूम रहे हैं किन्तु इन सारे प्रयासों के बीच सन्तों के सन्देश का चरम लक्ष्य क्या होना चाहिए इसका ध्यान कम ही मठाधीशों को होगा। रामभक्ति के साथ इस देश की धरती का हित भी पोषित हो, प्रत्येक अंचल में आपसी सद्भाव पनपे इस हेतु देश के दूर-दूर के नगरों और उपनगरों में चातुर्मास्य कर स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने उसके साथ सामाजिक समस्याओं पर समाजनेताओं और चिन्तकों की विचारगोष्ठियों और प्रवचनों की नयी परम्परा स्थापित की, भारतीय वैदुष्य परम्परा को पनपाने के उद्देश्य से प्रत्येक चातुर्मास के अवसर पर एक शिखर मनीषी को एक लक्ष-मुद्रात्मक **'रामानन्द पुरस्कार'** देने का क्रम प्रारम्भ किया, उत्तर दिशा में गंगा तट पर हरिद्वार में विशाल राममन्दिर की स्थापना की योजना चलाई और काशी में गंगा की लहरों के बीच चाँदनी में शास्त्रीय संगीत की पीयूषधारा बहाने वाले एक उत्सव का शुभारम्भ किया। ये सब योजनाएँ धर्म के साथ समाज को जोड़ने का एक अनुपम तरीका समझाती हैं और हमारे भारतीय धर्म में देश की धरती के लिए स्वामिभक्ति किस प्रकार

अंग्रेजी-संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान जयपुर।

01.pmd 25 5/25/2015, 3:44 PM

पिरोई हुई है यह बात स्वयं आचार्यजी बड़े नायाब ढंग से समझाते हैं।

मैं उनकी एक मान्यता से इतना प्रभावित हुआ जिसे आजतक एक पल के लिए भी नहीं भूल पाता कि विश्व के कुछ धर्म शायद ऐसे हों जिन्हें इस धरती के अर्थात् अपने देश के पेड़-पौधों, नदी नाला, पशुपक्षियों से कोई लगाव न हो, इन सब को नीचे छोड़ कर परम पिता से जा मिलना ही उनका प्राप्तव्य हो पर हमारा धर्म, हमारे देश की इस धरती की नदियों को गंगा-यमुना को, यहाँ के पशु-पक्षियों को, गाय को माता समझता है, वे धर्म के साथ अविभाज्य रूप से अनुस्यूत हैं, सारा देश कुम्भ के मेले के लिए एक साथ अलग-अलग नदियों के तट पर मिलता है, वृक्षों की पूजा करता है, उन तीर्थों की यात्रा करता है जो उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक फैले हैं। हमारा धर्म राष्ट्र की धड़कनों में बसता है। यह हुई धर्म, समाज और देश की त्रिवेणी। स्वामी रामनरेशाचार्य जी के प्रवचनों में धर्म के साथ वर्तमान समाजनीति का संदर्भ इसी कारण आप हर बार पाएँगे।

सर्वप्रथम पन्द्रह वर्ष पूर्व जयपुर में ही मैंने उनके दर्शन किए थे क्योंकि उनका यह तरीका सुविदित है कि वे जिस नगर में जाते हैं वहाँ के जननेताओं आदि के अलावा विद्वानों से मिलना भी उनके कार्यक्रम में शामिल होता है। ऐसे कुछ अन्य धर्माचार्य भी होंगे जो ऐसा करते होंगे किन्तु श्रीरामनरेशाचार्य जी ऐसा अवश्य करते हैं। तब मुझे ज्ञात हुआ कि ये काशी के शिखर स्तर के संस्कृत विश्वविद्यालय में नव्य न्याय का विधिवत् अध्ययन मूर्धन्य विद्वानों से कर चुके हैं और नव्यन्याय की प्रतिपादन शैली जो वैदुष्य की कसौटी मानी जाती है इनकी रग-रग में रची-बसी है। इसके अतिरिक्त इनके भाषणों में अधुनातन जानकारी, देश विदेश की घटनाओं के संदर्भ जो सुनने को मिलते हैं वे आधुनिक भाषाओं और सामान्य ज्ञान पर इनका अधिकार प्रमाणित करते हैं। ये पंडितों के बीच नव्यन्याय की भाषा बोलते हैं, पत्रकारों के बीच उच्च हिन्दी, सामान्य जन के बीच सब तरह की भाषाएँ। भाषणों तक सीमित न रहकर उस प्राचीन परम्परा की स्वामी रामानन्द जैसे कालजयी सन्तों के सन्देशों की ग्रन्थाकार में अवतारणा की जाए यह योजना भी इनके मानस में चलती रहती है। तभी तो इन्होंने स्वामी रामानन्द के जीवन और सन्देश पर हिन्दी में उपन्यास लिखने को प्रेरित किया। साहित्यकारों को वह लेखन हिन्दी तक ही सीमित नहीं रहा, संस्कृत और अंग्रेजी में भी फैल गया। शंखनाद और काशीमार्तण्ड शीर्षक उपन्यासों में रामानन्दजी की जीवनी दो लेखिकाओं

01.pmd 26 5/25/2015, 3:44 PM

ने हिन्दी में निबद्ध की, ''पायसपायी'' शीर्षक उपन्यास में राजस्थान के साहित्यकार डॉ. दयाकृष्ण विजय ने। इसका अंग्रेजी अनुवाद भी आचार्य जी ने प्रकाशित कर दिया है, संस्कृत अनुवाद भी। यह हुई संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी की त्रिवेणी।

यह तथ्य तो इनसे परिचित सभी अनुग्रह भाजनों को सुविदित ही होगा कि देश के अनेक मूर्धन्य विद्वानों को इनका अत्यन्त आत्मीय स्नेहानुग्रह प्राप्त है। उनसे मिलकर, उनसे शास्त्रचर्चा कर इन्हें आनन्द मिलता है। संस्कृत, हिन्दी, अर्थशास्त्र, विज्ञान आदि के अनेक प्रोफेसर इनके स्नेह पात्रों की सूची में हैं। यह स्मृति आज मुझे कचोट रही है कि ऐसे विद्वानों में से कुछ हमें छोड़ गए हैं। उज्जैन के प्रो. राममूर्ति त्रिपाठी जो वरिष्ठ आचार्य, मूर्धन्य विद्वान् थे और इनकी सभी विद्वत्गोष्ठियों में सम्मिलित होते थे, दिवंगत हो चुके हैं। अन्य अनेक विद्वान् इनके सानिध्य में, हमारी अपनी परंपरा का योजनाबद्ध, व्यवस्थित परिचय प्रदान करने वाले साहित्य के विरचन, संकलन और प्रकाशन में लगे हुए हैं यह क्या कम सौभाग्य की बात है?

वन्दनीय स्वामी रामनरेशाचार्य जी में एक उल्लेखनीय विशेषता जो मैंने पाई वह यह है कि इनके व्यक्तित्व में, स्वभाव और आचरण में कोई पूर्वाग्रह, कट्टरता, दंभ, अलगाव या पीठाधीशत्व का रौब नहीं है। सबसे सहज भाव से मिलते हैं। कुछ पीठाधीशों में वह 'रिजर्वेशन' होता है, वह रौबदाब सा दिखता है जो पहले राजाओं, नवाबों आदि में होता था, फिर आई. सी.एस., आई.ए. एस. आदि पदधारियों में होने लगा, उन सबके लगभग कालातीत हो जाने पर कभी-कभी राज्यपालों या न्यायपालों जैसे पदधारियों में होने लगा, कभी-कभी तो पाँच वर्ष के सिंहासन पर बैठने वाले मंत्रियों में भी देखा जाने लगा था। मठाधीशों में तो ऐसी ''गरिमा''या ''महिमा'' का मुखौटा होना ही चाहिए। आचार्य जी में वैसा बिलकुल नहीं है। स्वामी रामानन्द के अवतरण का यही तो अवदान है कि ऊँच-नीच का सारा भेद समाप्त कर सारी मानवजाति को एक आराध्य के समर्पित भक्त और उसकी संतान होने के कारण अपना भाई-बहन समझ कर निश्छल बर्ताव करें।

मैं तो सर्वदा यही मान्यता व्यक्त करता रहा हूँ कि रामानन्द संप्रदाय जैसे संघटनों में 'भंडारा' अर्थात् सबका सहभोज करने को जो शिखर स्तर की मान्यता और अनिवार्यता मिली हुई है, जो गुरुद्वारों के लंगरों में भी देखी जा सकती है उसका उद्देश्य यही तो है कि मध्यकाल में जो भेदभाव

01.pmd 27 5/25/2015, 3:44 PM

आ गए थे, भाँति-भाँति की श्रेणियाँ बन गयीं थीं जिनसे समाज आहत हो चला था, उन सबकी समाप्ति का व्यावहारिक माध्यम ऐसे सहभोज, भंडारे आदि लंगर बन जाएँ। तभी सारा समाज एक जुट हो सकेगा, देश में एकता आएगी। आज तो साधुओं में भी जो श्रेणियाँ पैदा होने लगी हैं, ''महामण्डलेश्वर'', पीठाधीश आदि न जाने कैसे-कैसे मान सूचक पदनाम होने लगे हैं– जिन्हें 'ऑनरिफिक्स'' कहा जाता है, जो एक 'हायरार्की' पैदा करते हैं– जो सोने के छत्रवाले ''साधुओं'' और चाँदी के चोबदारों से घिरे सन्तों को शाही रौबदाब पहना देते हैं। यही सिखाया था क्या शंकराचार्य जी ने हमें जो कहते थे– ''सैवाहं न च. दृश्यवस्त्विति दृढ़ा प्रज्ञापि यस्यास्ति चेत् चाण्डालोस्तु, सतु द्विजोऽस्तु गुरुरित्योषा मनीषा यम।'' (मनीषा पञ्चकम्)। अस्तु।

स्वामी रामनरेशाचार्य जी के सहज स्वभाव में आप वैसा अलगाव या दंभ नहीं पाएँगे। उन्होंने श्रीमठ की गरिमा को एकदम शिखर तक पहुँचा दिया है। गंगातट पर एक छोटे से परिसर रूपी श्रीमठ के आसपास के अनेक भवनों को उसके साथ जोड़ कर विशाल बना दिया है। उनके अति आदर शतशः शीर्षस्थ राजनेताओं, मंत्रियों, उद्योगपतियों आदि में देखा जा सकता है क्योंकि वे समाजहित को साथ लेकर चलते हैं किन्तु उनके व्यक्तित्व में कभी किसी ने इस बात का दंभ रंचमात्र भी न पाया होगा। वे दूसरे को समुचित सम्मान देकर जिस प्रकार आवर्जित करते हैं उस कारण अनेक विद्वान् उनके हाथों बेमोल बिके हुए हैं। मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। फिर भी जो स्नेहानुग्रह उनका मुझे प्राप्त है उस कारण मैं भी उन बेमोल बिके हुए स्नेह-पात्रों में से एक मानता हूँ अपने आपको।

आज जब वे अपने जीवन के छह दशक पूरे कर रहे हैं, साधनापूत जीवन की षष्टिपूर्ति पर उन्हें सम्मानांजलि देते हुए हृदय प्रहृष्ट है। प्रमुख मठाधिपति के रूप में भी हम उनके यशस्वी कार्यकाल की रजत जयन्ती मना रहे हैं। उन्होंने गंगातट पर स्थित इस पीठ की कितनी श्रीवृद्धि की है, उसे कहाँ से कहाँ पहुँचाया है, सभी जानते हैं। इस रजत जयन्ती के अवसर पर उन्हें समर्पित है हमारी प्रणामांजलि।

●

01.pmd 28 5/25/2015, 3:44 PM

षष्टिपूर्ति पर शत्-शत् अभिनंदन

रमाकांत आंगिरस

भारतवर्ष के सांस्कृतिक इतिहासक्रम में वैष्णव भक्ति-परम्परा के योगदान का यद्यपि विशद् विवेचन हुआ है फिर भी परिवर्तन के प्रतिदिन बदलते परिवेश में बहुतकुछ कहने की अपेक्षा बनी रहती है। पाञ्चरात्रनामक वैष्णव आगम के चतुर्भुज रूप में विशिष्टाद्वैती श्री सम्प्रदाय ने इस देश के संवेदनशील चिन्तकवर्ग को भक्ति दर्शन का विमर्श देकर यह सिद्ध कर दिया था कि भक्तिदर्शन केवल व्यक्तिमुमुक्षु के लिए न होकर सम्पूर्ण लोकचेतना को उसके असमंजस भाव से छुड़ाकर सामंजस्य में जीना है। स्वयं भगवान् विष्णु हों, नरनारायण हों, श्रीराम हों, श्रीकृष्ण हों, हनुमान 'एवम् भीष्म या अर्जुन हों सभी अद्भुत उद्यम और पराक्रम की प्रतिमूर्तियाँ हैं। लोकजीवन में फैले वैषम्य के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करते हुए धर्मस्थापना की ध्वजा को उठाए रखने का संकल्प यह रामावत वैष्णवभक्ति का केन्द्रीय प्रस्थान है। क्षुद्र सत्त्ववाले चित्त से इस मार्ग का अनुसरण संभव नहीं वृहत् सत्त्व की प्राप्ति के लिए भगवत्प्राप्ति के शरणागत होना पड़ेगा।

बड़े आश्चर्य की घटना है कि जिस समय हमारे इतिहास के मध्ययुग में श्री रामानन्दाचार्य रामभक्ति के विश्वरूप की स्थापना कर गए थे उसके प्राय: कुछ बाद में ही दक्षिण भारत के ही शुद्धाद्वैती आचार्य वल्लभ श्रीकृष्ण को रसिक शिरोमणि सिद्ध करके उन्हें गोकुल की ग्राम चेतना से बाहर जाने ही नहीं देना चाह रहे थे। परिणाम स्वरूप रामभक्ति के वैरागियों पर सज्जनपालन और दुष्टदलन का सारा दायित्व आ गया। एक ऐसा जन-जागृति आन्दोलन खड़ा हो गया जिसने महाराष्ट्र गुजरात समेत सम्पूर्ण उत्तरभारत को आत्मसात् कर लिया। एक ऐसा रामराष्ट्र जिसमें हरिभक्ति के प्रबल प्रवाह में अर्थहीन जीवन की रूढ़ियाँ और जाति पाँति के कठिन बाँध भी मिट्टी के कच्चे किनारों की तरह बह गए। कबीर और तुलसी की वाग्धारा ने एक ऐसे नरराष्ट्र का

संस्कृत वाङ्मय के विख्यात विद्वान, चण्डीगढ़।

01.pmd 29 5/25/2015, 3:44 PM

संकल्प खड़ा कर दिया जो अपने स्वरूप में न तो सेमेटिक या इस्लामी राष्ट्रभावना से ग्रस्त थी न ही पश्चिमी राष्ट्रों के नस्लवादी प्रभाव से आक्रान्त थी। वह निश्चित रूप से स्वदेशी स्वराज्य का सूर्योदय था। ऐसी राष्ट्रभावना ''परस्परं भावयन्तः'' अर्थात् आपस में एक दूसरे को पुष्ट करने वाली यज्ञभावना पर आश्रित थी। राम विश्वामित्र यज्ञ के स्वयम् संरक्षक थे। यज्ञ संस्कृति का नामान्तर ही राघव संस्कृति है जिसके पुरोधा श्री रामानन्दाचार्य आज से प्रायः ७१५ वर्ष पूर्व भारतवर्ष के प्रयाग स्थळ में आविर्भूत हुए। युग की आवश्यकता के अनुसार विकृत रूढ़ियों का अपाकरण और स्वस्थ लोक संस्थाओं के नवीकरण का दायित्व अपने पर लेकर भक्तिदर्शन को सक्रिय सामाजिक अर्थवत्ता के साथ अन्वित कर दिया जिसके परिणामस्वरूप वैष्णव चिन्तनधारा ने लोकचेतना को प्रत्यक्ष एवम् परोक्षरूप में संघर्ष के लिए जागरूक बना दिया।

वर्तमान में उसी परम्परा में ऐसा ही गुरु दायित्व का निर्वाह करने का स्वामी श्रीरामनेरशाचार्य महाराज ने बीड़ा उठाया है। परिस्थितियाँ और भी अधिक विषम हैं क्योंकि स्वतंत्रता के नाम पर निरंकुश व्यवहार प्रायः लोक जीवन के सभी वर्गों में व्याप्त हो रहा है। कुछ लोग श्रद्धा को विचारहीनता के साथ जोड़कर अधर्म को ही धर्मस्थापना समझने लगे हैं। दूसरी कोटि के लोग नास्तिकता को तर्कशीलता का गौरव मानते हुए उपभोक्तावादी जीवन शैली को लोक जीवन में संचारित करने में दिन-रात प्रयत्नशील हैं। और शासनतन्त्र लोक-व्यवस्था के प्रति तटस्थ है। ऐसी स्थिति में श्रीरामनरेशाचार्य महाराज द्वारा भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्तभाग में अपने चातुर्मास यापन कार्यक्रमों और निरन्तर वर्षभर राघव-संस्कृति के योग, यज्ञ, दान, तप आदि पावन कर्मों के संपादन द्वारा जो धर्मचक्र का प्रवर्तन कार्यक्रम चल रहा है वह निश्चय ही इस देश के विभिन्न धर्मों, मतों एवम् सिद्धान्तों के विकट अन्तराल के बीच श्रीरामसेतु के निर्माणकार्य जैसा विराट् कर्म है।

भारतीय संस्कृति के मौलिक जीवन मूल्यों के संरक्षण एवम् संवर्धन का अबतक का कार्य, आधुनिक आचार्यों एवम् उनके आन्दोलनों के द्वारा जो भी संपादित हुआ, वह किसी न किसी प्रकार से पश्चिमी जीवनदृष्टि से प्रभावित होकर ही अग्रसर हुआ है। किन्तु जो कार्य पंचगंगा घाट श्रीमठ के वर्तमान नेतृत्व में चल रहा है वह नितान्त निर्मल स्वयंभू जल जैसा है। गोस्वामी श्री तुलसीदास के रामचरितमानस वाली शैली, जिसमें लोकानुकूल समस्त परम्पराओं का शास्त्रीय सार भी रहे और साधारण जन का मंगल

01.pmd 30 5/25/2015, 3:44 PM

भी निहित हो अर्थात् जहाँ पर लोक और शास्त्र विमुख होकर नहीं अभिमुख होकर प्रवाहित हों अथवा गोस्वामी जी के शब्दों में ''कीरति भणिति भूति भल सोई सुरसरि सम सब कहँ हित होई'' ऐसी ही सुरसरि गंगा के समान सबका हित संपादन करने वाली सारस्वत धारा का प्रवाह श्रीरामनरेशाचार्य महाराज द्वारा जो हो रहा है वह उनके व्यक्तित्व का श्रीरामकार्य के सम्मुख निश्छल समर्पण है जिसमें श्रीमान् मारुति जी की प्रेरणा का अभिनिवेश है।

वास्तव में रामानन्दी चिन्तनधारा के व्रत को जो पहचानते हैं उन्हें पता है कि यहाँ एक विलक्षण प्रकार का विरक्ति और अनुरक्ति का सामंजस्य है। रामकार्य के प्रति घोर अनुरक्ति और अपने व्यक्ति प्राणों के प्रति परमा विरक्ति। इसी ने मध्यकालीन समस्त धर्मसाधनाओं को प्रभावित किया और वर्तमान में स्वातंत्र्य संग्रामी महात्मा गाँधी जैसे सत्याग्रहियों को। आज भी भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी और लता के समवेत स्वरों में गाए जा रहे भजन में उसी रामानन्दी जीवनदर्शन का संक्षिप्त सार को कानों-से सुनते हुए उसके वर्तमान प्रतिनिधि श्रीरामनरेशाचार्य के सान्निध्य का अनुभव कर रहा हूँ–

राम का गुणगानकरिए, राम प्रभु की भद्रता का सभ्यता का मान करिए।। राम के गुण-गुणचिरन्तन, राम सुमिरन है रतन धन, मनुजता को कर विभूषित मनुज को धनवान् करिए, सगुणब्रह्म स्वरूप सुन्दर सुजनरंजन भूप सुखकर राम आत्मा रामआत्मा राम का ही ध्यान धरिए–

इन्हीं शब्दों में श्रीरामनरेशाचार्य महाराज के सर्व सम्पूर्ति कर रामकार्य की निरन्तर अग्रसरता के लिए मंगलकामनाएँ। उनकी षष्टिपूर्ति का यह क्षण उनकी जीवनयात्रा का सुन्दरकाण्ड सिद्ध हो यह रामजी से अपेक्षा है।

●

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य-श्रीमद्रामनरेशाचार्याणां किमप्यद्भुतमाचार्यत्वम्

वेदप्रकाशः शास्त्री

प्राक् कालादेव प्रवर्तमाने स्थावरजङ्गमात्मके भूमण्डलेऽस्मिन् काले काले मधुरया वाचा सत्यपूतामृचमुद्गिरन्तो महर्षयः, धर्मतत्त्वमुद्भासयन्तः समर्चनीयाचारा धर्मनिष्ठा धर्मव्रतपरायणा धर्माचार्याः, अविकलया तत्त्वमीमांसया विद्वज्जनमनांसि समुल्लासयन्तो दर्शनशास्त्र निष्णाता दर्शनाचार्याश्च संबभूवुः। तैश्च सर्वैरेव जगत्कल्याणं हृदि निधाय यथोचितं कर्मजातं प्रकल्पितम् परं केचनाचार्याः स्वसुखपक्षं प्रक्षिप्य परसुखपक्षमेव हृदि संस्थाप्य परोपकराय जीवन्ति, परोपकाराय गच्छन्ति, परोपकाराय पठन्ति, परोपकाराय प्रवदन्ति, प्रतिदिनं परोपकारायैव जीवितं प्रधारयन्ति। एवंविधानामद्भुताचाराणामाचार्याणामनुपमितायां मालायां मध्ये मणिरिव प्रभासते श्रीमद्रामनरेशाचार्यः।

श्रीमद्रामनरेशाचार्याणां जीवनं सोमरूपं विद्यते। यथा जनाः सोमं निपीय (सोममिति ज्ञानरसं भक्तिरसं) अमृता भूत्वा संसारे निर्भया सन्तो विचरन्ति तथैव श्रीमद्रामनरेशाचार्याणां मुखात् निःसृतं विद्यारसं ज्ञानरसं सोममिव निपीय अमृतविद्याविभूषिता भूत्वा आनन्दभनुमवन्ति। यथा पतितपावनीगङ्गा स्वक्रोडस्थान् सर्वान् मनुष्यान् पुनाति तथैवाचार्यप्रवराः स्वसमीपस्थान् भक्तजनान् जिज्ञासुपरस्परापरिपोषकान् ज्ञानरसवत्या विद्यया विभूषयन्ति पुनन्ति च। यथेन्दुं धवलवर्णं निशायां निरीक्ष्य शीतरश्मिजन्यं सुखं लभन्ते प्रकाशं प्राप्नुवन्ति जनाः, तथैव आचार्यप्रवरं काषायवस्त्रधारिणं समवलोक्य तत्सन्निधिञ्च संप्राप्य प्रवचनमाकर्ण्य ज्ञानस्यैश्वर्यं लब्ध्वा ज्ञानपिपासवो नितरां भवन्त्यानन्दिताः। महतां गुणगणनामनुसरन्तो विद्यावतां ज्येष्ठाः परगुणाख्याने स्वहृदयस्य विशालतां प्रकटयन्ति। महापुरुषाः स्वगुणनिदर्शने नापितु परगुणनिदर्शने भवन्ति समुत्सुकाः। प्रमुखानामाचार्याणां स्वरूपं मित्ररूपमाधत्ते। मितात् त्रायत इति मित्ररूपतामासाद्य ज्ञानाल्पतां निराकृत्य आचार्यः स्वशिष्याणां ज्ञानसद्भावे सद्विचारे सत्कार्ये

पूर्वोपकुलपतिः, गुरुकुल-काँगड़ी-विश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

01.pmd 32 5/25/2015, 3:44 PM

चानल्पतां निदधाति। स्वाध्याये स्वभक्तान् नियोजयति पापाच्च निवारयति। श्रीमतां पुण्यवतां आचार्यप्रवराणां श्रीरामनरेशाचार्याणां जीवने वेदमन्त्रोऽयं प्रत्यहं प्रकाशते–

सोमा पवन्त इन्दवो अस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
मित्रा स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ।।

(सामवेद, पूर्वार्चिकः)

स्मृतिकारेण ''आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिरिति'' निगद्य आचार्यस्य ब्रह्मरूपत्वं प्रतिष्ठापितम्। यः खलु ब्रह्मविद् भवति स एव भवत्याचार्यः। उक्तमपि ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति। एतेन ज्ञायते यत् ज्ञानदृष्ट्या सर्वोत्तमः सर्वश्रेष्ठः सर्वमान्यश्च भवत्याचार्यः। यथा प्रतिदिनमुदेति सूर्यः स चोदयनकाले निखिलमपि तामसं दूरं विधाय निखिलमपि जगद्वस्तुजातं प्रकाशयति, समस्तवर्णाश्रमस्थानां मानवानां प्राणिनां च सर्वेषां निद्रां समाप्य स्वस्वकर्मजाते प्रयोजयति। आचार्यो विद्याभानुना समेषां निजचरणागतानां सर्वविधमविद्यान्धकारं निवारयन् विद्यामृतं पाययति वास्तविकं जीवनमार्गं निर्दिशति सार्वत्रिकमभ्युदयञ्च समुदीर्य सुखं प्रयच्छति ग्लानिमपहरति दैन्यं निन्दति पुरुषार्थं च प्रवर्धयति। वेदविनिःसृते समग्रशास्त्रचये पदे-पदे विद्यते समर्चनीयचरणानामाचार्याणां महत्त्वम्। तत्र आचार्याणां प्रोद्भूतमद्भुतमनश्वरं दैवीसम्पद्द्वयं निगद्यते। एकं दिव्यं धनं वित्तं वा विद्यानाम्ना व्यपदिश्यते द्वितीयं च दिव्यं धनं तपोनाम्ना निगद्यते। आचार्यः सर्वात्मना तपस्तप्त्वा निगूढं पापं प्रहन्ति विद्यया च अविनश्वरं परमात्मामृतमश्नाति। अतएव शुद्धाचारैस्तपोःपूतैरनूचानैः शास्त्रेषु प्रोच्यते–

तपो विद्या च विप्रस्य निःश्रेयसकरं परम् ।
तपसा किल्विषं हन्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते ।।

मनु. १२-१०४

निर्वचन-प्रकार-प्रकटननिपुणेन प्रज्ञावतामग्रिणा श्रीमता यास्काचार्येण वेदप्रयुक्तम् आचार्यपदं यया विशिष्टया प्रतिभया प्रभाषितं नूनमेव तद्वैशिष्ट्यावहम्। आचार्य आचारं ग्राहयति, आचिनोत्यर्थान्, आचिनोति बुद्धिमिति वा। जगद्गुरुश्रीमद्रामानन्दाचार्यश्रीमद्रामनरेशाचार्यैः बहूनां स्वभक्तानां सेवकानां समुपासकानां जीवनं शुद्धाचार-सदाचार-रमणीयाचारचर्यया रमणीयं कृतम्। नैकविधानां परिचितानां चरणसेवासमर्पितजीवनानां सुश्रवणभावनया सत्सङ्गमुपागतानां जिज्ञासूनां शिष्यकल्पनां श्रोतृणां मनसि नवीना नवीना अर्थाः सम्प्रकाशिताः। स्वचरणसरोजमधिश्रितानां सारस्वतपुत्राणां स्वशिष्याणां

01.pmd 33 5/25/2015, 3:44 PM

समधिगतमन्त्राणां ब्रह्मविद्यास्नातानां ब्रह्मवर्चसां आध्यात्मिकचिन्तनपवित्रा पावमानी सुमतिराविष्कृता। श्रीमद्भिः समाराधितसरस्वतीप्रदत्तवरप्रसाद-प्रसन्नवदनैराचार्यश्रेष्ठैः श्रीरामनरेशाचार्यैर्ज्ञानयज्ञःसमारब्धः। सर्वान् भौतिकान् यज्ञान् ब्रह्मज्ञानयज्ञः समतिशेते। ब्रह्मज्ञानयज्ञस्याधिष्ठातृपदे राजमानाः सर्वजनप्रशस्या नमस्याश्च सन्ति श्रीमदाचार्य-प्रवराः श्रीरामनरेशाचार्याः। यज्ञं सफलयितुं स एव प्रभवति यं जनाः सर्वात्मना प्रशंसन्ति, यं विविधाः प्रपञ्चप्रकाराः कदापि न विकलयन्ति, यं कामक्रोधसमुत्थितानि व्यसनानि न व्यथयन्ति, महाधिकारसम्पन्नो नृपतिरपि प्रयुक्तेनापि प्रबलेन बलेन मनागपि यं प्रचेतसं न व्याकुलयति, यं सर्वे वर्णाः सश्रद्धया धिया ध्यायन्ति, यं मधुवृष्टिकरं पर्जन्यमिव मन्यन्ते जनाः, यं सर्ववर्णाश्रमप्रमुखकर्मोपदेष्टारं यथोचितं नियोक्तारं च कवीश्वरमिव भक्तजनाः अभिनन्दन्ति। अस्मिन् ब्रह्मयज्ञानुष्ठानाधिष्ठातृगुणगणनाक्रमे श्रीमतां श्रीरामनरेशाचार्याणां नाम समेषां जिह्वाग्रे राजते। वेदे यज्ञसञ्चालकस्य गुणान् गणयन् मन्त्रो विद्यते, स मन्त्रो मान्याचार्याणां जीवने प्रतिबिम्बतो विभाति। यथा–

नराशंसः सुषूदतीमं यज्ञमदाभ्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः ।।

ऋग्वेद ५.५.२

आचार्याणां जिजीविषा नात्मने अपितु परात्मने सर्वात्मने वा प्रभवति। आचार्या ब्रह्मवर्चसो अर्चनीयाचाराः सन्तः केवलं ब्रह्मवादिनीं परम्परामेव जीवन्ति जीवयन्ति च। सोमं परोपकारं परहितम् उमया सहितं च सोमं सदा ध्यायन्ति अत एव भवन्ति सोमिनः। आचार्याणां वाचि चतसृणामपि विद्यानां निःस्यन्दः परमात्मगुणगीतानां मधुरो रसः प्रतिक्षणं रामनामोच्चारणरसश्च प्रवहति। सर्वास्ववस्थासु सर्वेषु कालेषु सर्वेषु देशेषु ब्रह्मज्ञानमेव वर्धयन्ति विद्वज्जनशिरोधार्या आचार्याः। अध्वरदीक्षायां सुदक्षाः, धर्मरहस्योद्घाटने प्रवीणाः प्रतिष्ठावन्तो भवन्त्याचार्याः। ब्रह्मविद्यां प्रवदतां तपोधनानां सत्यवादिनां प्रज्ञावतां-चाचार्याणां बुद्धौ सर्वं हस्तामलकवद् विभाति नहि किमपि भवति तेषामविदितम्। आचार्याणामैषमः प्रभावः प्रमुखतया वेदमन्त्रे विद्यते। वेदमन्त्रोऽयं श्रीमतां रामनरेशाचार्याणां जीवने फलितो विभाति—

ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम्।
अध्वर्यवो धर्मणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न केचित्।।

ऋग्वेद ७.१०३.८

ज्ञाननिधयो ज्ञाननेत्राश्च भवन्त्यार्चाः। ते स्वज्ञानाग्निना परेषां ज्ञानाग्नि समेधयन्ति। विशिष्टाः खल्वाचार्या ऋतमेव शंसन्ति। ऋतशंसकान् तान् कदाचिदपि

01.pmd 34 5/25/2015, 3:44 PM

कोऽपि ऋतेतरे प्रसङ्गे न प्रवर्तयति। आचार्या ऋते-परमात्मव्यवस्थायां श्रद्धां वितन्वाना ऋते सीदन्तीति व्युत्पत्त्यनुसारं भवन्ति ऋषिपदाभिधेया:। आचार्याणां जीवनं सदैव ऋजुतामातनोति। तेषां मनसि सन्देहस्य विचारविरोधस्य कातर्यस्य दैन्यस्य कौटिल्यस्य च लेशोऽपि क्षणमपि न तिष्ठति। आचार्या: प्रकाशपुत्रा भवन्ति तेषां निखिलमपि जीवनं प्रकाशमयम्। यथा दिवि प्रकाशेतरस्य नास्त्यवसर: सूर्यस्य प्रकाशरूपत्वात् तथैव आचार्याणां जीवने नास्ति कदाप्यज्ञानतिमिरप्रवेशो दिवसपुत्रत्वात्। ब्रह्मचर्यव्रतपरिपालकानां ब्रह्मविद्यानिष्ठावताम् आचार्याणां वृत्राश्चासुराश्च सुजेया भवन्ति न भवन्ति दुर्जेया:। आचार्या ब्रह्मविद्याबलेन आत्मरसं पायं पायं अङ्गिरसवतां प्रथमे हि भूत्वा विप्रज्येष्ठानां श्रेष्ठानां भवन्त्यर्चनीया:। एवंविधा आचार्या यज्ञरूपस्य सर्वव्यापकस्य परमात्मन: परमानन्दपदं प्राप्तुं प्रभवन्ति। श्रीमद्रामनरेशाचार्याणां जीवनमिमे गुणा: वेदमन्त्रनिर्दिष्टा: समभिनिविष्टा: सन्ति। प्रस्तूयते मन्त्र:–

ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना
दिवस् पुत्रासो असुरस्य वीराः ।
विप्रं पदमङ्गिरसो दधाना
यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त ।

अथर्ववेद, २०.९१.२

तपोनिष्ठानां विद्यावदातचेतसां पापशून्यानां गुणाश्रयाणां सुकृतलोकमधिश्रितानाम् आचार्याणां शरीरे सप्तऋषय:प्रतिहिता भवन्ति। यथा–

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् ।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽअस्वप्नजौसत्रसदौ च देवौ ।।

यजुर्वेद. ३४.५५

आचार्यश्रेष्ठा: श्रीमद्रामनरेशाचार्या: स्वयं स्वाध्यायरता: स्वयं धर्मचर्यापालितजीवना: स्वयमार्षप्रवचनपरिपाटिपोषणनिपुणा: सन्ति। अत एवाधार्मिकानां जीवनं धर्मज्योतिषा प्रकाशयन्ति, उत्कृष्टसाहित्याध्ययनविमुखान् शास्त्रस्वाध्याये प्रेरयन्ति। शिष्यसेवकभक्तपरम्परामुपागतान् सर्वान् सुखयितुं मातरि पितरि गुरौ च देवभावमास्थापयितुं परमं उपदेशामृतं पाययन्ति। सरलं जीवनं रक्षितुं, कुटिलं मार्गं परित्यक्तुं, दिव्यं भावमाधातुं, देवप्रसादं ग्रहीतुं, देवताराधनाधिगतं वैभवं भोक्तुं, सरस्वत्यर्चनासमुद्भूतं दिव्यं मधुरसं पातुं, सुखकरे परोपकारे रन्तुं, यज्ञविधानमनुसंधातुं, दु:खहरं सुखप्रदं च सन्मार्गमन्वेष्टुमेव प्रतिदिनमुपदिशन्ति सत्योपदेष्टार ऋतावाना: सुकृतिनो

01.pmd 35 5/25/2015, 3:44 PM

भद्रभावभासितान्त:करणा: श्रीमदाचार्यशिरोमणय: श्रीमद्रामनरेशाचार्या:।

श्रीमतां श्रीरामनरेशाचार्याणां तेजस्वितां वर्चस्वितां मनस्वितां सच्चिन्तनपरतां सदसद्विचारकुशलतां मतिमतां श्रेष्ठतां वाक्कलापरिष्कार-प्रवीणतां सकृन्नापि त्वसकृत्परीक्ष्य सूक्ष्मेक्षणकरणधुरीणै: प्रबुद्धैराचार्यप्रमुखै: समुचिते काले शिष्टपरम्परया सह श्रीमद्जगद्गुरुरामानन्दाचार्याणां प्रतिष्ठिते पदे श्रीरामनरेशाचार्याणां पुण्याभिषेक: कृत:। तत: प्रभृति जगद्गुरुश्रीमद्रामानन्दाचार्य इति विशिष्टपदालङ्कारेण समलङ्कृता: सन्ति श्रीमद्रामनरेशाचार्या:। जगद्गुरुश्रीमद्रामानन्दोपाधिसत्कृतानां श्रीमतामाचार्याणां श्रीमद्रामनरेशाचार्याणां सम्प्रति पञ्चविंशतिवर्षाणि सुखवर्षाणीव सुकृतवर्षाणीव च स्मृतिपथमुपनेयानि सन्ति। पञ्चविंशतिवर्षेषु श्रीमद्भिराचार्यरामनरेशाचार्यै: परं सुखकरं शिवकरमुल्लासकरं यन्महत्कार्यं प्रकल्पितं तदतीव रमणीयमस्ति। श्रीमतां धीमतां वरेण्यैराचार्यप्रवरै: काशीस्थसुप्रसिद्धश्री पीठाधीश्वरत्वमङ्गीकृत्य तत्परम्पराम-विरलतया परिपाल्य स्फीतं यश: समर्जितम्। विविधशास्त्रपारङ्गतविद्वज्जननगर्यां काश्यां वसतिं कुर्वाणैराचार्यप्रवरै: स्वकीयमपरिमितं सामर्थ्यं प्रकट्यदभिरनेकानि शोधसम्मेलनानि सम्पादितानि। निखिले भारते यत्र यत्र श्रीराममन्दिराणि प्राचीनानि जीर्णानि जातानि तानि सर्वाणि मन्दिराणि पूर्णतया प्राक्कल्पनया सह नवकल्पनया पुनरपि साधनास्थलानि भगवद्रामदर्शनयोग्यानि श्रीरामकथाश्रवणपवित्राणि श्रीरामभक्ताश्रयपदानि च विधाय समुद्धृतानि संरक्षितानि च। समग्रे भारते चत्वारि कुम्भस्थानानि विद्यन्ते, तेषु सर्वेषु कुम्भस्थानेषु पूर्णकुम्भावसरे अर्धकुम्भावसरे च श्रीमद्भि: जगद्गुरुश्रीरामनरेशाचार्यै: जगद्गुरुश्रीमद् रामानन्दाचार्याणां विजयपताकामुत्तोलयद्भि: कुम्भस्थानानि सार्थकानि विधाय स्वकीयमद्भुतं वैशिष्ट्यं प्रकाशितम्। दशोत्तरद्विसहस्रतमे ख्रिष्टाब्दे कुम्भस्थाने हरिद्वारे सम्पन्ने पूर्णकुम्भावसरे विविधानि सारस्वतसम्मेलनानि विविधेषु विषयेषु समायोज्य ये विद्वांस: सम्मानितास्तत्र आचार्यशिरोमणिभिरपि स्वतप:प्रभावेण विद्यावैभवेन च सर्वे विभाविता:। 'हरिद्वार-समग्र' नामकं पुस्तकं प्रकाश्य प्रशंसनीयं कार्यं सृष्टं श्रीमद्भि: आचार्यवर्यै:। एवमेव त्रयोदशोत्तरद्विसहस्रतमे ख्रिष्टाब्दे प्रयागराजे सम्पन्ने महाकुम्भावसरे विद्वद्गोष्ठी समायोजिता, कुम्भपर्वमाहात्म्यप्रचाराय (तीर्थराज प्रयाग और रामभक्ति का अमृत कलश) नामकम् अद्भुतं ग्रन्थरत्नं निर्मितमभिवन्द्यैराचार्यप्रवरै:। परमतत्त्वोन्मेषकराणि बहूनि ग्रन्थरत्नानि निर्मितानि विद्वद्जगत्यां स्वप्रभया चकासति। हरिद्वारे समुत्कृष्टस्य विशिष्टस्य श्रीराममन्दिरस्य विलक्षणया वास्तुशास्त्रदृशा निर्माणकार्यं समारब्धमाचार्यमहोदयै:। अस्मिन् वर्तमाने

01.pmd 36 5/25/2015, 3:44 PM

वर्षे चातुर्मास्यानुष्ठानावसरे रामराज्यावधारणा विषये हरिद्वारे पवित्रे स्थाने विद्वद्गोष्ठीमायोज्य स्वतपस्वितया यशस्विता समर्जिता।

श्रीमद्रामनरेशाचार्यैः सम्प्रति जगद्गुरुश्रीमद्रामानन्दाचार्य-निर्मलपदप्रतिष्ठितैः पञ्चविंशतिवर्षेषु कस्य विदुषो मनसि स्थानं न लब्धम्, को भारतीयो राष्ट्रचिन्तने न नियोजितः, कस्य धनिकस्य हृदये दानप्रवृत्तिर्न परिवर्धिता, कस्य स्वसेवकस्य हृदये रामभक्तिरसो न प्रवाहितः, कः शिष्यः स्वाध्यायकरणाय न प्रेरितः, को नु खलु विद्वान् मधुरया वाचा समुचितेन सम्मानेन च विद्यावर्धनाय संरक्षणाय च न प्रेरितः, कः पतितः प्रभूताश्रयप्रदानेन नोत्थापितः, को निर्बलो भावबलेन सबलो न कृतः, को विद्याविहीनो विद्यार्जनाय न प्रेषितः, यद्-यद् करणीयं तद्-तद् कृतं क्रियते, यद्-यद् अनुष्ठेयं तद्-तद् अनुष्ठितं अनुष्ठीयते च।

यद्यपि जगद्गुरुश्रीमद्रामानन्दाचार्यपदेन विभूषिता बहवो खलु मान्या वन्दनीया आचार्याः सन्ति ये निष्ठया परम्परां पालयन्तः प्रतिष्ठामावहन्ति परं गुणगणनायां तपस्वितायां स्वभावसरलतायां समत्वभावनायां च जगद्गुरुश्रीमद्-रामानन्दाचार्यश्रीमद्रामनरेशाचार्याणां स्वरूपं किमपि विलक्षणमेवास्ति। अतो वक्तुं शक्यते यद् जगद्गुरुश्रीमद्रामनरेशाचार्याणाम् आचार्यत्वं नितरामद्भुतमेवास्ति। अन्ते च, आचार्याणामद्भुतगुणगणनायामग्रतमाय श्रीमते जगद्गुरु-श्रीरामनरेशाचार्याय नमो नमः।।

●

01.pmd 37 5/25/2015, 3:44 PM

जगद्गुरु श्रीरामानंदाचार्य की परम्परा और जगद्गुरु श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज

कमलेशदत्त त्रिपाठी

जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज का आविर्भाव तीर्थराज प्रयाग की पुण्यस्थली में हुआ। समस्त आचार्यों का आविर्भाव दक्षिण भारत में ही हुआ है, किन्तु जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी उत्तर भारत से प्रकट हुए। चौदहवीं शताब्दी वैक्रमी के अन्त में श्रीसम्प्रदाय के प्रधान आचार्य श्री राघवानन्द जी काशी में विद्यमान थे। श्री रामानन्द जी की दीक्षा उन्हीं से सम्पन्न हुई। दीक्षा-प्राप्ति के अनन्तर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी ने समस्त भारत का पर्यटन किया और इस देश की धार्मिक और सांस्कृतिक स्थिति को बहुत निकट से समझा। रामानन्दाचार्य जी महाराज उन आचार्यों में अग्रणी हैं जिन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार सनातन धर्म की परम्परा में एक अभीष्ट मोड़ प्रदान किया। उन्होंने तत्कालीन हिन्दू समाज को अपने सम्प्रदाय प्रवर्तन के साथ एक नयी दिशा दी। यद्यपि सगुण उपासना और भक्ति की प्राचीन परंपरा चली आ रही थी और भक्ति के मार्ग ने आगमों की दृष्टि के अनुसार भगवत्प्राप्ति के लिए दीक्षा की अधिगति के अधिकार का विस्तार किया, किन्तु जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी ने आगे बढ़कर इस अधिकार विस्तार को समुचित सैद्धान्तिक और व्यावहारिक रूप प्रदान किया। मानिकपुर के शेखतकी के साथ उनका शास्त्रार्थ हुआ था। शेखतकी सुल्तान सिकन्दर लोदी का पीर था और रामानन्दाचार्य जी महाराज उनके समकालीन सिद्ध होते हैं। उनका वर्तमान होना वैक्रम संवत् १५४६ से संवत् १५७४ के बीच में अवश्य ही सिद्ध हो जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन अट्ठारह वर्षों के काल-विस्तार के भीतर– चाहे आरम्भ की और चाहे अन्त की ओर रामानन्द जी का स्थितिकाल माना है। शेखतकी के साथ उनके मुठभेड़ को कबीर के शिष्य धर्मदास ने उल्लिखित किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उस उल्लेख को उद्धृत किया है–

भारतीय वाङ्मय के सुख्यात विद्वान काशी, वाराणसी (उ.प्र.)

01.pmd 38 5/25/2015, 3:44 PM

शाह सिकन्दर जल में बोरे, बहुरि अग्नि पर जाये।
मयमत, हाथी आनि झुकाए सिंह रूप दिखराये।
निर्गुण कथैं अभय पद गावें, जीवन को समझाये।
काजी पंडित सबे हराए पार कोउ नहीं पाये।

आचार्य शुक्ल ने यह भी कहा है कि वैरागियों की परम्परा में आचार्य रामानन्द जी के साथ शेखतकी के वाद-विवाद की घटना को माना जाता है। अत: आचार्य का समय लगभग निश्चित है।

आचार्य रामानन्दाचार्य जी तत्त्वत: आचार्य रामानुज के बाद की पन्द्रहवीं पीढ़ी में हुए। रामानुजाचार्य जी महाराज का परलोकवास संवत् ११९४ में हुआ। एक पीढ़ी के लिए १४ वर्ष का समय मानकर पन्द्रह पीढ़ी के इस पूरे काल को लगभग ३०० वर्ष माना है और इस प्रकार आचार्य जी का समय भी वही ठहरता है जिसे आचार्य शुक्ल ने सुझाया है। श्रीरामार्चनपद्धति में आचार्य ने अपनी पूरी गुरु परम्परा दी है और इस प्रकार तत्त्वत: रामानुजाचार्य जी के मतावलम्बी होकर भी आचार्य रामानन्दाचार्य जी ने अपने उपासना पद्धति में अपनी विशिष्ट अभीष्ट रूप को भी स्थान दिया। दशरथसुत राम की उपासना रामानुजाचार्य की परम्परा में स्वीकृत थी। रामानन्द जी ने भगवान् विष्णु के अन्य अवतारों में से राम रूप को ही विशेष लोक-कल्याणकारी मानकर एक शक्तिशाली सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। रामानुज सम्प्रदाय में दीक्षा का अधिकार केवल द्विजों को था। किन्तु रामानन्दाचार्य जी ने दीक्षा के लिए सभी जातियों के स्त्री-पुरुष के लिए द्वार खोल दिया। उन्होंने मनुष्यमात्र को सगुण भक्ति का अधिकारी माना और इसके लिए रामायण और महाभारत की परम्परा का अनुगमन करते हुए सप्रमाण अपने सिद्धान्त की स्थापना की। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इसका यह अर्थ नहीं है कि वे वर्णाश्रम धर्म के विरोधी थे। शास्त्रानुसार वर्णाश्रमधर्म को मानते हुए भी शास्त्रीय परम्परा के अन्तर्गत ही श्रीराम की भक्ति के लिए मानवमात्र को दीक्षा का अधिकार प्रदान कर उन्होंने उपासना का मार्ग ही विस्तरित नहीं किया, एक ऐसी सामाजिक क्रांति के द्वार भी खोल दिये जिससे तत्कालीन हिन्दू समाज के लिये एक बहुप्रतीक्षित मार्ग का आरंभ हुआ, जिसे उनके शिष्य कबीरदास, रैदास, सेन नाई और गांगरौणगढ़ के राजा पीपा आदि ने स्वीकार कर एक अत्यन्त शक्तिशाली धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन का विस्तार किया।

01.pmd 39 5/25/2015, 3:44 PM

श्रीरामानन्दाचार्य महाराज ने 'वैष्णवमताब्जभास्कर' और 'श्रीरामार्चनपद्धति' नामक दो संस्कृत ग्रन्थों का प्रणयन किया। इसके अतिरिक्त संप्रदाय में ब्रह्मसूत्र पर 'आनन्दभाष्य' और 'भगवद्गीताभाष्य' भी उनकी ही रचना माना जाता है। आचार्य शुक्ल ने इन दो ग्रन्थों को जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के द्वारा विरचित होने की मान्यता के प्रति सावधान रहने को कहा है। इस दृष्टि से इन दो ग्रन्थों के गंभीर आलोडन की आज भी आवश्यकता बनी हुई है।

जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी विनय और स्तुति के पद भी रचकर गाया करते थे। हनुमानजी की स्तुति में गायी जाने वाली आरती उन्हीं की रचना मानी जाती है। कुछ लोग आचार्य रामानन्दजी को अद्वैत वेदान्तियों के ज्योतिर्मठ का ब्रह्मचारी स्वीकार करते हैं। इसके विषय में शुक्ल जी का अभिमत है कि हो सकता है वे कुछ दिन तक ज्योतिर्मठ के ब्रह्मचारी रहे हों और वहीं वेदान्त का अध्ययन किया हो और बाद में श्रीरामानुजाचार्य जी के सिद्धान्तों की ओर आकृष्ट होकर उसे ही अपना लिया हो।

दूसरी ओर शुक्ल जी ने ऐसी भी प्रसिद्धि का उल्लेख किया है जिसके अनुसार उन्होंने १२ वर्ष तक गिरिनार पर्वत या आबू पर्वत पर योग साधना की लेकिन 'श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर' और 'श्रीरामार्चनपद्धति' में जो मार्ग हैं वह विशुद्ध वैष्णवभक्ति का ही मार्ग है। आचार्य शुक्ल ने इस पर कहा है कि उनकी योग साधना विषयक प्रसिद्धि का रहस्य खोला जाना भी आवश्यक है।

भक्तिकाल में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी के १२ शिष्य बताये गये हैं। वे हैं अनन्तानन्द, सुखानन्द, सुरसुरानन्द, नरहर्यानन्द, भावानन्द, पीपा, कबीर, सेन, धना, रैदास, पद्मावती और सुरसरि। हमारे अपने समय में प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी ने आचार्य रामानन्द जी की शिष्य परम्परा पर विशेष रूप से कार्य किया है जिस पर और अधिक कार्य किये जाने की आवश्यकता है। जगद्गुरु रामानन्दाचार्य ने सम्प्रदाय की गंभीर दार्शनिक पृष्ठभूमि को स्थापित करते हुए चिदचित् विशिष्ट परतत्त्व श्रीराम की भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। अपने ग्रंथ वैष्णवमताब्जभास्कर नें उन्होंने स्वशिष्य सुरसुरानन्द जी के नौ प्रश्नों का विस्तृत उत्तर दिया है। यह उत्तर श्रीरामतारक मंत्र की व्याख्या, तत्त्वोपदेश, अहिंसा के महत्त्व, प्रपत्तिमार्ग, वैष्णवों की दिनचर्या और षोडषोपचार पूजन का निरूपण करता है। उन्होंने अर्चावतार के चार भेद स्वीकार किये– स्वयंव्यक्त, दैव, सैद्ध और मानुष। जातिभेद क्रियाकल्पादि की अपेक्षा न करने वाले भगवान् की शरण में जाने का उन्होंने उपदेश दिया–

01.pmd 40 5/25/2015, 3:44 PM

परां सिद्धिमकिंचनो जनो द्विजातिरिच्छञ्छरणं हरिम् व्रजेत ।
परं दयालुं स्वगुणानपेक्षितक्रियाकलापादिकजातिभेदम् ।।

शरणागत भक्त को गुरु एवं परमभक्त की कृपा प्राप्त होनी चाहिए। इसीलिए गुरु की कृपा के साथ-साथ भगवान् श्रीराम के परम भक्त श्री हनुमानजी की कृपा प्राप्त करने के लिए आचार्यप्रवर ने हनुमान जी की स्तुति की जिसका उल्लेख किया जा चुका है।

श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर में उपरिलिखित जिन प्रश्नों का उत्तर दिया गया है उसे सूत्र रूप में एक ही श्लोक में कह दिया गया है–

तत्त्वं किं? किञ्च जाप्यंरघुपतिशरणैर्वैष्णवैर्ध्यानमिष्टम्,
मुक्तेः किं साधनं सत्सुमतिमतिमतो धर्म एकोऽस्ति कश्च ।
धर्माणां वैष्णवास्ते गुरवरकतिधा लक्षणं किञ्च तेषाम्
कालक्षेपः किमाप्यं कथमुरुशुभदं कुत्र कार्य्यो निवासः ।।

इस श्लोक में सार रूप में पूछा गया कि तत्त्व क्या है? भगवान श्रीराम की शरणागति स्वीकार करने वाले वैष्णवों को क्या जपना चाहिए? उनके लिए इष्ट ध्यान क्या है? उनके मुक्ति का उत्तम साधन क्या है? अनेक धर्मों में प्रशस्त और विद्वानों की बुद्धि से परिगृहीत एक धर्म कौन सा है? उसके कितने भेद हैं, उनका लक्षण क्या है? उन वैष्णवभक्तों को कालक्षेप कैसे करना चाहिए? मोक्षप्रद किस साधन की प्राप्ति उन्हें करनी चाहिए और उनको कहाँ निवास करना चाहिए? श्री वैष्णवमताब्जभास्कर इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए निरूपण करता है और कहता है कि एक ही सूक्ष्म चिदचित्विशिष्ट ब्रह्मतत्त्व, अचित्, चित् और ईश्वर भेद से त्रिविध हो जाता है। अचित् प्रकृति नित्य, अज्ञ, अचेतन, परम कारणभूत और अविकृत एवं विश्वयोनि है। वह नानावर्णात्मिका, अजा, त्रिगुणात्मिका सत्त्व, रज और तमस का आश्रय, अव्यक्त शब्द से वाच्य, स्वतंत्र व्यापारशून्य, परार्थ अर्थात् भगवदधीन रहने वाली तथा महत् तत्त्व और अहंकार आदि को उत्पन्न करने वाली है। जीव नित्य है, उसका आदि और अन्त नहीं है, वह चेतन है, सतत ईश्वराधीन है, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, शरीर से बद्ध और मुक्त आदि भेदों से अनेक प्रकार वाला, भगवान् की व्याप्ति से युक्त शरीर में रहने वाला, स्वकर्मानुसार फल भोगने वाला है और भगवान् उसके सदा सहायक हैं। मैं कर्त्ता और भोक्ता हूँ ऐसा अभिमान करने वाला जीव तत्त्वजिज्ञासुओं के जानने योग्य है।

विश्व जिससे उत्पन्न होता है, जिससे रक्षित होता है और जिसमें सब

01.pmd 41 5/25/2015, 3:44 PM

कुछ लीन हो जाता है, जिनके तेज से सूर्य और चन्द्र आदि निरन्तर प्रकाशित होते हैं, जिनके भय से वायु बहता है, पृथ्वी नीचे सुतल में नहीं चली जाती, जो ज्ञाता है, साक्षी है, कूटस्थ है, एक है, अनन्त शुभगुणों से समन्वित है, अज्ञेय है और विश्व का धारण करने वाला है, वही ईश्वर है। यह ईश्वर ही देवताओं और विद्वानों के आराध्य हैं और शरणागत की रक्षा करते हैं। योगीजन उनके चरणकमल को प्राप्त करते हैं। समस्त वेदों के द्वारा उनका माहात्म्य वर्णित है। वे नित्य हैं, सर्वशक्तिमान् हैं, निष्पाप हैं, अजर हैं, वाणी और मन के अगोचर हैं और भगवती सीतासहित वे ही श्रीराम ईश्वर हैं।

द्वितीय प्रश्न के उत्तर में श्रीराम मन्त्र का रहस्य वर्णित करते हुए उसके स्वरूप को समझाया गया है। इस राममन्त्र के स्वरूप का विस्तृत विवेचन श्री वैष्णवमताब्जभास्कर सूत्रात्मक पद्धति से ही कर देता है। यह मन्त्र ही तारक मन्त्र है और भगवान् शिव इसका स्वयं उपदेश करते हैं। तारक मन्त्र के साथ-साथ रामद्वय मन्त्र के भी अर्थ का निरूपण श्री वैष्णवमताब्जभास्कर में किया गया है। इसी प्रकार वैष्णवमताब्जभास्कर में चरममन्त्र निरूपण में साथ-साथ ध्यान के स्वरूप का निरूपण किया गया है और तैलधारावत् अविच्छिन्न चिन्तन को ही ध्यान बताया गया है जिसमें भगवती सीता और लक्ष्मणसहित द्विभुज भगवान् राम के चिन्तन का विधान किया गया है। चतुर्थ प्रश्न के उत्तर में मुक्ति के साधन पर विचार किया गया है और मुक्ति के साधन स्वरूप मार्ग का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसमें वैष्णवों के आचार और व्रतादि का विस्तृत विवरण है। पंचम प्रश्न के उत्तर में वैष्णव धर्म के मूल तत्त्व का कथन करते हुए अहिंसा का तथा अर्चावतारादि का विवेचन है। षष्ठ प्रश्न के उत्तर में वैष्णवों के भेद का निरूपण करते हुए प्रपत्ति-मार्ग के अनुसार भक्तों के स्वरूप एवं भेदों का विवेचन किया गया है तथा मुक्तों के भेद का निरूपण किया है और भागवत और केवल भेद से आत्मानुभूति परायण और दुःखभावनैकपरायण भक्तों का भी निरूपण किया गया है। सप्तम प्रश्न के उत्तर में वैष्णव के लक्षण का निरूपण है और अष्टम प्रश्न के निरूपण में वैष्णवों के निवासयोग्य स्थान का विवरण दिया गया है। नवम प्रश्न के उत्तर में वैष्णवों को किस प्रकार कालयापन करना चाहिए, इसको बताया गया है और अन्त में वैष्णवमताब्जभास्कर का समापन प्राप्य परतत्त्व के निरूपण से होता है।

जगद्गुरु आचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज आचार्य जगद्गुरु

01.pmd 42 5/25/2015, 3:44 PM

रामानन्दाचार्य जी महाराज की परम्परा में आज स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज विद्यमान हैं। संप्रदाय के रक्षण, पोषण और प्रसार में उनकी बहुत बड़ी भूमिका आज दिखाई पड़ती है। उन्होंने विधिवत् काशी में शास्त्रों का अध्ययन करते हुए सतत साधना में लीन रहकर आचार्यपद को प्राप्त किया है। आचार्य बदरीनाथ शुक्ल जैसे महान नैयायिक से उन्हें न्याय की शिक्षा मिली है। उनके व्यक्तित्व में वैदुष्य के साथ-साथ भक्तों के ऊपर उनकी अपार कृपा बनी रहती है और जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी की परंपरा में ही वे सनातन धर्म की रक्षा में निरन्तर सन्नद्ध और समकालीन हिन्दू समाज के कल्याण के लिए अत्यन्त श्रेयस्कर मार्ग का विस्तार करने में जागरूक रहते हैं। सम्पूर्ण भारत में उनकी अनुग्रह यात्रा चलती रहती है किन्तु काशी के पंचगंगा घाट स्थित श्रीमठ में उनका निरन्तर स्थायीरूप से रहने का प्रसाद इस काशी नगरी को प्राप्त है।

काशी नगरी के धार्मिक परिवेश और संस्कृति में उनकी उपस्थिति का अनुभव निरन्तर होता रहता है। हाल के वर्षों में उन्होंने शारद महोत्सव के अवसर पर पंचगंगा घाट पर संगीत के विराट् कार्यक्रम का आयोजन किया है जिससे काशी की संस्कृति को और भारतीय संस्कृति को पोषण मिल रहा है। सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सचेत धर्माचार्यों के मध्य वे अग्रणी धर्माचार्य हैं जो सामाजिक सद्भाव की दिशा में निरन्तर सक्रिय रहते हैं।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य की परंपरा में श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज का महत्त्व हमारे समकालीन परिदृश्य में इसलिए और भी बढ़ जाता है कि जब हम देखते हैं कि पिछले दो सौ वर्षों में उपनिवेशवादी शक्तियों में हिन्दू समाज के विघटन के लिए भयंकर षडयन्त्र किये हैं और इस समाज को जातिभेद में बाँटने के उपक्रम को शिखर पर पहुँचा दिया। ऐसी परिस्थिति में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी के संदेश को दूर-दूर प्रसारित करते हुए न केवल उपासना के मार्ग को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है, बल्कि दलितों और नारीवर्ग को विशेष रूप से उनका गौरव प्रदान करने के लिए आचार्य जगद्गुरु रामनरेशाचार्य जी के उपदेशों के प्रसार और उस पर आचरण की आवश्यकता है। हमें दृढ़ विश्वास है कि भगवती सीता और भगवान् राम के अनुग्रह से हमें उनका सतत सान्निध्य प्राप्त होता रहेगा और वे सनातन धर्म की प्रतिष्ठा की अपने उद्देश्य में निरन्तर आगे बढ़ते चले जायेंगे।

●

01.pmd 43 5/25/2015, 3:44 PM

लोकनायक श्रीरामनरेशाचार्य

बलदेव वंशी

प्रत्येक युग में आर्त्त मानवता के त्राण हेतु कृष्ण अवतार लेते हैं। 'संभवामि युगे युगे' के कथनानुसार भारतीय चिंतन धारा इस तथ्य को सिद्ध-पुष्ट करती आयी है। कृष्ण के युग द्वापर से ही नहीं आदि-अनादि काल से हम इसे चरितार्थ पाते हैं। अत: वेद काल से ही यह परम्परा ऋषि-मुनियों के लोकनायक हो कर उपस्थित-अवतरित होने के रूप में चरितार्थ रही हैं। वैष्णव परम्परा में राम, कृष्ण हुए, तो बाद में हम बुद्ध-महावीर को गोरखनाथ को पाते हैं।

इसी लोक परम्परा की अगली कड़ी के रूप में हम स्वामी रामानंद जी को पाते हैं, जिन्होंने दलित, उत्पीड़ित वर्ग को तथा समूचे नारी वर्ग को अपने स्नेह, सम्मान के समान आसन पर बैठाया और आत्मिक-सामाजिक न्याय की गरिमा से मंडित किया। अपने समय के अति क्रांतिकारी निर्णय एवं संकल्प को कार्यान्वित करने के लिए दिशा-दिशा एवं वर्ग-वर्ग के, भिन्न कार्यों से सम्बद्ध आस्तिकों को अपना शिष्य बनाया। कबीर, रविदास, धन्ना, सेन आदि पुरुष संतों के साथ दो नारी संतों को हम रामानंद जी के शिष्य-प्रकाश वृक्ष में सुशोभित पाते हैं।

वर्तमान में एक भव्य श्रीराम मंदिर के लोकार्पण के समय जगद्गुरु रामानंदाचार्य पद प्रतिष्ठित आचार्य जी को हम दलित-उत्पीड़ितों के साथ हुए अन्तिम-अन्याय के लिए प्रायश्चित करते हुए पाते हैं तथा भव्य राम मंदिर के चारों द्वार खोलने के आदेश देते हुए देखते हैं। यह नव मानवता के धरती पर विकसित होने के चरण के रूप में स्थापित होने का युग है जो उन्हें लोक नायक प्रतिष्ठापित करता है।

अत: इसे हमने सृष्टि के आरंभ की घटना से उठाया है। फिर सतयुग, त्रेता, द्वापर के संदर्भ-संकेतों को स्पर्श करते स्वामी रामानंद के युग तक आये हैं। प्रत्येक युग में राम ने लोक नायक की भूमिका निभायी है। त्रेता के राम की भाँति स्वामी रामानंद की लोकोन्मुखी भूमिका है जो सम्पूर्ण समाज

भारतीय संत वाङ्मय के विद्वान, फरीदाबाद (हरियाणा)

01.pmd 44 5/25/2015, 3:44 PM

को उसकी समग्रता में जाग्रत कर संगठित करती है।

इन्हीं रामानंद की गद्दी पर विराज रहे स्वामी रामनरेशाचार्य की भूमिका रूप में हम स्वामी रामानंद जी का अगला और वर्तमान चरण देखते हैं, जो दलित उत्थान और नारी स्वाभिमान के नये आदर्शों को ही स्थापित नहीं करते; प्रत्युत उच्च वर्गों की ओर से निम्न वर्गों के प्रति जाने-अनजाने किये गये अन्याय के प्रति क्षमा याचना भी करते हैं तथा भारतीय समाज का एक भव्य भवन, महामानवीय एकत्व आत्मीय स्वरूप भी खड़ा करते हैं।

महामानव मंदिर

(महा मानव मंदिर बनकर तैयार हो गया है। रामनवमी का दिन है। इस मंदिर को लोक को अर्पित करने, राम के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा का मुहूर्त निकट आ रहा है। आचार्य रामनरेशाचार्य के मन में तूफान उठ रहा है। विचारों का तूफान। संस्कारों की टकराहटों का तूफान। भावनाओं का तूफान। सूर्योदय भी होने वाला है। आचार्य रातभर सो नहीं सके। झंझावातों में घिरे रहे। धीरे-धीरे उनके चेहरे की रेखाएँ दृढ़ होने लगीं। आँखों में एक अपूर्व चमक जगी जो आलोक में बदलती गयी। मानो वह कोई बड़ा, अपूर्व महान निर्णय लेने वाले हैं और उनकी दृष्टि युग-युगों के पार देखती हुई कलियुग से द्वापर, त्रेता, तक फैलती गई है। सृष्टि-आरंभ के निरभ्र, निर्धूम आकाश की ब्रह्मवेला में पहुँच कर थक गयी है। अब आचार्यश्री के चेहरे पर हल्की-सी स्मिति रेखा उभर आयी है। सारा तनाव जाता रहा। लगता है सारे तूफान धीरे-धीरे सीमित हो रहे हैं। झंझावात थम रहे हैं। मानों कोई बड़ा स्पष्ट निर्णय ले लिया गया है। आंतरिक वैचारिक द्वन्द्व,तेज झंझावातों की संगीत-ध्वनियाँ भी अब शांत, संतुलित, मधुर-मदिर ध्वनियों में परिवर्तित हो गयी हैं।

महामानव मंदिर के द्वार पर, जो पूर्व दिशा में खुलता है, लोगों का महा जमाव भी हजारों की संख्या में लहरें ले रहा है। आज महा मानव मंदिर में प्रवेश का दिन है। युगों-युगों के बने अवरोध टूटेंगे। सबको ही उनके राम के, महामानव के दर्शन होने हैं। सब जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, धर्म के लोगों को निर्धन, धनी, दानी व कंगाल को समान रूप से आज राम की गोद में बैठने का अधिकार मिलने वाला है।

गयी रात। गहरे ऊहापोह में पड़े रहे आचार्य जी की मंदिर का एक ही द्वार खोला जाए और वह भी सवर्णों के लिए ही या सभी द्वार सबके लिए, सर्वजन के लिए। अब इस द्वन्द्व और संघर्ष से बाहर निकल चुके

हैं। मंदिर में प्रात:कालीन देव-जागरण की ध्वनियाँ, घंटियाँ-घड़ियाल बजते रहे हैं, तभी आचार्य श्री अपने कक्ष से बाहर निकले। ऊपर की ओर आकाश को निहारा। फिर सधे कदमों से सीढ़ियाँ चढ़ते हुए प्रथम तल पर पहुँचे ही थे कि द्वार पर एकत्रित भक्तजनों ने उन्हें देखते ही, जय श्रीराम के जयकारों से आकाश गूँजा दिया। आचार्यश्री कुछ क्षण एकत्रित जन समुदाय को देखते रहे। फिर स्वयं भी–

आचार्य श्री– (पूरे ऊँचे स्वर में) जय सियाराम (का उद्घोष करते हैं।)

जन समुदाय– (उत्तर में और भी जोश में) (जय श्री राम! जय श्री राम! जय श्री आचार्य जी! जय हो! जय हो!

आचार्य श्री– महा मानव मंदिर के सभी द्वार खोल दो। (इतना सुनते ही जन समुदाय तुमुल नाद करते हुए जय श्रीराम! जय श्री आचार्य! कहते हुए भीतर की ओर दौड़ कर प्रवेश करता है। मंदिर की घंटियाँ, घड़ियाल, शंखनाद ऊँचे ध्वनि में बजने लगते हैं। लोगों की भीड़ बड़े जोश में 'जय सिया राम' और 'जय श्री आचार्य' के नारे लगा रही है। उन्हें आचार्यश्री के साथ खड़े प्रबंधक और संत शांत रहने को कहते हैं।)

प्रबंधक– शांत हो जाओ, भाईयो। आचार्य श्री को सुनें।

संत अनंतानंद– शांत हो जाएँ। शांत हो जाएँ। (थोड़ी देर बाद धीरे-धीरे लोग शांत हो जाते हैं)

आचार्य श्री– (भक्तों, यह दिन धरती पर पुण्य भूमि भारत की और सभी भारतजनों की विजय का दिन, विजय उत्सव है। जिस मंदिर में आप खड़े हैं इसका नाम ही मानव मंदिर है। धरती पर निवास करने वाले सभी देशों, धर्मों, संप्रदायों के लोगों का यह मंदिर है। आज भारत में हिन्दुओं के इस मंदिर के द्वार सब मानवों के लिए खुल गए हैं। आज से मानवता का इतिहास पुन: एक करवट ले रहा है। हिन्दू धर्म करवट ले रहा है। हिन्दू धर्म जो वास्तव में एक विशाल मानव धर्म है, उसने सभी के लिए अपनी बाहें फैला दी हैं। अब से पुन: एक महामानव-युग का प्रारंभ होता है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन,बौद्ध, पारसी, सभी के लिए अपना प्यार-उपहार बाँटने के लिए हिन्दू धर्म ने अपने हृदय एवं बाहें फैला दी हैं। राम केवल घट-घट वासी हिन्दुओं के नहीं, सभी के हैं। सबके लिए हैं।

सामूहिक–(इतना सुनते ही) पुन: जय-जयकार होने लगती है।

जयकारा– जय सियाराम, जय आचार्य श्री।

01.pmd 46 5/25/2015, 3:44 PM

प्रबंधक– (उन्हें पुनः शांत रहने को कहते हैं)– शांत! शांत! भाईयो। अभी आचार्यश्री कुछ और महत्वपूर्ण घोषणाएँ करने वाले हैं। (भीड़ शांत होने पर आचार्य श्री पुनः)–

आचार्यश्री– (चेहरे पर उभर आये पसीने को पोंछने के बाद भक्तों! प्रेमियों! इस महा मानव मंदिर में खड़े हुए हम सब का यह धर्म बन जाता है कि हम संकल्प लें और विश्वभर के सभी मानवों तक यह संदेश पहुँचायें कि हम सच्चे मानव ही नहीं महा मानव बनकर दिखायेंगे। अपने आज तक के सारे भेदभाव, शत्रुताभाव भुलाकर एक ईश्वर की, एक अल्लाह, एक गॉड की संतान बनकर सबको समान, सबको अपना मान-सम्मान से गले लगाएँगे। (पुनः पुनः जयकारों की गूँज सुनाई देती है– जय सियाराम, जय आचार्य श्री... किन्तु तुरन्त ही स्वयं शांत हो जाती है। आचार्य श्री जयघोष थमने की प्रतीक्षा में कुछ क्षण रुक कर, पुनः)

आचार्यश्री– एक और अंतिम बात मुझे विराट् मानव समाज से यह कहनी है कि सब जीवों में राम का निवास हैं। हिन्दू मानवों में तो बोलते हँसते गाते हुए राम के दर्शन करते हैं, ऐसा मानते हुए उनसे अन्य बंधुओं के प्रति दलितों, आदिवासियों, धर्मेतर लोगों के प्रति किन्हीं भूलों, भुलावों, भ्रमों के कारण यदि कोई अत्याचार, अन्याय हुए हों तो हम खुले सच्चे और राममय मन से उनसे क्षमा माँगते हैं। (इतना सुनते ही भीड़ में पुनः अपूर्व उत्तेजना व्याप जाती है। अनेक लोगों की आँखों से अविरल अश्रुधाराएँ बहने लगती हैं। जय-जय तुमुलनाद पुनः आरंभ हो जाता है। जय सियाराम! जय आचार्य श्री के साथ कुछ लोग एक दूसरे से बातें करते हुए)

लोग– ऐसा तो कभी किसी महात्मा ने नहीं कहा!

एक स्वर– अरे क्षमा याचना कर दी!

दूसरा स्वर– अरे ऐसी महानता!

तीसरा स्वर– ऐसी उदारता!

चौथा स्वर– हमारे तो सारे घाव भर गए!

पाँचवाँ स्वर– आज तो सचमुच महामानव के दर्शन हो गए! (साथ ही साथ 'जय सियाराम', 'जय आचार्य श्री' का घोष)

आज मैं चारों दिशाओं में युवा वाहिनियों को रवाना करता हूँ कि सोये हुए को जगाएँ। जागे हुए को खड़ा करें और खड़ा हो गये लोगों को देश की, समाज की समानता, एकता, स्वतंत्रता की दिशा में चलने को प्रेरित

01.pmd 47 5/25/2015, 3:44 PM

करें। (तभी युवकों की तीन टोलियाँ हाथों में केसरिया रंग का ध्वज लिए गीत गाती हुई मंच पर एक परिक्रमा करती हुई सामने की ओर मंच से नीचे उतर कर जनता में विलीन हो जाती हैं। चौथी टोली मंच पर गाती हुई परिक्रमा करती रहती है। इतने में पीछे की ओर पर्दा गिरता है और साथ ही भजन के बोल उभरते हैं।

सामूहिक गीत– (गुरुनानक देव द्वारा रचा गया शब्द)

ईश्वर अल्ला एक उपाया ईश्वर के सब बंदे
एक नीर ते सब जग उपजिया कौन भले, कौन मंदे।...

(इसी गीत का अंत होने से पूर्व ही नाटक मंडली के कलाकार जलते-जगमगाते दीपक लेकर पंक्तिबद्ध होकर मंच पर आते-पंक्ति से जुड़ते जाते हैं। शेष कुछ लोग जले हुए दीपक सभागार में आगे की दो-तीन पंक्तियों में खड़े लोगों को थमाते जाते हैं। तभी गीत समाप्त हो जाता है। इसके साथ ही पूरे सभागार में बत्तियाँ रौशन हो जाती है) गीत गूँजने लगता है–

देश धर्म के नाम आज फिर देनी है कुर्बानी,
गाँव-गाँव कूँचे-कूँचे में गूँजे संतों की बानी।
हिन्दू-मुस्लिम एक हो गए, ब्राह्मण दलित समान,
नारी-पुरुष वेद बाँचते, सबका सकल जहान ।
जागो उठो चलो मिल जुलकर कटें सब कष्ट क्लेश,
आदेश हुआ है सबको अब फिर रामानंद-नरेश।
विश्वभाग्य-विधाता होवे, भारत देश महान,
समता न्याय शांति व्यापे, संतों का संविधान ।

●

01.pmd 48 5/25/2015, 3:44 PM

सन्त मिलन-सम सुख जग नाहीं

विवेकी राय

कहा गया है कि 'सन्तमिलन सम सुख जग नाहीं', सो, ऐसा ही दुर्लभ सुख एक दिन हमें मिल गया और वह भी दिल्ली जैसी महानगरी में। इसे मैंने माना, ईश्वर की महती कृपा मेरे ऊपर रही क्योंकि यह भी कहा गया है 'बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं सन्ता।' मेरे मित्र श्री वीरेन्द्रकुमार राय माध्यम बने। उन्होंने जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज के अखिल भारतीय चातुर्मास महोत्सव की चर्चा की। वह दिल्ली के अशोक विहार-स्थित महाराज अग्रसेन भवन में गत २ जुलाई ०४ ई. से ही चल रहा था। अनायास उक्त चर्चा के साथ कई बातें स्मरण आ गयीं। प्रथम तो यह कि पूज्य महाराजजी के दर्शनों का सौभाग्य चार वर्ष पूर्व अपने गाजीपुर शहर में ही मिल गया था। उस समय जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव (२००० ई.) चल रहा था। इस उत्सव का उत्स श्रीमठ पंचगंगाघाट, काशी था जिसे श्री रामभक्ति-शाखा की लोकचेतना का गोमुख कहकर आख्यायित किया गया है तथा जहाँ से अपनी सुविचारित सुविस्तृत धर्मयात्रा क्रम में परम पूज्य स्वामीजी महाराज का यात्रामार्ग में पड़नेवाले गाजीपुर शहर में पदार्पण हुआ था।

इस स्मरण के साथ, इस यात्रा से जुड़ा एक कार्यक्रम स्मृति में उभरा, परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने गाजीपुर के प्रमुख बुद्धिजीवियों और विद्वानों की एक विचारगोष्ठी आयोजित कर धर्म-चर्चा के साथ ही शहर के पाँच विशिष्टजनों को रामनामी दुपट्टे से आशीर्वादित करते हुए उन्हें श्रीमठ की ओर से संकल्पित सप्तशताब्दी महोत्सव की स्मृति में प्रशक्ति-पत्र प्रदान किया। इन अनुगृहीत लोगों में एक मैं भी था। मैं अपने को प्रशस्तियोग्य बुद्धिजीवी या विद्वान् नहीं मानता। हाँ, साहित्य की सेवा में अवश्य लगा रहता हूँ। परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने मुझ साहित्यसेवी को जो सम्मान दिया, उसकी किन शब्दों में बड़ाई की जाय? 'बड़े स्नेह लघुन पर करहीं।' सगुण-

---

कथाकार, बड़ी बाग लंका, गाजीपुर, (उ.प्र.)

01.pmd 49 5/25/2015, 3:44 PM

निर्गुण रामभक्ति परम्परा के इस मूल आचार्यपीठ श्रीमठ (पंचगंगा, काशी) की यह परम्परा ध्यानाकर्षक है। समय-समय पर विभिन्न देशव्यापी कार्यक्रमों के विशेष आयोजनों में विभिन्न परम्परित धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त विद्वज्जनों की संगोष्ठी, उन्हें पुरस्कृत-सम्मानित करने के आयोजन और उनके अभिनन्दन आदि जैसे कार्यक्रम उक्त आचार्यपीठ की ओर से परमपूज्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में बराबर सम्पन्न होते रहते हैं। सो, उस धर्मयात्रा में गाजीपुर में वह एक धर्मचर्या-संगोष्ठी और सम्मानसभा आयोजित हो गयी। अद्‌भुत स्नेह मिला पूज्य महाराज जी का।

फिर वैसा ही परिदृश्य चार वर्षों बाद दिल्ली में अत्यन्त आह्लादकारी, विस्मयकारी रूप में उपस्थित हो गया। जैसा कि ऊपर लिख चुका हूँ, दिल्लीवाले दिन चातुर्मास महोत्सव की सूचना श्री वीरेन्द्र कुमार राय से मिली तो प्रसन्नता के साथ वहाँ पहुँचने और पूज्य महाराज जी के दर्शनों की योजना चटपट बन गयी और अगले दिन ८ अगस्त रविवार को हम लोग पहुँच गये। वीरेन्द्र जी के अतिरिक्त मेरे मार्गप्रदर्शक हाई कोर्ट के एक वकील श्री एल.बी.राय और सहारा इंडिया से जुड़े एक पत्रकार श्री कमलेश कुमार राय भी थे। महाराजा अग्रसेन भवन अभी कुछ दूर था कि अशोक विहार के उन स्थलों पर जहाँ से सड़क मुड़ती थी, दिव्य चातुर्मास-महोत्सव के बड़े-बड़े भव्य बैनर दिखायी पड़ने लगे। बैनर के नीचे से गुजरते समय गाड़ी में बैठे-बैठे दिव्यता की एक स्फूर्तिदायी अज्ञात अनुभूति हुई। संभवत: यह इसलिये हुई कि पूज्य महाराज के प्रति हार्दिक श्रद्धाभाव और भावात्मक लगाव था। तभी एक अटपटा विचार मन में आया, क्या साथ बैठे मित्रों के मन में भी ऐसी कोई दिव्यता की अनुभूति हो रही होगी? फिर समाधान भी मन ने ही कर दिया। यदि वैसा न होता तो दिल्ली जैसे अति व्यस्त नगर के ये विशिष्ट जन अपना आधा दिन का समय क्यों इस सन्तदर्शन कार्य के लिए व्यय करते? सभी तो आते नहीं। जिन के भीतर भाव है वही तो आते हैं।

मुझे एक घटना याद आयी। वृन्दावन के निधुवन में अपने एक मित्र के साथ घूम रहा था। बहुत पवित्रता और दिव्यता का रोमांचक अनुभव हो रहा था। हम लोगों से कुछ आगे-आगे श्वेत वस्त्र में एक बहुत संभ्रान्त महिला चल रही थी। मैंने अपने मित्र से कहा 'सुनते हैं कि अब भी इस वन में कभी-कभी विशेष कर रात में नित्य एक बार भगवान् श्रीकृष्ण की वंशीधुन बज उठती है। क्या ही अच्छा होता कि हम लोगों को भी सुनायी पड़ जाती। इस पर मेरे मित्र ने कहा 'वह सबको सुनायी नहीं पड़ती'। हम लोगों की

01.pmd 50 5/25/2015, 3:44 PM

इस बातचीत ने उस देवी की चाल को कुछ धीमा कर दिया था। चलते-चलते ही उन्होंने कहा 'हाँ ठीक कह रहे हैं। वह वंशीधुन सबको नहीं सुनायी पड़ती। जब भगवान् श्रीकृष्ण थे तब भी वह सुनायी सिर्फ गोपियों को ही पड़ती थी, क्योंकि उनके भीतर भाव था।'

इस प्रकार भावसंसार की दिव्यता में डूबे हम लोग गन्तव्य तक पहुँचे। पूरे परिवेश में आध्यात्मिक ऊर्जा व्याप्त अनुभूत हुई। जहाँ नित्य पूजन-अर्चन, स्तोत्रपाठ, हवन, तर्पण, प्रवचन, स्वाध्याय, मंगलाशीर्वचन, विविध महोत्सव, भजन-कीर्तन और यज्ञ आदि कार्य सविधि सम्पन्न हो रहे हैं, वहाँ की हवा ही कुछ और है, पूरी तरह मन को बदल देनेवाली। कहाँ याद रहता है ऐसे स्थानों पर पहुँचकर संसार का प्रपंच? जो मन घर पर एकान्त साधना में खाली नहीं हो पाता वह ऐसे ऊर्जस्वित स्थलों पर पहुँचकर अनायास खाली हो जाता है। यह अपूर्व लाभ हमें मिल रहा था परन्तु हम लोगों को अपने खाली मन में प्रतिष्ठित पूज्य स्वामीजी महाराज का दर्शन करना तात्कालिक अभीष्ट था।

एक सक्षम अधिकारी सेवक भक्त ने कहा दर्शनों के पूर्व आप लोग प्रसाद ग्रहण कर लें। निर्देश उचित था। नीचे श्रद्धालु भक्तजन और साधुसन्तों के प्रसाद-ग्रहण का कार्यक्रम चल रहा था। साधुजन प्रसाद पानेवाले और साधुजन ही प्रसाद वितरित करनेवाले। पंक्ति में बैठे हम लोग भी साधु हो गये। वास्तव में वहाँ कोई असाधु नहीं था। रह ही नहीं सकता कोई असाधु वहाँ पहुँचकर। दिव्य सत्संग की व्याप्त सूक्ष्म तरंगों की छुअन से कोई कैसे बच सकता है? तन तृप्त, मन तृप्त। महाराजा अग्रसेन भवन-परिसर में इस दिव्य चातुर्मास महोत्सव-काल में प्रकटी नयी आध्यात्मिक दिल्ली को हार्दिक साधुवाद!

भवन के ऊपरी तल पर एक शान्त कक्ष में परम पूज्य स्वामी जी महाराज के दर्शन हुए। आनन्द आ गया। सर्वप्रथम उन्होंने प्रसाद ग्रहण करने के विषय में पूछा जो सम्पन्न हो चुका था। हाँ, उन्होंने जिस फूल झड़ती, मुस्कान, सुवासित और स्नेहसुधा-सिक्त वाणी में उक्त जिज्ञासा की थी उसने प्रसाद की तृप्ति में और वृद्धि कर दी। मगर इस वृद्धि की सीमा कहाँ थी? ज्ञानभक्ति-विग्रह स्वरूप सन्त के दर्शनों से तृप्ति कहाँ होती है? उनके सान्निध्य के सम्बन्ध में और अधिक समय की चाह बनी ही रह जाती है। कितने सौभाग्यशाली हैं विभिन्न प्रान्तों से आये वे श्रद्धालु भक्तजन जो संसार को अपने पीछे छोड़ दो मास के लिए इस महोत्सव में आये हैं और महाराजा अग्रसेन भवन में उतरे इस मुक्तक्षेत्र में अपूर्व स्वर्गसुख लाभ के भागीदार

01.pmd 51 5/25/2015, 3:44 PM

हो रहे हैं। हम संसारी लोगों के पीछे यह एक विकट दुर्भाग्य लगा रहता है कि ऐसे अवसर मिलते भी हैं तो 'छन बन मन, छन सदन सुहाहीं' वाली मन:स्थिति बाधक बन जाती है। मगर इतना भी क्या कम था? 'एक घड़ी आधो घड़ी...।' थोड़े समय में ही भरपूर सत्संगसुख प्राप्त हो गया था।

पूज्य स्वामी जी महाराज को नीचे सुसज्जित विशाल कक्ष में नियमित प्रवचनकार्य सम्पन्न करने के लिए जाना था और हम लोगों को भी शीघ्र वापस होना था। वकील साहब के मुअक्किल उनके चैम्बर में प्रतीक्षा कर रहे थे और ऐसे ही हम सब लोग अपनी-अपनी समयसीमा में बँधे थे। असीम का मुक्त आनन्द यहाँ मात्र एक डेढ़ घंटे तक ही उठा सके थे। यह समय कितनी शीघ्रता से बीत गया, पता नहीं चला। इस बीच परमपूज्य स्वामी जी महाराज ने सबके परिचय के साथ कुशलक्षेम पूछ लिया। उनकी स्मरणशक्ति की असाधारणता तब प्रगट हुई जब उन्होंने वीरेन्द्रकुमार राय को देखते ही पहचान लिया– 'टेलीफोन निगमवाले वीरेन्द्र जी।' पिछळी बार क्षणभर का ही चलता फिरता परिचय था। चकित थे वीरेन्द्र जी। कृपाभाव परम पूज्य स्वामी जी महाराज का। वकील साहब और पत्रकार महोदय के साथ चर्चा हुई। कुछ योजनाओं और आगामी कार्यक्रमों की बातें उठीं। हर चर्चा और हर बात में लोकोपयोगी विधायक तत्त्व निहित होता था। कोई सीधे उपदेश न होकर भी आपका प्रत्येक शब्द उपदेश था। आपके सान्निध्य में बीता प्रत्येक क्षण मन के लिए कल्याणकारी प्रसाद था। इस अतिरिक्त समय में लाभान्वित होने के लिए कुछ और विशिष्ट बुद्धिजीवी भक्त वहाँ आ गये थे। अहोभाग्य सबके मुखमंडल पर विराजमान था। अन्त में अपने हाथों हम लोगों को मीठे-मीठे सेव का प्रसाद देकर परमपूज्य स्वामी जी महाराज ने अनुगृहीत किया और मुझे चार वर्ष पूर्ववाली संकोच की स्थिति में खड़ा कर दिया।

उन्होंने पहले तो मंत्रोच्चार के बीच दिव्य रामनामी दुपट्टा ओढ़ाकर अनुगृहीत किया। उसके बाद पुन: कृपाभाव उठा कि एक भव्य शाल मँगाकर उसके द्वारा आशीर्वादित कर कृतकृत्य कर दिया। इसे क्या समझूँ? नाम तो विवेकी है परन्तु उस रामनामी के लायक विवेक कहाँ है? विरति कहाँ है? शाल-सज्जित करके बिना कहे ही जैसे कहा, जाओ संसार में कुछ और साधना करो, लक्ष्य न भूले।

चरणों में शीश झुकाकर हम लोग वहाँ से चले तो लगा तन भर चल रहा है, मन वहीं रह गया है।

●

01.pmd 52 5/25/2015, 3:44 PM

एक शिखा शीतल

देवेन्द्र दीपक

वामपंथी विचारधारा ने समता का प्रश्न उठाया। वह समता हठात् और आरोपित थी। इसीलिए वह समता विदग्ध समता थी। भक्त शिरोमणि कबीरदास की वाणी में एक शब्द आया **'सीतल समता'** और रबिदास की वाणी में शब्द आया **'सुखदायी समता'**। ब्रह्म भाव से, अद्वैत विचार से अंकुरित समता शीतल समता है, शीतल है तो सुखदायी। सुखी रहकर सुख देना। सुख देने में सुखी होना ऐसी शीतल समता दु:ख हरनी है।

शिखा में अपना ताप रहता है। उसमें प्रकाश होता है। लेकिन यदि शिखा का ताप यदि शीतलता दें, तो ऐसी शिखा शीतल ही होती है। यही कदाचित् विरुद्धों का सामंजस्य है। भारतीय चिति विरुद्धों के सामंजस्य में सिद्धहस्त है।

मेरे निकट **आचार्यश्री एक शीतल शिखा हैं, अग्नि शिखा भी, दीपशिखा भी। ताप अपने तांई, प्रकाश सबके लिए; दग्धता अपने तक सीमित, लेकिन शीतलता सबके लिए।** यही आचार्यश्री की विशिष्टता है। आचार्यश्री से मेरा आशय स्वामी रामानंदपीठ पर शोभित आचार्य श्रीरामनरेशाचार्य से है। प्रारम्भ में आचार्य और अन्त में भी आचार्य। आचार्यत्व को सहेजना बड़ा कठिन काम है। **धर्माचार्य को निरन्तर एक अन्तर्यात्रा से गुजरना होता है। वह दो आँखों से देखता है, लेकिन उसे हजारों-लाखों आँखें देखती हैं। उसका कुछ नहीं अप्रकट रहता।**

इस समय जब मैं यह लेख लिख रहा हूँ, मैं और मेरी कलम दोनों पर बड़ा दबाव है। विगत कई सप्ताह से आसाराम बापू और नारायण सांई को लेकर जो देखा-दिखाया जा रहा है, वह बड़ा दु:खद है। पहले भी ऐसे कई कलुष प्रसंग सामने आते रहे हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में कदाचार व्याप्त है। इस व्याप्य में बड़े-बड़े लोग शामिल हैं। आज विडम्बना यह है कि अग्रज

प्रसिद्ध कवि, लेखक और रंगकर्मी, भोपाल (म.प्र.)

01.pmd 53 5/25/2015, 3:44 PM

अग्रणी नहीं रहे, वरिष्ठ वरेण्य नहीं रहे, प्रतिष्ठित प्रतिष्ठ नहीं रहे। शिखरस्थ को शीर्ष की चिंता नहीं। ऐसे में सभी दिशाओं से निराश मनुष्य अन्तिम अभिरक्षा और प्रबोधन के लिए धर्माचार्यों के पास जाता है। वहाँ भी उसे 'छद्म' मिलता है, तो 'पद्म' में उसकी आस्था टूट जाती है। कमलवत पर पानी की बूँद की तरह रहने का परामर्श झूठा लगता है। आपका तप भंग होता है, हमारा मोह भंग होता है।

भंग मोह लेकर मैं कहाँ जाऊँ? किस देहरी पर माथा टेकूँ? सूरज नहीं, तो सूरजमुखी किधर मुँह करे? सूरज नहीं तो कमल कैसे खिले? सचमुच मैं अन्यमनस्क हूँ। किंकर्त्तव्यमूढ़! एक भाव सीधे उभरता है– 'सब' लम्पट!

आचार्य श्री का जनता से कहना है– 'सब' की भाषा में सोचना बंद करो। न स 'सब' कल अच्छे थे, न आज' सब बुरे हैं। अच्छे-बुरे सदा रहते हैं, सब जगह रहते हैं, सब दिन रहते हैं। 'कुछ' ही नहीं, 'बहुत कुछ बिगड़ा है, लेकिन 'सबकुछ' नहीं बिगड़ा है। सब धान बाइस पसेरी वाली कहावत चरितार्थ मत करो। चिंता का विषय यह है कि असद् और अनैतिकता का अनुपात बढ़ रहा है। हम सबकी कोशिश यह होनी चाहिए कि यह अनुपात कम हो।

आचार्य श्री यह भी कहते हैं– आप में विवेक है। खरे खोटे की पहचान आप स्वयं करें। आप हमें अपनी कसौटी पर कसें। हाँ, अपनी कसौटी पर। दूसरे की कसौटी पर कसने के हेतु और प्रयोजन के बदलने की संभावना से कौन इंकार कर सकता है। ध्वन्यार्थ और फलितार्थ कैसे बदल दिए जाते हैं, यह सब जानते हैं।

'हिन्दू समाज में एक कहावत है– पानी पीजै छान के, गुरु कीजै जान के।' पानी छान कर पीओ। गुरु जानकर बनाओ। दीक्षित शिष्यों की संख्या के आधार पर अपने को मान्य कराने वाले धर्माचार्य कहानेवालों की बात मैं नहीं कहता, इतना समझो कि सच्चा धर्माचार्य नित्य अग्नि परीक्षा से गुजरता है।

आचार्य श्री अपने साधु समाज में कहते हैं– भगवे की लाज रखो। भगवा की प्रतिष्ठा हमारे हाथ में है। हमारा तप ही हमारी शक्ति है, हमारे आश्रम का वैभव हमारी ताकत नहीं है। जिस किसी से भगवा चोला सध नहीं पा रहा है, उसे घर वापस लौट जाना चाहिए।'

हरिद्वार समग्र के 'आचार्यमंगलाशासन' में आचार्यश्री ने कई महत्त्वपूर्ण बिन्दु उठाए हैं–

'वैसे तो पूरी दण्डी परम्परा यहाँ नगण्य है। यहाँ तो दण्ड रहित परमहंस

01.pmd 54 5/25/2015, 3:44 PM

संन्यासी-संतों की उपस्थिति जोरदार है।'

–'हरिद्वार की अधिष्ठातृ जगदम्बा मायादेवी कल्याणकामियों की दृष्टि से ओझल हो रही है, क्योंकि धर्म म्यूजियमों का विकास जोरों पर है। यह चिंता का विषय है। शास्त्रीय पाण्डित्य भी अतीव क्षीणकाय है, जबकि यह नगरी शांकरी परम्परा गढ़भूता है। अधिकांश पीठाधिपति भागवत रामायण गाकर ही जीवन समृद्धि एवं मान एकत्रित करने में सम्पृक्त हैं।'

–'धार्मिक संस्थाओं का मूल आध्यात्मिक स्वरूप गौण होता जा रहा है जो चिंता का विषय है। मंदिर की अपेक्षा भक्त निवास प्रबलतया प्रस्तुत हो रहे हैं। सत्संग ध्वनि को भण्डारा गर्जना दबोज रही है। दम्भी संतों का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। अधिकांश राम की अपेक्षा काम प्रधान जीवन के पक्षपाती हो रहे हैं। सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक केन्द्र आश्रमों धर्मशाला ही नहीं होटल का रूप लेते जा रहे हैं। निश्चित रूप से यह अर्थ एक काम का ही बढ़ता स्वरूप है जो अमृत पान से वंचित करते हैं।'

–'सोऽहम् के मुख्य आश्रम में (स्वामी अखण्डानंद के द्वारा प्रवर्तित) में रामकृष्ण, शिव परिक्रमा के आलय में हैं तथा अखण्डानंद एवं सच्चिदानंद गर्भगृह में विद्यमान हैं। सम्पूर्ण परम्परा पर एक परिवार का ही अधिष्ठातृव्य है। यह तो धर्म मर्यादा की महती क्षति है।'

'क्षरण' आज का सच बन गया है। धर्म का क्षेत्र भी इस क्षरण से अछूता नहीं है। आचार्य श्री इस क्षरण से क्षुब्ध हैं। शुभ पक्ष यह है आचार्य श्री इस क्षरण की चश्मपोशी नहीं करते। साथ-साथ निर्भीक होकर गर्हित की ओर संकेत करते हैं। 'तीर्थराज प्रयाग और रामभक्ति का अमृत कलश' (संपादक डॉ. उदयप्रताप सिंह) ग्रन्थ की 'मंगलाकांक्षा में आचार्य श्री का साफगोई देखिए–

'अत्यंत दु:ख की बात है कि सनातन धर्म के विराट् स्वरूप अमृत कलश प्रदायक कुम्भ-मेला का स्वरूप लगातार विकृत एवं धूमिल होता जा रहा है। मेला में सम्प्रभुतासम्पन्न प्रेरणा-स्रोत संत, महंत एवं आचार्यगण ही अमृतकलश के बदले विद्वेश व युद्ध कलश प्राप्त करा देते हैं। उनमें स्वयं भी अमृत पिपासा की तीव्रता दृष्टिगोचर नहीं होती। सम्पूर्ण कल्याणमय व्यवहार दम्भ बादलों से घिरते जा रहे हैं।... कुम्भस्नान जो परम कल्याणप्रद है, उसे शाही स्नान बना दिया गया है। स्नान के धर्म आत्म कल्याण को शाही रूप प्रदान कर पूर्ण अवैदिकत्व तथा मुमुक्षत्व का सम्पादन एवं पूजा की मर्यादा का उल्लंघन है। पूज्य के पास पूजनक्रम में मुमुक्षु को अत्यन्त सादगीपूर्ण

01.pmd 55 5/25/2015, 3:44 PM

एवं विनीत वेश में जाना चाहिए।'

आचार्य श्री स्वामी रामानंद के पीठाधिपति हैं। स्वामी रामानंद के समय भी धार्मिक और सामाजिक जीवन में अनेक विसंगतियाँ थीं। स्वामी रामानंद ने उनका विरोध किया और उसके बीच स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए एक राह बनाई। विसंगतियों से असहमति दर्ज कराना आचार्य का प्रमुख दायित्व है। इसी दायित्व की ओर संकेत करते हुए जयशंकर प्रसाद के चन्द्रगुप्त नाटक में चाणक्य कहता है– 'ब्राह्मण न किसी के राज्य में रहता है और न किसी के अन्न पर पलता है। स्वराज्य में विचरता है और अमृत होकर विचरता है।'

रामानंद सम्प्रदाय में प्राप्त होता है कि– 'जात-पात पूछे नहीं कोई हरि को भजै सो हरि का होई।' यह एक मंत्र है। एक सूत्र है। आचार्य श्री रामानंद सम्प्रदाय के इस आशय को याद ही नहीं रखते, उसे चरितार्थ भी करते हैं। अपने चातुर्मास में एक दिन वह अपने दलित शिष्यों के घर जाते हैं। इस बार उनका चातुर्मास हरिद्वार में था। आचार्य श्री उस क्षेत्र के अस्वच्छ धंधे में लगे सफाई कामगारों को एक दिन अपने चातुर्मास शिविर में बुलाकर भोग कराया। लोग आते गए, प्रसाद पाते रहे। आचार्य श्री स्वयं उनके बीच उपस्थित रहे और कुशल क्षेम पूछते रहे।

दो वर्ष पूर्व उन्होंने संत रविदास जयंती पर स्वामी रामानंद पीठ के तत्त्वावधान में काशी में पराड़कर भवन में एक समारोह आयोजित किया। उस समारोह में मैं भी एक वक्ता था। आचार्यश्री ने दलित समाज के संत-महात्माओं को आसन दिया। उनका अभिवादन किया।

मैं जानता हूँ मेरे कुछ दलित चिन्तक मित्र ऐसा प्रसंगों को एक स्वांग के रूप में देखते हैं। उनके लिए यह दिखावा है। हमें यह क्या नहीं समझना चाहिए कि शताब्दियों से चले आ रहे इस कलंक को धोने की हर पहल महत्त्वपूर्ण है। ऐसे प्रयासों को कमतर करके क्यों आँका जाए! हाँ, ऐसा भी जरूरी है कि ऐसे प्रयास आरोपित अथवा प्रचार भाव से न किए जाएँ। उनके पीछे आत्म प्रेरित वांछा होनी चाहिए।

विगत वर्ष इन्दौर में चातुर्मास के समय आचार्य श्री ने मेरी पुस्तक 'संत रविदास की रामकहानी' का विमोचन के अवसर पर देश-प्रदेश की अनेक विभूतियाँ उपस्थित थीं। साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल, म.प्र. लोकसेवा आयोग के पूर्व सदस्य डॉ. प्रकाश बरतूनिया, शिक्षाविद्

01.pmd 56 5/25/2015, 3:44 PM

डॉ. प्रेम भारती, देवपुत्र के संपादक कृष्णकुमार अष्ठाना, जयपुर के वरिष्ठ पत्रकार ज्ञानेश उपाध्याय, संत साहित्य के विशेषज्ञ डॉ. उदयप्रताप सिंह, वाराणसी, रसायनशास्त्र के प्रो. गुणवंत होल्कर आदि के चेहरे मुझे याद हैं। आचार्य श्री ने पुस्तक का लोकार्पण किया। पुस्तक की संक्षिप्त समीक्षा की। मेरा सम्मान किया। इतना तो हर कोई विमोचनकर्ता करता ही है। आचार्य श्री ने रु. ६०००/- दिए और पुस्तक की २५ प्रतियाँ खरीदी। ऐसा कितने लोग करते हैं? इस अवसर पर एक सुखद अनुभूति मुझे यह हुई कि शाम को कार्यक्रम में उपस्थित एक संत महात्मा को मैंने एक प्रति भेंट की। उन्होंने रात में उस पुस्तक को पूरा पढ़ा और अगले दिन सुबह जलपान पर मुझे साधुवाद दिया। एक लेखक के लिए सर्वोत्तम क्षण वह होता है जब कोई अपरिचित व्यक्ति उसकी कलम की प्रशंसा करता है।

स्वतंत्र देश में एक नारा गूँजा– रोटी, कपड़ा और मकान, माँग रहा है हिन्दुस्तान। हिन्दुस्तान को न पूरी तरह रोटी मिली, न कपड़ा और मकान ही। इनको पाने की चेष्टा में हलाकान भारत का नागरिक नैतिक मूल्यों के प्रति निराकार भाव से निश्चेष्ट है। 'गरीबी रेखा से नीचे की खोज पड़ताल की जाती है, 'नैतिकता की रेखा' से नीचे के विषय में कोई सोच नहीं।

आचार्यश्री रोटी, कपड़े और मकान की अनदेखी नहीं करते। वह पूर्ण पौष्टिक आहार की बाते करते हैं। आचार्य श्री लिखते हैं– 'सम्पूर्ण मानवता को पौष्टिक (अन्न, जल, वायु, तेज, आकाश, वस्त्र, आभूषण, शिक्षा, परिवेश, परिवार, राष्ट्र इत्यादि) आहार चाहिए,सतत चाहिए, सदैव चाहिए, अपने सम्पूर्ण विकास के लिए यह सार्वभौम सत्य है,परन्तु विडम्बना है कि यह भौतिक विकास के श्लाघ्ययुग में भी स्वल्प लोगों को ही प्राप्त है जिसके लिए हमें प्रयास करना चाहिए। यह हो भी रहा है, क्योंकि पौष्टिक आहार का कोई विकल्प नहीं है?

आचार्य श्री का धर्मशास्त्र समाज सापेक्ष है। यह स्वामी रामानंद का ही सुझाया हुआ पथ है। यही पथ स्वामी विवेकानंद ने अपनाया। समाज के लिए धर्म है, धर्म के लिए समाज नहीं है। आचार्य श्री प्रतिवर्ष चातुर्मास के अवसर पर एक विद्वत गोष्ठी आयोजित करते हैं। विद्वत गोष्ठी के लिए जो विषय वे चुनते हैं, उनमें समाज और राष्ट्र के लिए शुभ खोजने की चेष्टा रहती है। उन्होंने काशी में विमर्श का विषय रखा 'धर्म और युवा वर्ग।' सूरत में विषय रखा था 'सांस्कृतिक आक्रमण प्रतिकार के उपाय।' इन्दौर में

01.pmd 57 5/25/2015, 3:44 PM

विषय रखा था 'मानव जीवन में धर्म की प्रासंगिकता' हरिद्वार में विषय रखे 'रामराज्य की अवधारणा और स्वामी विवेकानंद पर पूरे देश में सार्धशती के कारण विमर्श हो रहा है। सो इस विषय का चयन समीचीन था। राम राज्य की अवधारणा पर चर्चा क्यों?

मैंने आचार्यश्री जी से इस विषय के चयन के सम्बन्ध में पूछा तो डॉ. उदयप्रताप सिंह की ओर संकेत करते हुए आचार्यश्री ने कहा– 'हम तो रामकाज को महत्व देते आए हैं। रामराज्य की चर्चा भी तो रामकाज ही है। एक और बात भी है। रामराज्य एक आदर्श राज्य की संकल्पना है। हमारे राजनेताओं, शासकों, प्रशासकों के सामने यह आदर्श रहना चाहिए। इस आदर्श को सामने रखकर राज्य और केन्द्रीय सरकारें अपनी योजनाएँ बनाएँ और उनका निष्ठापूर्वक नियमन और कार्यान्वयन करें तो निश्चित कुछ न कुछ लाभ तो आम जन का होगा।

'वामपंथी या पूँजीवादी मॉडल को सामने रखने के बजाए हम रामराज्य के मॉडल को अपने सामने क्यों न रखें। यह हमारा अपना मॉडल है। महात्मा गाँधी ने भी इस बिन्दु को उठाया। महात्मा गाँधी के नाम पर सत्ता पाने वालों ने ही महात्मा गाँधी के मॉडल को बिना अपनाए ही निरस्त कर दिया।'

इस विषय पर अच्छी चर्चा हुई। यह भी विचार आया कि इस विषय का एक प्रस्ताव भारत सरकार और योजना आयोग को भेजा जाए।

मैंने कहा– यह एक बिडम्बना ही है कि हमने दिल्ली को कभी मास्को से जोड़ा, कभी बीजिंग से, कभी वाशिंगटन से, कभी लंदन से जोड़ा। हमने दिल्ली को अयोध्या से नहीं जोड़ा। दिल्ली को अयोध्या से जोड़ा होता तो कदाचित् हमारी यह दुर्दशा न होती। इन विषयों का चयन क्या कहता है? यही न कि स्थितियाँ क्यों बिगड़ रही हैं, उन्हें कैसे सुधारा जाए?

विद्वत् परिषद् की गोष्ठियों की विशेषता यह है कि आचार्यश्री पूरे समय स्वयं आसंदी पर रहते हैं। ध्यान लगाकर सबको सुनते हैं। वक्ता को कोई बीच में टोकता नहीं। अपना पक्ष रखने के लिए सब स्वतंत्र। बाद में आचार्यश्री अपना पक्ष रखते हैं– बिना किसी कटुता के।

आचार्यश्री की वाणी में विनम्रता और दृढ़ता का अद्भुत संगम है। उनका आभा-मण्डल व्यापक है। उनके परिचय और सम्पर्क का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। सभी क्षेत्रों के लोग। सभी राजनैतिक दलों के लोग। सभी वर्गोंके लोग। वह हँसते-हँसाते खरी बात कह जाते हैं। उनके पास बैठना और चुपचाप

01.pmd 58 5/25/2015, 3:44 PM

उन्हें सुनते रहना रंजन भी करता है और प्रबोधन भी।

आचार्यश्री को विद्वानों का संग-साथ पसंद है। आदान-प्रदान की मुद्रा में। वह विद्वानों का स्वयं खड़े होकर तिलक करते हैं। उत्तरीय पहनाते हैं। अन्तरंग आत्मीयता के साथ। पंगत में विद्वान् भोजन करते हैं, तो वह स्वयं खड़े रहकर व्यवस्था को देखते हैं। व्यक्तिगत रूप से पथ्य आदि के विषय में पूछते हैं।

आचार्यश्री नैयायिक व व्याकरणाचार्य हैं। व्याकरण का क्षेत्र भाषा तक सीमित नहीं है। पूरा जीवन व्याकरण से जुड़ा है। व्याकरण घटकों को बाँधता है, उन्हें स्थिर आसन देता है, उनकी सीमा तय करता है, उन्हें अर्थशक्ति से भरता है। आचार्यश्री व्याकरण बोध के साथ समाज रचना को देखते हैं और इसी दृष्टि से यथा आवश्यकता उसमें संशोधन के लिए अवकाश बचाकर रखते हैं।

आचार्यश्री के पास रामानंदीय प्रेम है। मैं भी उस प्रेम का एक पक्ष हूँ। मेरे नाम के साथ जातिसूचक शब्द नहीं जुड़ता। सूरत के चातुर्मास में ब्रह्माणों की पंगत बैठी। मुझसे कहा जाओ, बैठो। मैंने कहा मैं खत्री हूँ। आचार्य श्री ने कहा– नहीं तुम ब्राह्मण हो। मैं वहाँ तक सभा में कहा– मैं खत्री था, क्षत्रिय था और आचार्य श्री ने मुझे और मेरी पत्नी को ब्राह्मण बना दिया और मुझे दक्षिणा भी मिली।

मेरी एक सीमा है। मैं जब भी किसी देहधारी के विषय में सोचता हूँ या लिखता हूँ तो मुझे भवानी प्रसाद मिश्र की यह बात याद रहती है– **'न तू, न मैं, न वे, निरापद कोई नहीं।'**

आचार्यश्री श्रीसम्पन्न हैं। अज्ञेय की 'भग्नदूत'की एक पंक्ति याद आती है– **क्या दूँ देव! तुम्हारी इस विपुल विभुता को मैं उपहार।**

मैंने इस लेख के प्रारम्भ में आचार्य श्री के लिए लिखा है– **एक शिखा शीतल।** इसकी दूसरी पंक्ति के साथ लेख समाप्त करता हूँ–

शांत
सरस
भूतल

●

01.pmd 59 5/25/2015, 3:44 PM

मानवता के ध्वजवाहक : स्वामीरामनरेशाचार्य

रामबहादुर राय

नाम सुना था। यश भी जानता था। लेकिन पहली बार स्वामी रामनरेशाचार्य का दिल्ली में ही दर्शन कर सका। उन दिनों स्वामी जी देश की राजधानी के अशोक विहार में चार्तुमास कर रहे थे। वही भेंट हुई। एक बौद्धिक विमर्श का वहाँ आयोजन था। जिसमें रहने और सुनने का अवसर मिला। उसमें अन्य विद्वानों के अलावा मुझे कुछ नाम याद हैं जो उस विमर्श में थे। जैसे जनसत्ता के संस्थापक संपादक प्रभाष जोशी, प्रोफेसर गिरीश्वर मिश्र, कलानाथ शास्त्री, डॉ. उदयप्रताप सिंह, डॉ. महेशचंन्द्र शर्मा (भाजपा) और जनार्दन द्विवेदी (कांग्रेस)। उस विमर्श के पश्चात स्वामी जी का प्रवचन सुना।

यह सितंबर, २००४ की बात है। यह संयोग था या सुयोग, इसके बारे में कहना कठिन है। उस समय मैंने लिखा था कि 'इस बार राजधानी दिल्ली में राजनीति के अधिमास का चातुर्मास से संयोग हो रहा है। संसद का बजट अधिवेशन राजनीति के अधिमास में हुआ। भारतीय मानस से कटी इस राजनीति के अदाकारों में कुछ ही हंस होंगे जो चातुर्मास का महत्व समझते हैं। इस वातावरण में स्वामी रामनरेशाचार्य ने राजधानी में डेरा डाला है। क्या यह भी एक संयोग है कि यूपीए सत्तारूढ़ हुई है। उनके चातुर्मास का इससे संबंध दिखता नहीं है। अगर संबंध होता तो उन्होंने लालकिले के आसपास डेरा डाला होता। उन दिनों चातुर्मास को जानने और समझने का अवसर मिला। भारत की धार्मिक-सामाजिक-सांस्कृतिक परंपरा को अपने-अपने ढंग से संत मनाते हैं। स्वामी रामनरेशाचार्य ने इसे नया रूप दे दिया है। चातुर्मास की एक धार्मिक व्याख्या है। यह चार महीने चलने वाली वह धार्मिक प्रक्रिया है जिसका संत अपनी रीति से निर्वाह करते हैं। उस समय मैंने देखा कि स्वामी रामनरेशाचार्य इसे आस्थावानों के उत्थान का आयोजन बना पा रहे हैं। धार्मिक क्रियाओं को गृहस्थ के लिए

राष्ट्रवादी चिंतक, वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली, सम्प्रति सम्पादक 'यथावत'

01.pmd 60 5/25/2015, 3:44 PM

सहज बना रहे हैं। परंपरा और समसामयिक समस्याओं में वे सेतु की भूमिका निभा रहे हैं। इसके लिए उनके पास विद्या है, बल है और बुद्धि है। इसीलिए वे ऐसे मुहावरों का प्रयोग कर लेते हैं जो सहज ही समझ में आ जाए। यह सब देखकर मुझे यह अनुभव हुआ कि वे संतों की जमात वाली भीड़ से बिल्कुल अलग हैं।

तब से ही स्वामी रामनरेशाचार्य के कारण उस परंपरा को समझने की उत्सुकता मेरे मन में पैदा हुई। वह बनी हुई है। जो जान सका हूँ वह न तो पर्याप्त है और न आखिरी। लेकिन जब भी अवसर मिलता है तो स्वामी जी से मिलने और उन्हें सुनने के लिए तत्पर रहता हूँ। ऐसा ही बहुत लोगों के साथ हो रहा है और हुआ है क्योंकि वे स्वामी रामानंद की परंपरा के सार्थक वाहक बन गए हैं। यह एक सिलसिला चल पड़ा है। जब कोई संत अपनी राह स्वयं बनाता है तो उसे बने बनाए पैमाने से नहीं जाँचा जा सकता है। उसे जानने और समझने की प्रक्रिया अनुभवों के सोपान पर चढ़ने और उतरने की हो सकती है। इसमें अनुभव ही काम की बात है। कई बार अनुभव के पार भी जाना पड़ता है। वह भी एक अनुभव होता है जो व्यक्ति को आत्मा से जोड़ता है और भले काम में लगने की प्रेरणा देता है। स्वामी रामनरेशाचार्य यही करने में व्यग्र भाव से लगे हुए हैं।

यह बात कहना और उसे निशान लगाकर बताना इसलिए जरूरी है क्योंकि कई धर्मगुरु कहते सुने जाते हैं कि वही बड़ा संत है जो अपनी शिष्य परंपरा का विस्तार करता जाता है। जो ऐसा कहते हैं वे नहीं जानते कि नवजागरण का आधुनिक मंत्र क्या है। वे अनजाने में ऐसा कहते हैं और परिणाम में एक प्रतिस्पर्द्धा को जन्म देते हैं। स्वामी रामनरेशाचार्य ने ऐसी किसी प्रतिस्पर्द्धा को महत्वहीन बना दिया है। वे उसमें पड़ते तो बात दूसरी रहती। उससे अलग होकर उन्होंने एक नया मंत्र दिया है। वे न तो उसे किसी के कान में फूँकते हैं और न ही इसका दावा करते हैं। फिर सवाल उठता है कि वह मंत्र कैसे हुआ? वह मंत्र क्या है? मंत्र है भी या नहीं?

जो आप में सार्थक होने का भाव जगा दे, वही मंत्र है। इसके लिए कोई एक वाक्य या वाक्यांश हर किसी के काम नहीं आता। वह भले ही सूत्ररूप में हो पर होता कुछ अक्षरों का खेल मात्र। उन अक्षरों के खुलने से अगर आप का अंतरमन जो बंद पड़ा था वह नए झोंके से खुलने लगे या अचानक खुल जाए तो समझना चाहिए कि जीवन धन्य हो गया। धन्यता का यह बोध कैसे हो? यही

01.pmd 61 5/25/2015, 3:44 PM

मूल प्रश्न है जिसे कई बार व्यक्ति एक ही जीवन में अनेक जन्म लेकर भी हल नहीं कर पाता। द्विज तो एक ही जीवन में दुबारा जन्म लेने वाले को कहते हैं। वह जाति सूचक नहीं, गुणवाचक है। भारतीय परंपरा में द्विज एक अवस्था है। एक प्रक्रिया है। एक पड़ाव है। द्विज होना अनंत यात्रा का एक क्रम है। वह अपने आप में लक्ष्य नहीं है। मंजिल भी नहीं है। वहाँ से यात्रा पुन: प्रारंभ होती है।

इसे स्वामी रामनरेशाचार्य अपने बचपन में ही समझ गए थे। उन्हें सहज बोध हो गया था। ऐसा विरले लोगों के साथ ही होता है। पहले उन्होंने पढ़ाई की। संस्कृत को माध्यम बनाया। साफ है कि वे शास्त्र को समझने के लक्ष्य से प्रेरित थे। आधुनिक शिक्षा की राह नहीं चुनी। वह अलग राह है। उसकी मंजिल भी अलग है। स्वामी रामनरेशाचार्य ने ज्ञान अर्जित करने का लक्ष्य रखा। उसी पर चलकर जहाँ उन्हें पथ मिला वह स्वामी रामानन्द का है। उनसे उस रामानन्द का प्रवाह पुन: फूटा है जो लगभग सूख गया था। एक प्रसंग से इसे अधिक समझा जा सकता है। वह यह है कि एक इतिहासकार से मैंने पूछा कि मुझे आप स्वामी रामानन्द को ऐतिहासिक संदर्भ में समझाइए। उन्होंने जवाब के बदले एक सवाल पूछ लिया। वह यह था कि कौन से रामानन्द? यह बड़ी उलझन है। आप पूछ सकते हैं कि इसमें उलझन कहाँ है? उलझन यह है कि रामानन्द और रामानन्दाचार्य में क्या भेद है? जब एक इतिहासकार सवाल कर बैठे तो उलझन बढ़ जाती है। स्वामी रामानन्द और रामानन्दाचार्य में अंतर शब्दों का ही नहीं है, संत और आचार्य के दो रूपों का ही नहीं है, यह भी है कि इस परंपरा से सुबुद्ध समाज भी अपरिचित जैसा है।

ऐसा क्यों है? विचित्र लग सकता है, लेकिन यह सच है। अयोध्या आंदोलन ने समाज में नवजागरण पैदा किया। इस नवजागरण में रामनरेशाचार्य का भी बड़ा योगदान है। प्रारंभिक चरणों में जिन संतों ने गाँव-गाँव में राम नाम की महिमा जगाई उनमें वे भी हैं। वे उन संतों में भी एक हैं जिनको मिलाकर रामालय ट्रस्ट बना था। यह बात अलग है कि वह ट्रस्ट अपने उद्देश्य में अनेक कारणों से विफल रहा। लेकिन स्वामी रामनरेशाचार्य की मनोदशा और संकल्प पर उसकी कोई छाया नहीं पड़ी। वे उससे उसी तरह उबर गए जैसे कि वह एक आई गई घटना हो। ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं। उस घटना से उनमें नया उत्साह पैदा हुआ और वे बिना विचलित हुए अपने रास्ते पर चलते रहे। भटके नहीं। अयोध्या आंदोलन के प्रवाह में अनेक संतों को भटकते, सत्ता की राजनीति में

01.pmd 62 5/25/2015, 3:44 PM

पड़ते और अधोगति को जाते हमने देखा है। ऐसे संतों को आदर्श नहीं माना जा सकता। इसीलिए उनके पग के कोई निशान नहीं हैं। वे दूसरों के रास्ते पर चलते हुए देखे जा सकते हैं जबकि रामनरेशाचार्य जिस पथ पर चल पड़े हैं आज उनके निशान बनते जा रहे हैं।

मेरी तरह सैकड़ों व्यक्ति इसके साक्षी हैं। मेरी भी उत्सुकता इसी कारण है। इसलिए उन्हें जानने और समझने का जो भी अवसर मिलता है वहाँ पहुँचने का प्रयास करता रहा हूँ। जब-जब भेंट हुई और वह सिलसिला बढ़ा तो उन धारणाओं की पुष्टि हुई जिन्हें मैंने सुनकर और कुछ पढ़कर बनाई थी। यहाँ एक स्पष्टीकरण आवश्यक है। मैंने जो धारणाएँ बनाई थी उनमें सराहना का भाव था और यह जानने की जिज्ञासा भी थी कि वे कितने सधे हुए ढंग से उस परंपरा को बढ़ा रहे हैं जिसने मुगलिया सल्तनत को अप्रभावी बना दिया था। इसे समझने से पहले यह जानना जरूरी है कि स्वामी रामनरेशाचार्य का एक क्रमिक विकास हुआ है। वे अचानक उस स्थान पर नहीं पहुँचे हैं जहाँ वे हैं। वे छठें दशक के आखिरी दिनों में 'रामनरेश दास' बने। मूल नाम और धाम छोड़ा। यहाँ से उनकी संन्यास और शिक्षा की यात्रा प्रारंभ होती है। बनारस में उन्हें अध्यवसायी छात्र के रूप में लोगों ने देखा है और उन लोगों से उनकी प्रशंसा सुनी जा सकती है। एक संन्यासी को शास्त्र में पारंगत होना चाहिए। इसी लक्ष्य से उन्होंने संस्कृत के माध्यम से शास्त्रों का न केवल अध्ययन किया, बल्कि परीक्षाएँ दी और उसमें उत्तम श्रेणी प्राप्त की। यह उनकी मेधा और लगन का प्रमाण है। शास्त्र के अध्ययन से पुस्तकीय विद्वता प्राप्त होती है। समाज से मान्यता मिलती है। यह सब एक प्रमाणपत्र का रूप ले लेता है। उसे अर्जित कर एक ऊँचे सोपान पर खड़े होने का सुख अनुभव किया जा सकता है।

लेकिन वास्तविक अनुभव तो वही होता है जो अपना होता है। अनुभव यानी अपना। शास्त्र भी एक अनुभव है। पर वह दूसरे का होता है। वह किसी का भी हो सकता है। शास्त्र का अनुभव गाँठ की पूँजी नहीं होती, प्रमाण होता है। 'रामनरेश दास' अध्ययन, अध्यवसाय और अध्यापन के अपने अनुभवों से तप कर निकले हैं। उसी क्रम में साधु और संतों ने उन्हें रामानंदाचार्य पीठ पर बैठाया। यह महत्तर दायित्व था। उनके सामने बड़ी चुनौती थी। किसी फलते-फूलते पीठ पर आचार्य होकर विराजना तो अलग बात है। वे उस पीठ पर बैठे जिसका सात सौ साल पुराना इतिहास है। उसका गौरव गुणगान होता है। उसके योगदान को

01.pmd 63 5/25/2015, 3:44 PM

आदर पूर्वक याद किया जाता है। ११ जनवरी, १९८८ को रामानंद जयंती पर स्वामी रामनरेशाचार्य का रामानंदाचार्य पीठ पर पदाभिषेक हुआ। तब वह पीठ इतिहास की वस्तु थी और उपेक्षित थी।

उनके सामने कितनी बड़ी चुनौती थी? यह डॉ. शुकदेव सिंह के शब्दों में ही सुनिए–'लेकिन आश्चर्य की बात है कि स्वामी रामानंद का विशाल आनन्द मठ और श्रीमठ ऐतिहासिक रूप से प्रायः लुप्त हो गए। स्वामी रामानंद का वह विशाल वन, जिसमें हजारों संन्यासी रहते थे, सैकड़ों सूफी, पचासों संत, फकीर, जंगम, जोगड़े, नाथ-पंथी रहा करते थे, वहाँ लोगों के घर हैं, मस्जिदें हैं, तरह-तरह के पड़ाव हैं, गलियाँ हैं, दुकानें हैं। पंचगंगा घाट पर श्रीमठ के रूप में बहुत जरा सी पुण्य-भूमि बची हुई है।' पंचगंगा घाट वह पवित्र स्थान है जहाँ स्वामी रामानंद ने रहकर भक्ति, अध्यात्म और राष्ट्रीयता की धारा बहायी। वह काल बहुत विकट था। पंचगंगा एक प्रतीक है। धारणा है कि वहाँ पाँच नदियों का संगम है। डॉ. युगेश्वर के शब्दों में कहें तो 'पंचगंगा में पाँच गंगा की कल्पना है। पंचगंगा साधना और उपासना का अदभुत केंद्र है। भक्ति की पाठशाला है।' वे इसे इस तरह भी समझाते थे– प्रयाग में त्रिवेणी है तो काशी में पंचगंगा। पंचदेवों की उपासना है पंचगंगा। वेदांत की पाँच धाराओं का संगम है पंचगंगा, द्वैत, अद्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत और शुद्धाद्वैत।

जो मठ उजड़ गया था, जो श्रीहीन हो गया था वह अब अपने गौरव गान की धुन सुन रहा है। उसकी स्मृति में अगर सराबोर नहीं है तो कम से कम यह कहा जा सकता है कि रोमांचित अवश्य है। यही जानने-समझने की प्रक्रिया है। जानना ही काफी है। वही पहला कदम होता है। एक-एक कदम चलकर ही कोई भी अपनी मंजिल पहुँचता है। जान लेने से प्रयास की प्रेरणा मिलती है। पराक्रम का भाव जगता है। यही नवजागरण होता है। सात सौ साल पहले स्वामी रामानंद ने उस समय जैसी जरूरत थी वैसी विधि नवजागरण की निकाली। स्वामी रामनरेशाचार्य उसे विस्मृति से बाहर कर रहे हैं। इस तरह श्रीमठ की सुबह हो गई है। यही वे समाज को सूचना दे रहे हैं। डॉ. शुकदेव सिंह सही कह रहे हैं कि 'यह सौभाग्य ही कहा जाएगा कि इन दिनों श्रीमठ की मूल गद्दी पर विराजमान स्वामी रामनरेशाचार्य भी रामानंद की प्रतिमूर्ति जान पड़ते हैं।'

प्रकृति और परिस्थिति में परिवर्तन एक नियम है। फिर भी मूल नियम नहीं बदलता। इसे इस तरह भी कहा जा सकता है कि रामानंद के बगैर कबीर नहीं हो

01.pmd 64 5/25/2015, 3:44 PM

सकते थे। रामकृष्ण न होते तो स्वामी विवेकानंद का होना असंभव था। यही नियम गुरु-शिष्य परंपरा में है और रहेगा। इसका स्वरूप बदलता रह सकता है। उसी तरह जैसे परिस्थिति बदलती है और उसकी आवश्यकताएँ भी बदलती हैं। मुगलिया सल्तनत के समय जो चुनौतियाँ थीं वैसी तो नहीं, लेकिन आज उससे अधिक उलझी हुई परिस्थिति है। तब स्वामी रामानंद ने अपनी एक घोषणा से समाज की चेतना पर पड़ी राख को हटा दिया था। उन्होंने ईश्वर के सम्मुख सबकी समानता का विचार रखा। वह एक क्रांतिकारी चेतना थी। उसका एक रूपांतरण भक्ति में हुआ तो दूसरा शक्ति में हुआ। संत भक्ति के रास्ते चले और वैरागी जूझने के लिए मैदान में कूदे। इसका देशव्यापी असर हुआ।

स्वामी रामनरेशाचार्य ने इसे रेखांकित भी किया है कि 'आचार्य प्रवर स्वामी रामानंद का प्रयास केवल क्षेत्रीय नहीं था, जैसे वायु, आकाश तथा सूर्य क्षेत्रीय नहीं होते वैसे ही आचार्य प्रवर के समान विभूतियाँ भी क्षेत्रीय नहीं होती।' यह कथन स्पष्ट है। इसकी व्याख्या अनावश्यक है। इसे अपनाना आवश्यक है। स्वामी रामनरेशाचार्य ने 'श्रीमठ प्रकाश' पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि 'अनेक साक्ष्यों से सिद्ध होता है कि श्रीमठ संसार के तत्कालीन आध्यात्मिक केंद्रों में सर्वश्रेष्ठ था। दुनिया के सभी भागों से साधक एवं जिज्ञासु श्रीमठ में आते थे तथा पूर्णता को प्राप्त कर लौटते थे।' इस पुस्तक का संपादन डॉ. विवेकी राय ने किया है। यहाँ यह जानने की उत्सुकता होगी कि स्वामी रामनरेशाचार्य के आने पर श्रीमठ में क्या रूपांतरण हुआ है। इसका वर्णन श्रीमठ की यात्रा के बाद एक फीचर में सुधी पत्रकार ज्ञानेश उपाध्याय ने किया है। उसका यह अंश यहाँ प्रासंगिक है– 'आक्रमण व विध्वंस के उपरांत कभी बस आचार्य रामानंद जी की पादुकाओं का स्थान ही शेष रह गया था, फिर कभी दो मंजिल की एक छोटी-सी इमारत बनी, लेकिन अब थोड़ी-सी जगह में पाँच मंजिली इमारत खड़ी है, भीतर-बाहर से पवित्र, प्रेरक, उज्ज्वल। विनाश व विध्वंस के अनगिनत प्रयासों के बावजूद श्रीमठ आज हमारे समय का एक बचा हुआ अकाट्य और महान सत्य है। ऐतिहासिक भारतीय संकोच का जीता-जागता उदाहरण है। हम आक्रमणकारी नहीं हैं, हम हो नहीं सकते। हम छीनते नहीं, क्योंकि छीनना हमारा स्वभाव नहीं है। हम खुद को बदलते-बनाते चलते हैं। हम दूसरों की लकीर छोटी नहीं करते, अपनी छोटी-सी सही, लेकिन जितनी भी लकीर है, उसे बचाते-बढ़ाते चलते हैं और चल रहे हैं। ठीक ऐसे ही चल रहा है श्रीमठ। लोग कहते

01.pmd 65 5/25/2015, 3:44 PM

हैं कि मठों में बड़ा विलास और वैभव होता है, लेकिन सीधा-सादा श्रीमठ इस आधुनिक-प्रचारित तथ्य को सिरे से नकार देता है। श्रीमठ अपने भले होने की मौन गवाही देता है। अर्थात् अपने होने में श्रीमठ ने उसी सज्जनता, सादगी और सीधेपन को बचाया है, जिसे आचार्य श्री रामानंद जी ने बचाया था, जिसे कबीर ने पुष्ट किया और गोस्वामी तुलसीदास जी ने घर-घर पहुँचा दिया।' इसी श्रीमठ में स्वामी रामनरेशाचार्य से मिलने का मुझे २००९ के लोकसभा चुनाव में अवसर मिला था। वे जोधपुर से उसी दिन काशी पहुँचे थे।

जिस तरह श्रीमठ का पुनरुद्धार हुआ है उसी गति से बहुत थोड़े समय में ही पर्याप्त साहित्य का प्रकाशन हुआ है। इसके प्रेरक स्वामी रामनरेशाचार्य हैं। उनकी योजना में ही जगदगुरु रामानंदाचार्य की सप्त शताब्दी २००१ में मनाई गई। उस अवसर पर भी कुछ साहित्य छपा। जिससे एक जागरूकता पैदा हुई। ऐसे साहित्य का एक प्रभाव पड़ता है। पाठक की इतिहास दृष्टि सुधरती है। उससे भविष्य का रास्ता सूझता है। ज्यादातर मठों में बौद्धिक गतिविधियाँ शून्य रहती हैं। ठीक इसके विपरीत श्रीमठ ने हिन्दी में सुबोध सामग्री के प्रकाशन पर ध्यान दिया है। जिन चातुर्मासों में मुझे जाने का अवसर मिला वहाँ धार्मिक क्रिया कलापों के बीच बौद्धिक विमर्श और दो-एक पुस्तकों का लोकार्पण का कार्यक्रम भी था। २०१३ में प्रयाग के हरित माघव मंदिर में 'दु:ख क्यों होता है?' वैष्णवमताब्जभास्कर (डॉ. जयकांतशर्मा), 'तीर्थराज प्रयाग और रामभक्ति का अमृतकलश (डॉ. उदयप्रताप सिंह) पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। वह स्वामी रामानंद का जन्मस्थान है। हरिद्वार में 'अच्छा कैसे सोचा जाए?' पुस्तिका का लोकार्पण एक गोष्ठी में हुआ। ये दोनों पुस्तिकाएँ स्वामी रामनरेशाचार्य के प्रवचनों का संकलन है। इन्हें ज्ञानेश उपाध्याय ने संयोजित किया है। इन पुस्तिकाओं में स्वामी जी के विचार हैं। देश-समाज के सामने उपस्थित प्रश्नों पर उनका दृष्टिकोण है और एक वैचारिक निमंत्रण भी है, विचार विमर्श के लिए। इन्हीं दिनों अंग्रेजी में एक नई पुस्तक आई है। जिसका हिन्दी में शीर्षक होगा- भारत में मानवतावाद। इसके लेखक फर्नांडो ग्रेसिया हैं। मानवतावादी सक्रिय विचारक ग्रेसिया ने अपनी पुस्तक में भक्ति आंदोलन को मानवता के प्रचार-प्रसार की एक धारा के रूप में प्रस्तुत किया है। जिसमें स्वामी रामानंद के योगदान का सही परिप्रेक्ष्य में वर्णन भी है। स्वामी रामनरेशाचार्य को उसी कड़ी में देखा जाना चाहिए। वे राष्ट्रीयता और मानवता के ध्वजवाहक संत हैं।

01.pmd 66 5/25/2015, 3:44 PM

स्वामीरामानन्द से श्रीरामनरेशाचार्य तक

अशोक कुमार सिंह

वे संत, महात्मा या दार्शनिक महान् होते हैं जो अपने विचारों को हवा और पानी की तरह सहज बना देते हैं। अपनी उपलब्धि को जन-जन की उपलब्धि बना देते हैं। लगता है हम उनको युगों से जानते-पहचानते हैं। वे हमारी रगों में रक्त की तरह प्रवाहित होने लगते हैं। हमारी धड़कन बन जाते हैं। एक ऐसे ही महान् संत थे स्वामीरामानन्द जिनका प्रभाव हमारे आध्यात्मिक जीवन के साथ-साथ हमारे सामाजिक जीवन पर भी उतना ही दिखाई देता है।

सदियाँ बीत गईं, लेकिन जन मन में यह नाम रंचमात्र भी विस्मृत नहीं हुआ। कितने शासक आए, सल्तनतें आईं लेकिन इस महापुरुष की ज्योति तनिक भी धूमिल नहीं हुई। कोई तो बात होगी कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। हमे गहराई में डूबकर इसका उत्तर खोजना होगा।

मैं समझता हूँ कि किसी भी आध्यात्मिक साधना का सबसे बड़ा गुण होता है अपनी संकीर्णता या सीमा का अतिक्रमण करना। उसे असीम तक पहुँचाना। उसकी आकांक्षा होती है कि वह इस भौतिकता या सांसारिकता को लाँघ जाय। लेकिन यह उसकी मजबूरी भी होती है कि बिना संसार के आलंबन के चेतना अपने को अभिव्यक्त ही नहीं कर सकती। इसलिए सांसारिकता और आध्यात्मिकता अन्योन्याश्रित हैं। अर्थात् कोई आध्यात्मिक मात्र आध्यात्मिक होकर रह ही नहीं सकता। उसके साथ एक सामाजिकता भी होती है। महान् आध्यात्मिक उपलब्धियाँ महान् सामाजिक परिवर्तन को जन्म देती हैं।

जब कोई पहली बार सुनता है– 'भक्ति द्राविड ऊपजी लाए रामानन्द' तब उसका ध्यान जाता है स्वामीरामानन्द पर। कौन थे ये रामानन्द, जिन्हें भक्ति का भगीरथ कहा गया है। क्योंकि लोकोक्ति बनाना कोई मामूली बात नहीं। इन्हीं बातों से स्वामी जी की महानता का पता चलता है। जब हम इस और गहराई में उतरते हैं तब एक दूसरी बात का पता चलता है। भक्ति

वरिष्ठ गीतकार और कथाकार, वाराणसी

01.pmd 67 5/25/2015, 3:44 PM

द्राविड़ ऊपजी क्या भक्ति का जन्म द्रविड़ देश में हुआ? दिनकर जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' में अनेक विद्वानों का उद्धरण देते हुए अपनी बात कहने का प्रयास किया है। एक प्रवृत्ति के रूप में भक्ति तो अनादि है। पूर्व वैदिक काल से चली आ रही है। मनोविज्ञान कहता है यह एक मूल प्रवृत्ति है। जब हम अपने को ही सब कुछ मान लेते हैं। हमारा अहंकार कसता है। उसमें अँकड़ आ जाती है तो अहंकार कहा जाता है और जब वही किसी आराध्य के चरणों में विसर्जित हो जाता है, समर्पित हो जाता है तब वह भक्ति बन जाता है। इसका मतलब है कि जिस द्राविड़ भक्ति की बात की जा रही है वह भक्ति इस भक्ति से कुछ विशेष रही होगी। उसी प्रकार विशेष जैसे सभी नदियों को गंगा कहा जाता है लेकिन भागीरथी तो विशेष नदी को ही कहेंगे। ऐसे ही जिस भक्ति का जन्म द्राविड़ देश में हुआ वह सभी भक्तिमार्गों से मेल खाते हुए भी एक विशेष लक्षणों वाली भक्ति है। निश्चित रूप से उसका जन्म दक्षिण में हुआ होगा जिसे जगद्गुरु रामानन्द द्राविड़ देश से दूसरे देश में ले आए। सवाल है तब स्वामी रामानन्द की वह भागीरथी किस प्रकार से अब तक प्रवाहित है?

इस बात को भुलाया नहीं जा सकता कि जगद्गुरु रामानन्द एक महान ज्ञानी और वैष्णवाचार्य थे। उनका सनातन धर्म के सभी शास्त्रों पर अधिकार था। 'ब्रह्मसूत्र' से लेकर ऐसी अनेक स्मृतियाँ थीं जिनके विचारों और प्रभावों से स्वामीजी भलीभाँति परिचित थे। किसी भी शास्त्रज्ञ के लिए इस दायरे से बाहर जाकर सोचना और प्रयोग करना एक समय तक लगभग असंभव जैसा कार्य था। ऐसे में स्वामीजी के लिए एक ऐसे मार्ग की खोज करना कितना दुष्कर हो सकता था। उसकी कल्पना की जा सकती है। इससे हटकर कहने के लिए बड़े तप, साधना और हैसियत की दरकार थी। लगभग अपने अस्तित्व को दाँव पर लगाने तक का खतरा उठाने की हिम्मत चाहिए थी। अब तक का द्राविड़ेतर प्रदेश अपने पूर्ववर्ती विचारों के आगे नतमस्तक था। किसी ने इस यथास्थिति से निकलने का साहस नहीं दिखाया। लगता है द्राविड़ देश की प्रेरणा या शक्ति पाकर स्वामी रामानन्द एक दिन वह कर दिखाये। अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर यह घोषणा कर ही डाली। अब किसी के कान में पिघला शीशा नहीं डाला जाएगा। किसी की जीभ नहीं काटी जाएगी। सभी प्रपत्ति के अधिकारी हैं– **'जाति-पाँति पूछे नहिं कोई हरि को भजै सो हरि का होई।'**

01.pmd 68 5/25/2015, 3:44 PM

वह सकरा दरवाजा जो द्विजों के लिए ही खुला था आज वैश्य, शूद्र, मुसलमान, स्त्री सबके लिए खुल गया। उस पर लिख दिया गया रैदास, कबीर, धन्ना, संत, सुरसुरी, पद्मावती, आओ सबका स्वागत करने के लिए यह रामानन्द बाँहे फैलाए खड़ा है। यह था तो अध्यात्म और भक्ति का द्वार लेकिन इस द्वार ने एक महान सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया। यही थी स्वामीजी की द्राविड़ भक्ति जिसके प्रेम ने समाज में किसी वर्ण या वर्ग को पराया या अछूत नहीं रहने दिया। कट्टर सनातनी समाज तमाशा देखता रह गया और यह भक्ति गंगा सारे बंधनों को तोड़कर इस धरती के सभी दलितों, पिछड़ों, वंचितों को कृतार्थ करती चली गई।

इस भक्ति को जनमन के और निकट लाने के लिए स्वामीजी ने गरुड़ पर सवार आकाशगामी, चक्रसुदर्शनधारी लक्ष्मी नारायण से प्रार्थना की। हे सत्यनारायण, लक्ष्मी नारायण अब तुम अपने राम रूप में जैसे सहज ही शबरी, केवट, कोलभीलों के घर आकर विराजते थे हमारे हृदय में भी विराजो! तुम सबके राम बनो।

उन्होंने अपना ठिकाना गंगा के पंचगंगा घाट पर बनाया। पंचगंगा वह स्थान है जहाँ माना जाता है कि गंगा, जमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा नामक पाँच नदियाँ आकर मिलती हैं। मानो स्वामीजी संदेश देना चाहते थे कि द्राविड़ भक्ति वह भक्ति है जिसमें गंगा, जमुना, सरस्वती जैसी शास्त्रीय भी और किरणा तथा धूतपापा जैसी लोक विश्रुत अनाम भी मिले हुए हैं। पंचगंगा से आगे की भक्ति गंगा लोक से लेकर वेद तक जितने भी हैं किसी को छोड़कर नहीं आगे बढ़ेगी।

बहुत दिनों तक स्वामीजी की यह भक्तिधारा निर्वाध बहती रही। उसके इस संदेश से दिगदिगंत गूँजता रहा। लेकिन कुछ काल के बाद एक बार फिर उसी संकीर्णता ने जोर पकड़ा। उसका कोप भाजन बना पंचगंगा। एक युग का प्रवर्तन करने वाला यह जाग्रत आलोक केन्द्र धीरे-धीरे काशी में गंगा के स्थान पर सरस्वती की तरह अंत: सलिला बनता चला गया। परन्तु इसी के साथ एक बड़ी बात यह भी दिखाई देने लगी कि इसी के कोख से पैदा कई ऐसे सूरज-चाँद सितारों के प्रकाश से सारे देश का आकाश जगमगाने लगा। देश दुनिया की निगाहों से ओझल होता पंचगंगा लोगों की निगाहों के बजाय उनके हृदय में उतरता चला गया। जहाँ-जहाँ कबीर, रैदास, धन्ना, तुलसी, सेन की चर्चा पहुँची उनके साथ स्वामी रामानन्द और पंचगंगा

01.pmd 69 5/25/2015, 3:44 PM

की सुगंध भी पहुँचती रही।

स्वामी जी के इस महान्, अनुपम, योगदान को न कभी भुलाया जा सकता है न मिटाया जा सकता है। वे अमर हैं और अमर रहेंगे। इन सबके बावजूद हम हाथ पर हाथ रखकर तो नहीं बैठ सकते। आज हम जिस मोड़ पर खड़े हैं उसने एक नये प्रकार की चुनौती हमारे समक्ष प्रस्तुत की है। स्वामी जी के समय जीवन के समक्ष जो चुनौती थी उसका समाधान एक धार्मिक या आध्यात्मिक चिंतन के द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता था। लेकिन आज की समस्या का समाधान केवल धर्म की परिधि में नहीं आता दिखाई देता। आज हरएक को अपनी अलग पहचान चाहिए। सब एकाकी रहना चाहते हैं। संयुक्त कोई नहीं। हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध में घर बँट चुका है। दलित कह रहे हैं अब हमें भी अलग करो क्योंकि दलित और सवर्ण धर्म दोनों अलग-अलग धर्म हैं। कबीर अलग हैं, रैदास अलग हैं। कल तक अलग रहना मजबूरी थी। सामाजिक वंचना थी। स्वामी रामानन्द ने इस वंचना से मुक्ति दिलाई। आज हम इस बिखराव से कैसे बचें। यह एक बड़ा सवाल है। तब राम काज था समाज के छूटे हिस्से को जोड़ना आज का रामकाज है इस विखण्डन को रोकना।

इस विकट स्थिति में भी हमें पूर्ण विश्वास है कि ज.गु. रामानन्द ही हमारी आशा के केन्द्र हैं। क्योंकि उस महान परम्परा की मशाल जिस तेजस्वी संत के हाथ में है उसकी शक्ति पर इस पूरे देश को विश्वास है। वे सारे देश को जोड़ने के अभियान पर निकल पड़े हैं। पूज्य श्रीरामनरेशाचार्य में हर टूटे हुए को जोड़ लेने और हर रूठे हुए को मना लेने की अद्भुत प्रतिभा दिखाई देती है। वे 'राम काज' को 'आम काज' से अलग नहीं देखते। उनके निकट आकर अभेद्य राजनैतिक दीवारें भी भहरा जाती हैं। उनका प्रेम किसी को पराया मानता ही नहीं। उनके लिए कोई भी सीमा रेखा नहीं इसलिए कोई भी उनके लिए दूसरा हो ही नहीं सकता।

उनके प्रेम में वह ताकत है जिसके आगे आज नहीं तो कल हर विलगाव को पराजित होना होगा। वे स्वामी रामानन्द के उत्तराधिकारी ही नहीं मुझे उनके वरदपुत्र दिखाई देते हैं। क्षणभर उनके पास बैठना मन के हर कलुष को धो देना है। वे पारस हैं। प्रेम के पारस। जिसे छू दे चमक उठे।

●

01.pmd 70 5/25/2015, 3:44 PM

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य

ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल

दक्षिण-भारत में भक्ति का शंखनाद आलवारों ने फूँका। आलवार अपने विचार अपनी मातृभाषा तमिल में व्यक्त करते थे जिनको उनके अनुयायियों ने तमिल वेद कहा। इनकी भक्ति भागीरथी भाषा रूपी भँवर में फँसकर तमिल देश तक ही सीमित रह गई। इस अवरोध को आचार्य रामानुज ने प्रस्थानत्रयी पर भाष्य रचकर समाप्त किया। भक्तिभागीरथी निर्बाध सम्पूर्ण देश में कलकल नाद करती हुई प्रवाहित होने लगी। रामानुजाचार्य की भक्तिभागीरथी को और बलवान बताया निम्बार्क, मध्व, विष्णु, बल्लभ, चैतन्य आदि ने।

सर्वाधिक वेगवान् बनाने वालों में अन्यतम नाम है– स्वामी रामानन्द का जो उत्तरभारतीय, महान् योगीराज थे। जिन्होंने इस धराधाम पर लम्बा जीवन जिया व हजारों की संख्या में वैरागी शिष्य बनाकर पूरे भूमंडल पर फैलाया। रामभक्ति का सघन-प्रचार प्रसार किया। देशभाषा में रचनाएँ लिखकर सामान्य जीवों को अध्यात्म पथ पथिक बनाया। इनके शिष्यों में प्रधानशिष्य थे– स्वामी अनंतानंद।

स्वामी अनंतानंत अधिकांशत: गुरु रामानन्द की सेवा में रहते हुए गुरुगद्दी श्रीमठ के अधिष्ठाता बने। इन्होंने भी भक्ति भगीरथ के बेग को मंद न होने दिया। उत्तरोत्तर बढ़ाते ही रहे। इन्हीं महाभाग के अनेक प्रभावशाली शिष्यों में से एक प्रधान शिष्य थे स्वामी कृष्णदास पयोहारी जिन्होंने नाथों को भगाकर गलता में रामावतसम्प्रदाय का झंडा फहराया।

इनके शिष्यों ने रामभक्ति भागीरथी की ऐसी धाराएँ चारों ओर विस्तारित की कि धीरे-धीरे काशी की श्रीमठ-परम्परा गलता में स्थापित हो गई। श्रीमठ प्रभावहीन होता चला गया। यह स्थिति वर्षों, दशकों तक नहीं, शताब्दियों तक चलती रही। श्रीमठ का वैभव, पुस्तकालय, जमीन आदि सभी काफी

संत-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान्, कई अज्ञात संतों के साहित्य पर महत्त्वपूर्ण खोज जयपुर।

01.pmd 71 5/25/2015, 3:44 PM

सीमा तक विलुप्त होती गयीं। समय ने करवट बदली। रामावत सम्प्रदाय के अनेक महंतों, संतों, नागाओं, तपस्वियों, विद्वानों व सहृदय सेवकों ने सन् १९७७ में परमविद्वान्, सुलेखक, सुकवि कुशलवक्ता, आनन्दभाष्य को खोजकर विद्वत्वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करने वाले स्वनाम धन्य भगवदाचार्य जी महाराज को श्रीमठ की आचार्यपीठ का रामानन्दाचार्य स्थापित किया। श्री भगवदाचार्य जगद्गुरु पीठ पर अधिक समय न रह सके। वे क्रूरकाल के हाथो सन् १९७८ में ही साकेतगामी हो गए।

इनके पश्चात् इन्हीं के शिष्य श्रीशिवरामाचार्य रामानन्दाचार्य की गद्दी पर अभिषिक्त हुए ये सन् १९८८ तक विराजमान रहकर साकेतगामी हुए। श्री शिवरामाचार्यजी भी परमविद्वान्, परम्परा पोषक, कुशल उपदेष्टा जगद्गुरु थे। एक बार इनका पदार्पण तीर्थराज पुष्कर में हुआ। उस समय अन्तर्राष्ट्रीय-रामस्नेहि-सम्प्रदायाचार्य श्रीस्वामी रामकिशोरजी भी पुष्कर में ही विद्यमान थे। चूँकि उक्त सम्प्रदाय का परम्परया सम्बन्ध अनन्तानंदजी से जुड़ता है। अत: जगद्गुरु शिवरामाचार्यजी को आचार्यजी ने अपने आश्रम रामद्वारा में आमंत्रित कर प्रवचनादि की व्यवस्था करायी। प्रसंगवश वहाँ उपस्थित विद्वान् रामस्नेही संतों ने गुरुपरम्परा का उल्लेख करते हुए रामानन्दाचार्य को भी रामानुज सम्प्रदाय के श्री राघवानन्दजी का शिष्य बताया। जगद्गुरु इस मन्तव्य से सहमत नहीं थे।

ज.गु.रा. श्री शिवरामाचार्य जी के साकेत गमन के पश्चात् श्रीरामनरेशाचार्य का इस पद पर अभिषेक हुआ। जगद्गुरु रामनरेशाचार्य का जन्म सन् १९५४ में बिहार प्रान्त के भोजपुर जिलान्तर्गत ग्राम परसिया में ब्राह्मणकुल में हुआ। जन्म नाम श्रीकृष्ण शर्मा था। वह दर्शनशास्त्र में आचार्य तक शिक्षा प्राप्त कर ११ वर्ष तक विद्यार्थियों को दर्शनशास्त्र भी पढ़ाया। सन् १९८८ में रामावत-सम्प्रदाय के वरिष्ठ महंतों, संतों ने आपको रामानन्दाचार्य पीठ पर विराजमान किया। सन् २०१४ में आपका आयुष्य ६० वर्ष व आचार्य पीठ पर बिराजे हुए को २५ वर्ष हो रहे हैं।

इस उपलक्ष में एक अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित करने की श्रीमठ की योजना है। जगद्गुरु श्रीरामनरेशाचार्यजी से व्यक्तिश: मेरा तीन-चार बार मिलना हुआ है। आपका व्यक्तित्त्व महान् है; वाणी में ओज है तो प्रसाद गुण भी है। विद्वानों का आदरसत्कार करना आप भली-भाँति जानते हैं। आप स्वयं कुशलवक्ता होने पर भी बहुत अच्छे श्रोता भी हैं। विद्वानों के भाषणों को सुनकर उनसे पूर्वाग्रह मुक्त होकर चर्चा करना आपका स्वभाव है। जब आप

01.pmd 72 5/25/2015, 3:44 PM

धाराप्रवाह प्रवचन देते हैं तब दर्शन के गूढ़ विषयों को भी सरल एवं सुस्पष्ट भाषा में समझाते हैं ताकि सामान्य श्रोता भी उन गूढ़ातिगूढ़ विषयों को समझ सकें।

आप काशी जैसी विद्वानों की नगरी में बिराजते हैं जहाँ शब्द व वाक्य तक पर भी तर्क-वितर्क होते हैं। ऐसे नगर में रहकर भी आप निरंतर विद्वानों द्वारा प्रशंसित हैं, अभ्यर्थनीय हैं। इसका तात्पर्य इतना ही है कि आप में विद्वता कूटकूट कर भरी है। आपके आचार्यत्व काल में रामावत-सम्प्रदाय का विस्तार व प्रचार-प्रसार दिनानुदिन बढ़ता जा रहा है।

जब मैं इलाहाबाद कुंभ में गया तब मुझे ज्ञात हुआ कि आचार्यश्री की श्रमसाधना से ही आद्य रामानन्दाचार्य की जन्मभूमि जो किन्हीं कारणों से अन्य लोगों के अधिकार में चली गई थी पुनः रामावत सम्प्रदाय में आ गई है और अब हरितमाधव भगवान की सेवापूजा रामावत संप्रदाय की अर्चापद्धति के अनुसार होती है। आचार्यश्री के समय में कई भवन, संस्थाएँ श्रीमठ से जुड़ी हैं और भविष्य में भी जुड़ेंगी ऐसी आशा है।

आचार्यश्री साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में सर्वाधिक सचेष्ट हैं और श्रीमठ से आपके अनेक सम्प्रदाय से सम्बद्ध ग्रन्थों का प्रकाशन करवाया है। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'वैष्णवमताब्जभास्कर' है जिसमें रामावत्-सम्प्रदाय का आचार-विचार दर्शन व्याख्यायित है।

मैं ऐसे महान् व्यक्तित्व के दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ तथा अपना प्रणिपात निवेदन करता हुआ भगवान् श्रीराम की अखंड निश्चल भक्ति प्राप्त करने की कामना करता हूँ।

●

01.pmd 73 5/25/2015, 3:44 PM

कर्तृत्त्व से कृतकृत्य होना

कौशलेन्द्र पाण्डेय

पूज्यपाद श्री उड़िया बाबा को कल्याण के किसी अंक में पढ़ा था; शायद संत विशेषांक था यह। इसके अंतर्गत एक श्लोक के माध्यम से उन्होंने संत विषयक अपनी बात कही थी, यह कि प्रत्येक सम्प्रदाय में अच्छे से अच्छे संत होते हैं; हमे धर्म या सम्प्रदाय के पचड़े में न पड़कर उन्हें उनकी बहुविध उदात्तता की दृष्टि से वरीय एवं अनुकरणीय मानना चाहिए। यह भी व्यवस्था उन्होंने दी कि ऐसे संत की उत्तमता को किसी देश अथवा काल की सीमा से आबद्ध करना भी उचित नहीं, क्योंकि उनकी अनुकम्पा से ही वे अस्तित्वशील रहते हैं, प्रकारान्तरत: उनकी खूबियों का यदि हस्तामलक विवरण दिया जाये तो वे हैं निरपेक्षता, भगवत्परायणता, शान्तिप्रियता, अहंकारशून्यता, द्वन्द्वशून्यता, निष्परिग्रह और उनकी शान्त, निर्ममत्व एवं समदृष्टि वाली प्रवृत्ति! यथा : 'सन्तोऽनपेक्षा मश्चित्ता; प्रशान्त: समदर्शन:/ निर्ममा निरहंकारा निर्द्वन्द्वा निष्परिग्रहा:।।'' ज्ञानी और भक्त संत-महात्मा चमत्कार प्रदर्शन से दूर भी रहते हैं। हाँ, उनकी कृपा विशेष से उनके स्तर से किसी के प्रति कोई मनचाहा चमत्कार हो जाय तो हमें उसे उनकी दयालुता ही समझनी चाहिए। वस्तुत: संत अकिंचन होता है, नितान्त अकिंचन!

किसी पहुँचे हुए साधु को भी संत कहा गया है। आवश्यक नहीं कि वह विरक्त और त्यागी हो। गृहस्थ और कर्मयोगी महात्मा भी संत रूप में मान्य-सम्मान्य होते हैं। गोस्वामी जी के अनुसार तो नवनीत की मानिन्द मानस वाला व्यक्ति भी संत है, अगर वह ताप के बजाय किसी भी प्राणी की व्यथा को देखकर संवेदित हो यथा संभव या फिर यथापेक्षित उसकी मदद भी करे। वह उस व्यक्ति को भी संत की संज्ञा देते हैं जो दूसरे के हित में ही उसकी विवेक शून्यता का विरोध करते हुए उत्पीड़ित हो। यथा : ''उमा संत कै इहै बड़ाई। मंद करत जे करहि भलाई।' संत श्रीरामकृष्ण की तरह परमहंसी वृत्ति वाले भी होते हैं; अपनी विद्वता, विवेकशीलता एवं परीक्षा

वरिष्ठ साहित्यकार, पूर्व विक्रीकर आयुक्त मारुतिपुरम, लखनऊ

पटुता के कारण वह जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य, स्वामी राघवाचार्य, रामानन्दाचार्य और इन्हीं की परम्परा में सर्वश्री अनंतानन्द, पौहारी कृष्णदास, अग्रदास, सुरसुरानन्द, माधवानंद, गरीबानन्द, लक्ष्मीदास, गोपालदास, नरहरिदास और गोसाईं तुलसीदास प्रभृति कितने ही संत व्यक्तित्व तो अग्रिम पांक्तेय संत हैं। रामानन्दाचार्य जी के जिन प्रमुख शिष्यों के नाम इस सूची में नहीं सम्मिलित हो पाये, वे भी संत हैं क्योंकि उनमें भी संतों की उल्लिखित विशिष्टताओं का सम्यक् समावेश था।

काशी स्थित श्रीमठ के आदि आचार्य थे स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज। हम उन्हें संत भी कह सकते हैं, विशालमना एवं मानव कल्याणकामी महासंत भी। ये पिता श्रीपुण्य सदन और श्रीमती सुशीला देवी के आत्मज रूप में अवतरित हुए। इनके बारे में तो लोकमान्यता भी है कि श्रीराम के आचरण वाले ''रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले।'' एक, अन्य निकष पर भी इनके त्रेतायुगीन श्रीराम होने की मान्यता सर्वथा तथ्यस्वरूप है। सर्वसंज्ञान में है कि विजातीय तत्वों ने जब-जब वैदिक मान्यताओं और नीति, सदाचार और करुणा प्रभृति मानवीय मूल्यों पर आधारित भारतीय जीवन शैली पर प्रहार किया, जनजीवन को विषाक्त बनाने के कुत्सित प्रयोजन से हमारी पावन एवं पाप मुक्त परम्पराओं के विरुद्ध वातावरण सृजित करने का कुचक्र रचा, उनके समूलोन्मूलनार्थ जगन्नियंता का किसी न किसीरूप में प्राकट्य हुआ; कभी दाशरथि रूप में राम कभी वासुदेव कृष्ण। उन्होंने तो भक्त बालक प्रह्लाद की रक्षार्थ व्याघ्र और मानव का मिलाजुला रूप भी धारण किया, सृष्टि के त्रयताप निवारणार्थ वाराह और कछुआ बनने में देर नहीं की। जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य का जन्म भी अनेकशः विद्रूप अपस्थितियों से भारतीय जनजीवन को निजात दिलाने के महत्योद्देश्य से हुआ। वह एक अत्यन्त विलक्षण युगान्तरकारी एवं भारतवासियों में नवचेतना के प्रवर्तक के रूप में आसृष्टि स्मरणीय रहेंगे। तथ्यतः वह धर्म, समाज के साथ-साथ भक्ति के स्वरूप के बारे में समान रूप से चिंतित थे। 'वे जिस सम्प्रदाय में दीक्षित हुए वह विष्णोपासक था। इस उपासना ने रामभक्ति से पूर्व ही कृष्णभक्ति की प्रेरणा को जाग्रत कर दिया था। जयदेव के गीत-गोविन्द ने तो कृष्णोपासना को अतिरिक्त ऊर्जा प्रदान की ही, समसामयिक कतिपय अन्य स्थितियों तथा उपासना पद्धति की सर्वस्वीकार्यता ने उसे उत्तरोत्तर गति दी। ऐसी स्थिति से निपटने के लिये प्रखर मेधा के धनी रामानन्दाचार्य ने विष्णु और श्रीकृष्ण के स्थान

01.pmd 75 5/25/2015, 3:44 PM

पर एक ऐसे आराध्य की आवश्यकता का अनुभव किया जो देशवासियों के शौर्य, अलोभ, परिहार, सहिष्णुता और संघर्षशीलता जैसे मनोभावों को एक साथ स्पन्दित और उत्प्रेरित कर सके। तदनुसार उपयुक्तता की दृष्टि से श्रेष्ठतम याकि आदर्श विकल्प थे श्रीराम! स्वयं की व्यावहारिक दयालुता के आधार पर हिन्दुओं के इस्लाम के पक्ष में क्षरण को अंकुशित करने और हिन्दू-मुसलमान-सूफियों, शूद्रों एवं सत्तासीन व्यक्तित्वों को श्री सम्प्रदाय (रामावत) से जोड़ने के काम में इनका जननायक रूप भी दिखा, संत नायक का भी स्वामी जी ने हिन्दू नारियों की सुरक्षा के निमित्त अपने द्वादश प्रमुख शिष्यों में दो नारियों को भी स्थान दिया। प्रथम थी त्रिपुरा के पण्डित प्रभाकर शर्मा की आत्मजा पद्मावती तथा द्वितीय लखनऊ जनपदान्तर्गत 'परवम' ग्रामवासी पं. सुरेश्वर प्रसाद शर्मा की पड़ोसन 'सुरसरी' जिन्हें स्वामी जी ने दिव्यातिदिव्य शक्तियों से सम्पन्न करके दक्षिण भारत के आततायी सूबेदार मलिक काफूर को निर्णायक रूप से पराभूत करने का दायित्व सौंपा था। वे अंततः सफल भी रहीं। किसी प्रकार के भेदभाव एवं आंतरिक विवाद की किंचित्मात्र परवाह न करके उन्होंने कबीर को शिष्यत्व के साथ साथ महाभागवत की उपाधि भी प्रदान की हालांकि वह एक जुलाहा परिवार से सम्बन्धित होने के कारण मुसलमान थे। रैदास को शिष्य बनाने के अवसर पर स्वामी जी ने भारतीय स्तर पर सभी संतों का महाभोज आयोजित करके शेष वर्ण वाले हिन्दुओं से दलितों-अस्पृश्यों के प्रति सौमनस्य का भाव रखने तथा उन्हें समादरणीय समझने का सुस्पष्ट एवं साहसिक आह्वान भी किया। धन्ना जाट के मन में उसकी किशोरावस्था में ही, ईश्वरानुभूति कराई अनन्तर उसे अपना शिष्य भी बना लिया। राजस्थान में अरावली की उपत्यकाओं की गोद में अवस्थित गागरोनगढ़ के नरेश पीपा जी भी जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के प्रभाव-परिवेश में आये -आजीवन रामोपासना को समुचित तरजीह भी दी।

एसेज ऐण्ड लेक्चर चीफली ऑन दि रिलीजन ऑफ हिन्दूज (वाल्यूम-I) में अंग्रेज जॉ. एच. एच. विल्सन ने एक स्थान पर स्वामी जी के आवासीय परिदृश्य को अनुवर्ती शब्दों में रेखांकित किया था– 'श्री रामानन्द स्वामी के रहने का स्थान काशी के पंचगंगा घाट पर था। वहाँ उनके अनुयायियों का एक विशाल श्रीमठ काशी के पंचगंगा घाट पर था जिसे मुसलमान बादशाहों ने तोड़वा डाला। वर्तमान में उसी मठ के समीप एक पत्थर के चबूतरे पर उनकी चरण पादुकायें बनी हैं। काशी में रामानंद सम्प्रदाय के और भी बहुत

01.pmd 76 5/25/2015, 3:44 PM

से मठ बने हुए हैं जिनमें उनके प्रख्यात अनुयायी रहते हैं जिनकी एक प्रधान पंचायत बनी है जिसका प्रभुत्व भारत के रामानन्दियों पर प्रधान रूप से है।''

अपनी साकेत वापसी के अवसर पर जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने सभी से यह अपेक्षा की थी कि उनके स्तर से लोक कल्याण के लिये खोले गये सभी मार्गों को यथावत् बनाये रखने में यथावश्यकता कुछ न कुछ नव्यता तो लायेंगे ही, उन्हें सार्वजनीन बनाने याकि उनके लोक प्रचार व प्रसार का निर्वाह अपने 'कर्त्तव्य' की तरह करेंगे जिससे उनका सातत्य बाधित न हो और श्रीमठ तथा रामानंद सम्प्रदाय की गतिविधियाँ पूर्ववत् स्पन्दनशील रहें। साम्प्रतिक जगद्गुरु (स्वामी रामनरेशाचार्य के अनुसार तो महाप्रयाण से पूर्व सर्वोपास्य आदि आचार्य ने समस्त शिष्यों एवं अपने भक्तों को एक आध्यात्मिक दृष्टि भी दी थी– 'भगवतस्मरण ही जीवन का सार है; इसके द्वारा जीवन परमशान्ति को प्राप्त कर धन्य-धन्य याकि कृतार्थ हो जाता है; आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैहिक दुखों की निवृत्ति भी हो जाती है। परमानन्द सिन्धु श्रीसीताराम जी के नित्यधाम साकेत लोक को प्राप्त कर उनकी समीपता, नित्यलीलाओं के दर्शन एवं सेवा के माध्यम से कोई भी प्राणी दिव्यानन्द सिन्धु में गोते लगाता है। ऐसे वाक्यों से उन्होंने वासुदेव श्री कृष्ण की ''अनित्यसुखं लोकम्'' (अर्थात् अनित्य संसार नित्य सुखमय कैसे हो सकता है) की उक्ति को अद्यतनता प्रदान की है।

'श्रीमठ प्रकाश' कृति (प्रकाशन वर्ष २००१) मध्य प्रदेश सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भोपाल की प्रस्तुति है। इसके प्रणेता स्वामी रामनरेशाचार्य जी ने 'आचार्यशी:' शीर्षकान्तर्गत श्रीमठ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आकार आदि का अपने पाठकों को आचमन कराते हुए उसके भविष्य की शुभता की पूर्व कल्पना की प्रक्रिया में कतिपय गतिरोधों का उल्लेख भी किया है। इनके अनुसार सम्प्रदाय के आदि आचार्य प्रवर ने अपनी परमोदात्त भावना से समाज के प्रत्येक वर्ग को श्रीराम भक्ति के परम मंगल महापथ पर चलाकर उसे परम कल्याण से जोड़ते हुए देश को विखण्डन से बचाया था, वर्त्तमान में भी वहीं आचार्य स्थितियाँ सर्वत्र दृष्टव्य हैं। हम सभी सम्प्रदाय एवं जातिगत भेदभाव से ग्रस्त हैं; समाज और सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रत्येक निर्णय या प्रमुख निकष है जाति और धर्म। स्वामी जी के अनुयायी ही श्रीमठ की मौलिक छवि को तार-तार करने के लिये कटिबद्ध हैं। वे अपने उद्धारक पथ प्रदर्शक तथा अप्रतिम क्रान्तधर्मी अध्यात्म पुरुष के उल्लिखित निर्देशों की अनदेखी

01.pmd 77 5/25/2015, 3:44 PM

कर रहे हैं जो कम चिन्ता की बात नहीं। पूज्यपाद श्रीरामनरेशाचार्य जी ऐसी विषम स्थिति जिसमें ब्राह्मण ही पारस्परिक कलह से ग्रस्त है, असवर्ण वर्ग तथा इतर धर्मावलम्बी भी श्रीमठ या कि श्रीसम्प्रदाय की लोकहितोन्मुखी परम्परा जनित कीर्ति को विस्मृत कर चुके हैं। आचार्यवर को तिमिराच्छन्न आसन्न विरूपताओं के शमन की दिशा में श्रीमठ कल और आज' विषयक सत्साहित्य प्रकाश स्तंभ-सा लगा। १८ जनवरी २००१ में डॉ. विवेकी राय के स्तर से सम्पादित कृति 'श्रीमठ प्रकाश' के अंतर्गत लोक विश्रुत लेखन धर्मियों में उल्लेखनीय हैं सर्वश्री राम कुमार दास, वैकुण्ठनाथ उपाध्याय, मारुति नन्दन तिवारी, राम मिलनदास शास्त्री, महन्त रामादास, भरत शर्मा, हरिशंकर, अर्जुन प्रसाद शुक्ल, मोहनलाल तिवारी (प्रो.) वासुदेव सिंह, रामचन्द्र सिंह, प्रेम नारायण सिंह, नाभा जी भक्तमाल, वेणी प्रसाद शर्मा, गंगा शरण शास्त्री, स्वामी योगिराज, वेंकटेश शर्मा, गंगा सागर राय, वैदेही कांत शरण, रामेश्वरानन्दाचार्य, मुरलीधर पाण्डेय, नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, भोलाशंकर व्यास, माधवाचार्य, वेद प्रकाश गर्ग तथा कुछेक अन्य।

जगद्गुरु की प्रेरणा के फलस्वरूप विख्यात साहित्यधर्मी डॉ. उदयप्रताप सिंह के स्तर से सम्पादित ''जगद्गुरु रामानन्दाचार्य : श्री सम्प्रदाय (रामावत) : विविध आयाम' भी ११ जून २०११ भी प्रकाशित हुआ। यह वस्तुत: श्रीमठ समग्र है। 'नमोऽस्तुरामाय' शीर्षकीय आशीर्वचनों में आचार्य प्रवर ने रेखांकनीय बात यह कही है कि आदि आचार्य का बारम्बार स्मरण किया जाना सर्वथा श्लाघ्य है। वह हिन्दी के प्रमुख उन्नायकों में अग्रगण्य हैं तो भी उन्हें खेद है कि डॉ. विवेकी राय के 'श्रीमठ प्रकाश के' बाद के पूरे एक दशक के अंतराल में उनके बहुआयामी वैराट्य विषयक चिन्तन, लेखन तथा प्रकाशन कम ही हो पाया; जो और जितना हुआ वह चिंतन के निकष पर अपस्तरीय और अप्रशस्य ही कहा जायेगा। अपने अभिमत के प्रस्तर द्वै के अंतर्गत तो उन्होंने सुसंस्कृत सधुक्कड़ी में लगभग एक दर्जन ऐसे विषयों को सार्वजनीन भी किया जिन पर अनिवार्यत: लिखा जाना चाहिये था; किन्तु चिन्तन गांभीर्य तथा शोधपरकता के साथ। प्रखर आचार्य ने उल्लिखित श्रीमठ समग्र के लगभग दो दर्जन विद्वानों की प्रशंसा की है कि उन्होंने पूर्ण तत्परता, संयम तथा अदम्य प्रयास के फलस्वरूप पूर्व पंक्तियों में इंगित लगभग सभी विषयों को आलेखबद्ध करके धर्म, समाज, राष्ट्र तथा मानवता का महान उपकार किया है, उनके मानस की तिक्ति का निर्मूलन भी। उन्होंने आलेखों की सर्वांगीण

01.pmd 78 5/25/2015, 3:44 PM

स्तरीयता से उत्फुल्लित होकर लेखकों को रामानन्दीय आशीर्वाद से अभिषिक्त भी किया है। उनकी बहुत पहले से प्रबल कामना रही है कि श्री सम्प्रदाय (रामावत) तथा उसके प्रवर्तक श्री रामानन्दाचार्य से सम्बन्धित साहित्य प्रभूत मात्रा में सर्वसुलभ कराया जाय। इसकी पूर्ति सुनिश्चित करने के लिये उन्होंने 'श्रीमठ समग्र प्रकाशन' की एक महत्वाकांक्षी योजना भी निर्मित की है जिसके अनुसार अब श्रीरामानन्द सम्प्रदाय (रामावत) प्रवर्तक, सिद्धान्त, रामभक्ति का विस्तार, परवर्ती रामभक्ति की सगुण-निर्गुण परम्परा प्रभृति अन्यान्य विषयों को ध्यान में रखकर ''श्रीमठ समग्र'' का प्रकाशन निरंतर हो रहा है। उसके दो खण्ड डॉ. उदय प्रताप सिंह के संपादन में प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रसंगानुकूल है कि श्रीमठ के आदि आचार्य की जन्मस्थली तीर्थराज प्रयाग स्थित हरित माधव मंदिर से लोकार्पित हुए बृहत्ग्रंथ 'तीर्थराज प्रयाग और रामभक्ति का अमृत कलश' के संक्षिप्तोल्लेख का। मेरी अपनी धारणा के अनुसार महाराज जी की सत्प्रेरणा से सर्वसुलभ हुए अनेक दृष्टि-दा मानक ग्रन्थों की शृंखला की ये भी एक अविस्मरणीय कड़ी है। इसके अनेक विषयान्तर्गत आलेख चाहे वह कुम्भ, कुम्भ के दौरान शाही स्नान, कुम्भ के सांस्कृतिक महत्व या फिर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य प्राकट्यधाम /११६, प्रयागराज में आचार्य राज/ १२४, पंचगंगा और रामानन्दाचार्य/ १३३, रामानन्द की सार्वभौम विचारधारा/१३३, वैदिक आलेक में जगद्गुरु रामानन्दाचार्य की राष्ट्रीय चेतना/ १४० स्वामी रामानन्द की राष्ट्रीय चेतना : वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य/ १४६ तथा अन्यान्य जो ग्रन्थ के पृष्ठ १५२, १६७, १७६, १८४, २५२, २६४, २९६, ३०९ और ३३६ पर सुलभ हैं। सभी पूर्णरूपेण सुविचारित होने के साथ-साथ रामानन्दी परम्परा को अद्यतन प्रासंगिकता से जोड़कर अनेक आयामी बनाते हैं। मानव, समाज और समष्टि के दुख से संवेदित होकर जो इनका कल्याण कामी हो, उनके भविष्य को उपयुक्ततम एवं आसृष्टि अविस्मरणीय शिल्प देने की नि:स्वार्थ साधना करे, जन्मना एवं कर्मणा तत्वज्ञानी होता है वह। मुण्डकोपनिषद् के एक प्रसंग के अनुसार वृक्ष की एक शाखा पर बैठे दो पक्षियों में मादा पक्षी दूसरे से प्रश्न करती है– श्रेष्ठ मानव कौन है? तत्ववेत्ता पक्षी ने लोक श्रेयष्कर इस प्रश्न के उत्तर में कहा– मानव दो प्रकार का होता है– प्रथम जो कबन्ध मानसिकता का हो, तात्पर्यत: जो केवल स्वयं के लिये जिये, उसकी आँखें, कान, मुँह सभी पेट में ही होते हैं; वह कंठ से नीचे वाले अंगों को पोषित-संपोषित करते रहने में अपने

01.pmd 79 5/25/2015, 3:44 PM

जीवन को सफल मानता है। द्वितीय वह जो अनपे कण्ठ से ऊपर के भाग को सम्पोषित करता है; स्वयं के मस्तिष्क को लोकहितोन्मुखी दिशा में प्रवृत्त करता है, परमार्थ ही जिसका व्यक्तिगत स्वार्थ है। यही श्रेष्ठ मानव रूप में मान्य है। वर्त्तमान जगद्गुरु, श्रीमठ के आदि आचार्य को अपने आदर्श स्वरूप ग्रहण कर चुके वह चाहते हैं कि सभी जाति, धर्म एवं सम्प्रदायानुलम्बियों, चाहे वे पीड़ित-प्रपीड़ित हों अथवा संत पीपा जी की प्रस्थिति के श्रीमठीय रामानन्दी परम्परा से जुड़ें, उसे प्रचारित-प्रसारित करें, नए-नए कबीर, रैदास, पद्मावती-सुरसरी तथा रामानन्दी चिन्तन से संबलित अन्यान्य नारी तथा पुरुष संत चिह्नित हों और व्यक्तिगत स्वार्थ के तहत वह (वर्त्तमान जगद्गुरु) स्वयं आत्मतुष्टि प्राप्त कर सकें तथा कीर्तिलब्ध हों– बस!

जगद्गुरु आश्वस्त तो हैं अपने तथा रामानन्दी परम्परा के प्रति निष्ठ सारस्वत साधकों तथा अनुयायियों से लेकिन शासकीय सोचजन्य अनेक नीतियाँ किसी न किसी तरह लक्ष्यप्राप्ति में आड़े आ सकती हैं। मुझे विश्वास है कि उनके निराकरण के और सामंजस्य स्थापित करने के निमित्त किन्हीं न किन्हीं युक्तियों पर वह पूर्व से ही चिन्तनशील अवश्य होंगे।

●

01.pmd 80 5/25/2015, 3:44 PM

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य : स्वभाव एवम् अनुभाव

प्रभुनाथ द्विवेदी

आदिगुरुं श्रीसीतानाथं रामानन्दं जगद्गुरुम् ।
वन्दे श्रीमद्रामनरेशमधुना श्रीमठपीठधुरम् ।।
वन्दे धर्मदेशिकं प्रवरं रामभक्तिनिरतं सततम् ।
रामभावपीयूषं वितरति साधु कृती यः स्वाभिमतम् ।।
प्रसरति यस्य शुभदसन्देशो ग्रामे नगरे जने-जने ।
संसारोऽयं राममयः खलु को भेदः स्वजने विजने ।।
प्रेमदया करुणा कर्त्तव्या स्मर्तव्या सा रामकथा ।
प्रचरतु विलसत्वखिलभूतले शुभावहा सद्धर्मप्रथा ।।
विश्रुतरामनिष्ठसमुदारो रामनरेशो व्रती यतिः ।
जीवतु चिरं धर्मरक्षायै तस्मै प्रहिता प्रणतिततिः ।।

परम श्रद्धास्पद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज के सम्बन्ध में अपने विचार अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त कर मैं स्वयं को अत्यन्त सौभाग्यशाली अनुभव कर रहा हूँ। रामभावैकनिष्ठ ज्ञानगरिष्ठ वरिष्ठ और विशिष्ट परम साधक सन्तशिरोमणि महाराजश्री के विषय में विविधवर्णों के विन्यास का प्रयास कर लेखनी को भी सारस्वत स्रोतप्रवाह में अवगाहन कर पवित्र होने का शुभ संयोग बना। 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः'– इस कविकुलगुरूक्त न्याय का अनुचिन्तन कर अन्तःकरण में भीति का उद्वेग होने पर भी आचार्यश्री के चरणों में प्रीति के कारण अपनी शुचि रुचि की प्रेरणा से ही प्रवृत्ति की वृत्ति बन रही है। अतः, क्वचित्स्खलन हो जाय तो क्षमा-याचना का अधिकारी बना रहूँ– यह विनम्र निवेदन है।

अद्भुत संयोग था उस पावन प्रसङ्ग का। उधर प्रयाग में महाकुम्भ के आयोजन की तैयारियाँ चल रही थीं और इधर काशी में भी परम पवित्र रामभक्ति

पूर्व प्रो., महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

01.pmd 81 5/25/2015, 3:44 PM

के एक सद्धर्म महाकुम्भ का समारम्भ हो चुका था। जगद्गुरु श्रीरामनन्दाचार्य जी महाराज की ७००वीं जयन्ती (प्राकट्य सप्त शती) के भव्य आयोजन का उपक्रम परमश्रद्धेय स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी की सन्निधि और संरक्षकत्व में अत्यन्त श्रद्धा और उत्साहपूर्वक आरम्भ हुआ था। आयोजन २००१ ई. में वर्षपर्यन्त सम्पूर्ण भारतवर्ष में होना था किन्तु केन्द्र तो श्रीमठ अथ च काशी ही था। एक दिन मेरे अभिन्न सुहृद् डॉ. श्रद्धानन्द ने मेरे समक्ष अपने साथ श्रीमठ (पंचगंगा) चलने का प्रस्ताव रखा जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। यद्यपि मैं श्रीमठ और जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य के सम्बन्ध में सामान्यत: जानता था; किन्तु इससे पूर्व कभी श्रीमठ गया न था। इस पवित्र धाम और श्रद्धेय महाराजश्री के प्रथम पुण्य दर्शन का श्रेय मित्रवर डॉ. श्रद्धानन्द को ही है।

निश्चय ही वह दिन मेरे जीवन का एक अपूर्व अचिन्त्य शुभ दिन था। हम दोनों ही सीढ़ियाँ चढ़कर श्रीमठ के प्रथम तल पर पहुँचे तो वहाँ आसन पर पश्चिमाभिमुख विराजमान एक तेजस्वी महात्मा के दर्शन हुए जो समक्ष बैठे हुए कुछ महानुभावों से बातें कर रहे थे। डॉ. श्रद्धानन्द तो पूर्वत: वहाँ जाते रहते थे अत: इन्हें देखकर उन्होंने कहा– ''आइए।'' डॉ. श्रद्धानन्द ने उनका चरण स्पर्श किया और वहीं बगल में बैठ गये। मैंने भी सादर प्रणति निवेदन किया और डॉ. श्रद्धानन्द के पास ही बैठ गया। मन में अनुमान लगाया कि यही स्वामी जी श्रीमठपीठाधीश्वर हैं जिनकी महात्म्यचर्चा मेरे इस मित्र ने मार्ग में की है। एक स्वाभाविक स्मित पूज्य स्वामी जी के मुखमण्डल पर विराजमान थी। उन्होंने सहज स्नेहपूर्वक डॉ. श्रद्धानन्द का कुशल-क्षेम पूछा और मेरी ओर दृष्टि डालते हुए पूछा– ''साथ में किसे लाये हैं?''

डॉ. श्रद्धानन्द ने संक्षेप में ही किन्तु मेरा पूरा परिचय स्वामी जी को दिया। पूज्य स्वामी जी बोले– ''चलिए, अच्छा किया। रामानन्द परिवार में एक सदस्य और बढ़ा।'' फिर उन्मुक्त हास्य के साथ बोले–''पूर्व जन्म में जरूर इनका मेरा सम्बन्ध रहा। देखिए, इसी से इनका और मेरा रंग कुछ मिलता-जुलता है। तभी तो सही समय से मिल गये।'' उपस्थित लोग मेरी ओर देख कर हँस पड़े। मैं समझ गया कि स्वामी जी बड़े ही विनोदी स्वभाव के हैं और साथ ही अपरिचित व्यक्ति को भी अपना बना लेने की कला इन्हें खूब आती है।

इसके बाद सप्तशताब्दी के विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजनों की चर्चा

01.pmd 82 5/25/2015, 3:44 PM

पुनः आगे बढ़ी। स्वामी जी ने उस दिन विदा लेते समय मुझसे कहा कि इस अवसर पर कुछ ग्रन्थों का भी प्रकाशन होना है और उसमें मेरा सक्रिय सहयोग चाहिए। मैंने विनम्रतापूर्वक स्वीकार किया। उन्होंने एक वचन और लिया कि समय-समय पर होने वाली बैठकों में बुलाये जाने पर तो आना ही है, बिना बुलाये भी श्रीमठ में आते-जाते रहना है। मैंने ''जी, अच्छा'' कहा और अभिवादन करके डॉ. श्रद्धानन्द के साथ चल पड़ा। इतने स्वल्प समय की सन्निधि में ही मैं श्रद्धेय स्वामी जी से बहुत प्रभावित हुआ और मैंने अनुभव किया कि इन्हें व्यक्तियों की अच्छी पहचान है और जो जिस योग्य है, उससे उसके अनुरूप कार्य भी करा लेते हैं।

एक सप्ताह बाद मैं अकेले ही श्रीमठ गया। सायं ५ बजे के आस-पास का समय रहा होगा। स्वामी जी को भेंट करने के लिए मैं 'मन्त्ररामायणम्' नामक ग्रन्थ ले गया था जिसे मैंने पद्मभूषण स्व. आचार्य बलदेव उपाध्याय जी की प्रेरणा से सम्पादित किया था और उसकी हिन्दी व्याख्या भी की थी। इस ग्रन्थ को उ.प्र. संस्कृत संस्थान ने प्रकाशित किया है। मैंने वह ग्रन्थ पूज्य स्वामी जी को सादर भेंट किया। वे प्रसन्न होकर बोले– ''बहुत अच्छा। यह तो मेरे सम्प्रदाय का ग्रन्थ है। मैं इसे अवश्य पढ़ूँगा।'' फिर उन्होंने मुझसे कहा– ''जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पर संस्कृत में तो बहुत लिखा गया है। आप कुछ हिन्दी में सरल भाषा में लिखिए।'' मैंने हाथ जोड़कर स्वीकार किया। उस समय तक रामावत-सम्प्रदाय और श्रीरामानन्दाचार्य के सम्बन्ध में मेरा कोई विशेष ज्ञान न था। अब मैं इस दिशा में सक्रिय हुआ। मेरी छोटी बुद्धि उस समय कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकती थी। फिर मैंने सोचा कि श्रीरामानन्द के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर आधारित कोई कविता लिखूँ। मन में यह भी था कि जो कुछ भी करूँ उससे स्वामी जी प्रसन्न हों। मैं श्रम भी करूँ और स्वामी जी का प्रसाद न प्राप्त हो तो मेरा प्रयास भी निरर्थक होगा।

एक दिन विचार करते-करते अन्तःप्रेरणा हुई कि 'हनुमान् चालीसा' की तर्ज पर 'रामानन्द चालीसा' की रचना करूँ। अब इसे भगवत्कृपा ही मानूँगा कि तीन दिनों के अन्दर रामानन्दचालीसा तैयार हो गया और चौथे ही दिन मैं उत्साह से भरा श्रीमठ पहुँच गया। ससंकोच उसे मैंने आचार्यश्री के हाथों में सौंपा। शीर्षक देख कर उनके मुँह से निकला– ''अच्छा!'' और फिर मुझसे ही पूरा पढ़वाया, बड़े ध्यान से सुना भी। कुछ देर तक अन्य बातें हुईं और अन्त में मुझसे बोले– ''इसे छोड़ जाइए। मैं देखूँगा कि क्या करना है। आपाततः

01.pmd 83 5/25/2015, 3:44 PM

तो ठीक ही लगता है।'' मैं कुछ आश्वस्त हुआ। स्वामी जी ने अपने हाथों प्रसाद दिया और मैं प्रणाम करके मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद देते हुए चला आया। तीन चार दिन श्रीमठ नहीं गया। ''अब तो स्वामी जी ने समय निकाल कर देख ही लिया होगा''– ऐसा जब मन में पक्का हो गया तो पाँचवें दिन सायंकाल श्रीमठ गया। श्रीचरणों में पहुँचा तो देखते ही स्वामी जी ने कहा– ''सही समय से आये। मैं स्मरण कर ही रहा था। मुझे चालीसा पसंद आया। दो तीन जगह मैंने कुछ सुधार किया है। उसे अपनी तरह से संशोधित कर फेयर करके दे दीजिए; छपेगा।' पूज्य स्वामीजी के अनुग्रह से 'श्रीरामानन्द चालीसा' 'श्रीमठस्तोत्रकुसुमाञ्जलिः' में प्रकाशित हुआ। कुछ वर्षों तक पूज्य महाराजश्री गोष्ठियों में मेरा परिचय कराते समय 'श्रीरामानन्द चालीसा' का उल्लेख अवश्य करते थे।

श्रीमठ द्वारा आयोजित जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य सप्तशती महोत्सव का आयोजन काशी के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अङ्कित हुआ। ऐसा धार्मिक अनुष्ठान कि सबकी जुबान पर था– 'न भूतो न भविष्यति।' भगवान् श्रीसीताराम और कलिपावनरामावतार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य की अद्भुत कृपा तो थी ही, श्रीमठपीठाधीश्वर श्रद्धेय स्वामिश्रीरामनरेशाचार्य जी की दिव्यैकनिष्ठा तथा दृढ़ शिवसङ्कल्प का शुभ परिणाम था यह बृहद् धार्मिक अनुष्ठान जिसमें सम्मिलित हर वर्ग के लाखों लोगों ने अपनी धन्यता का अनुभव किया। श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के मूलपीठ श्रीमठ में नित्य पारम्परिक पूजन और अखण्ड रामनाम सङ्कीर्तन, नगर के मध्य टाउनहाल के मैदान में विशाल यज्ञ मण्डप में नित्य श्रीराम महायज्ञ और आदर्श इण्टर कालेज, ईश्वरगंगी के प्राङ्गण में निर्मित एवं सुसज्जित विस्तृत पाण्डाल में बृहदाकार मञ्च से प्रतिदिन सन्त महात्माओं के प्रवचन, विद्वद्गोष्ठियाँ तथा सम्मान-सपर्या के कार्यक्रमों से समृद्ध यह बृहदनुष्ठान अपने आप में अद्वितीय रहा जिसमें समग्र भारत से पधारे सम्प्रदाय एवं सम्प्रदायेतर महनीय धर्मगुरुओं, विद्वानों तथा जन-प्रतिनिधियों ने अपनी श्रद्धामयी उपस्थिति तथा अवदान से महोत्सव को गरिमा प्रदान की। स्मारिका के साथ ही अनेक प्राचीन एवं नवीन ग्रन्थों (धार्मिक साहित्य) का प्रकाशन भी हुआ। प्रो. शिवजी उपाध्याय द्वारा सद्यो विरचित– 'श्रीरामानन्द-शतकम्' मेरे हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित हुआ। काशी में महोत्सव के भव्य शुभारम्भ के पश्चात् श्रद्धेय महाराजश्री ने इस पावन प्रसङ्ग में वर्ष पर्यन्त भारतवर्ष की धर्मयात्रा की और अनेकत्र सभायें–गोष्ठियाँ कीं। इस महनीय प्रकल्प की सफल

01.pmd 84 5/25/2015, 3:44 PM

उल्लेखनीय सम्पूर्ति और उपलब्धियों के द्वारा रामभक्ति के इस मूलपीठ के प्रधान आचार्य श्रद्धेय स्वामी श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज की यशोवृद्धि तो हुई ही, उनके असाधारण व्यक्तित्व का एक नितान्त महत्त्वपूर्ण स्वरूप भी उभर कर सामने आया। जन्मशताब्दी महोत्सव ने उनकी रामभावैकनिष्ठता को प्रमाणित करने के साथ ही उनकी अभूतपूर्व संयोजन-क्षमता और प्रबन्धकौशल का भी प्रख्यापन किया। इस पवित्र आयोजन के द्वारा अपने आराध्य के प्रसादन के साथ ही रामभक्ति का प्रसारण तथा लोकमङ्गल का सम्पादन भी हुआ।

महाराजश्री के पावन सान्निध्य में आये मुझे प्रायः चौदह वर्ष हो रहे हैं और तब से निरन्तर मुझे श्रीचरणों का जो स्नेह और आशीर्वाद मिला उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि ही हो रही है। यह उनकी अहैतुकी कृपा ही है। उनकी सम्प्रेरणा से मैंने जगद्गुरु रामानन्द की सेवा में कुछ सारस्वत प्रस्तुतियाँ देने का पुण्य प्राप्त किया है। यह उनके शुभदर्शनों का ही सुफल है।

महाराजश्री जब से श्रीमठपीठ पर आसीन हुए हैं निरन्तर श्रीमठ की श्रीवृद्धि हेतु प्रयासरत हैं। इनके शुभागमन से पूर्व मूलगादी श्रीमठ की क्या दशा थी?– इसे भक्तजन अच्छी तरह जानते हैं। किन्तु महाराजश्री के स्वस्थ चिन्तन, विशद साधना, कठिन श्रम तथा अतुल्य अध्यवसाय से आज श्रीमठ कहाँ से कहाँ पहुँच गया! इसकी सीमित गतिविधियों को तो मानो पंख ही लग गये। भगवती भागीरथी के सुरम्य तट पर अवस्थित मठ का भव्य भवन स्वयं में साक्षी है। काशी से अन्यत्र भी नवीन आश्रमों की स्थापना, सम्प्रदाय के अन्य आश्रम पीठों से सम्बन्ध की दृढ़ता, देश भर में रामभक्ति का प्रसार तथा कर्मठ रामभक्तों का संग्रह, श्रीमठ की गतिविधियों की व्यापकता का प्रमाण है। तीर्थराज प्रयाग में जगद्गुरुरामानन्द के प्राकट्य स्थल का अन्वेषण एवं पुनरुद्धार, श्रीमठ के इतिहास की एक अविस्मरणीय घटना है तथा हरिद्वार-ऋषिकेश में विस्तृत भूखण्ड पर विशाल भव्य श्रीराममन्दिर के निर्माण का शुभारंभ तो श्रीमठ की कीर्तिपताका बन गया है। इन प्रकल्पों में श्रद्धेय स्वामी जी के कृपापात्र भक्तों की श्रद्धा और सहयोग तो महत्त्वपूर्ण है ही, प्रमुख है महाराजश्री का प्रभावशाली रामभावैकनिष्ठ व्यक्तित्व। यह उक्ति महाराजश्री के सम्बन्ध में कितनी सटीक बैठती है– 'क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।' इधर हिन्दी के विशिष्ट समुद्योगी विद्वान् डॉ. उदयप्रताप सिंह के सौजन्य से श्रीमठ की सारस्वत समृद्धि को भी निरन्तर उत्कर्ष प्राप्त हो रहा है। प्रतिवर्ष नवीन प्रकाशन भी हो रहे हैं।

01.pmd 85 5/25/2015, 3:44 PM

किसी भी व्यक्ति के स्वभाव और व्यवहार में परस्पर अन्त:सम्बन्ध होता ही है। स्वभाव से व्यवहार का और व्यवहार से स्वभाव का अनुमान लगाना कठिन नहीं है। किन्तु इस विषय में महात्मा अथवा महापुरुष कुछ विलक्षण ही होते हैं। 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।' 'अचिन्त्या: खलु महात्मनां चित्तवृत्तय:'– ये सब कुछ ऐसी ही उक्तियाँ हैं। पूज्य स्वामी जी के सम्बन्ध में ये उक्तियाँ अंशत: लागू हो भी सकती हैं और नहीं भी लागू हो सकतीं हैं। कारण कि पूज्य स्वामी जी इन उक्तियों की सीमा में बाँध कर नहीं देखे जा सकते। स्वामी जी का स्वभाव वस्तुत: रामभाव है। गोस्वामी तुलसीदास के 'स्वान्त:सुख', की ही तरह इनका स्वभाव कदापि सङ्कुचित नहीं है क्योंकि वह रामभाव का पर्याय है। भगवान् राम की उदारता स्वामी जी के स्वभाव में अनुप्रविष्ट है। इन्हें निकट से जानने वाला कोई भी इसका सहज ही अनुभव कर सकता है। मैं स्वयं इसका प्रमाण हूँ। दारिद्र्य और कार्पण्य का लेशमात्र भी प्रवेश इन महानुभाव के स्वभाव में नहीं है। श्रीमठ का कोई भी अनुष्ठान, कोई भी आयोजन हो, उसकी अपनी एक विशिष्ट गरिमा होती है। उनमें भाव-सद्भाव ही होता है, अभाव तो बिलकुल ही नहीं।रामभाव के समक्ष अभाव भला कहाँ टिक सकता है? पात्र छोटा हो अथवा बड़ा, पूज्य स्वामी जी उसे रिक्त नहीं रहने देते, उसे भरते ही हैं। अब यह तो पात्र की अपनी ग्राह्यता पर है कि वह कितना ग्रहण और धारण कर सकता है। स्वामी जी का स्वभाव कहीं भी कोताही करने वाला है ही नहीं। जिसके भी स्वभाव में सद्भाव होता है, वह असत् को प्रश्रय देता ही नहीं। पूज्य स्वामी जी का स्वभाव भी असद्भाव से कोसों दूर है।

जिसका जैसा स्वभाव होता है, उसकी दिनचर्या, उसका जीवन व्यवहार, अन्यों के साथ व्यवहार वैसा ही बन जाता है। स्वभाव अच्छा हो या बुरा, वह उस व्यक्ति की प्रतिच्छाया (परछाईं) की तरह अनुलङ्घनीय होता है– 'स्वभावो हि दुरतिक्रम:।' प्रयत्न करने पर भी स्वभाव छिपता नहीं। वह कभी-न-कभी, कहीं-न-कहीं प्रकट हो ही जाता है। क्योंकि स्वभाव तो स्व-भाव ही होता है। स्वभाव वस्तुत: पूर्व जन्म और वर्तमान के पूर्वकालिक संस्कारों से बनता है। अत: स्वभाव को मिटाना, छिपाना अथवा बदलना प्राय: दुष्कर ही होता है। व्यक्ति का चरित्र और उसकी जीवन शैली, उसके स्वभाव का पहचान कराती है। उसकी कार्य पद्धति में उसके स्वभाव की गहरी छाप होती है। स्वभाव के कारण ही कोई साधु होता है और कोई असाधु। साधु कठिन

01.pmd 86 5/25/2015, 3:44 PM

से कठिन परिस्थिति में भी अपनी साधुता (स्वभाव) का परित्याग नहीं करता। इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण ने अर्जुन के प्रश्न के उत्तर में कहा है– 'स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते'' (८.३)। इन सब पर गहराई से विचार करने पर जब हम पूज्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज के स्वभाव का ध्यान करते हैं तो उन्हें निरन्तर स्व-भाव (अर्थात् अध्यात्म) में ही अवस्थित पाते हैं। एक सुजन-सज्जन, महापुरुष-महात्मा का जैसा स्वभाव होना चाहिए, वैसा ही अथवा, उससे भी उत्कृष्टतर स्वभाव पूज्य स्वामी जी का है। एक शिशु की निश्छलता, एक युवक का उत्साह और एक वृद्ध का गाम्भीर्य उनमें अक्षुण्णतया विराजता है। गीतोक्त दैवी सम्पत्तियों[१] की पूर्ण अभिव्यक्ति महाराजश्री में भासती है। यही कारण है, उनमें कहीं भी दम्भ, दर्प, अभिमान, निष्ठुर-क्रोधादि का लेश मात्र नहीं है। अमर्ष और मात्सर्य कहीं भी उनके व्यवहार में नहीं परिलक्षित होता। हाँ, यह अवश्य है (जैसा मैं समझ पाया हूँ) कि वे किसी की खींची गयी लकीर को मिटाने या छोटा करने का तनिक भी प्रयास नहीं करते अपितु उस लकीर के समानान्तर उससे भी बड़ी लकीर खींचने का सप्रयत्न अवश्य करते हैं। श्रीमठ की आधिभौतिक और आध्यात्मिक अभ्युन्नति के कारणों में से एक कारण यह भी है।

जगद्गुरु स्वामिश्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज न्यायशास्त्र के सुधी अध्येता रहे हैं। उन्होंने काशी में न्यायशास्त्र के धुरन्धर विद्वानों से अध्ययन किया। वे छात्र जीवन से ही इस शास्त्र का अध्यापन करने लगे थे और आगे चलकर हरिद्वार-ऋषिकेश में न्याय के अध्यापक हो गये थे। वैराग्य लेने और श्रीमठ पीठ पर विराजमान होने से पूर्व तक वे इसी शास्त्र का अभ्यास कर रहे थे। अपनी सूक्ष्म शास्त्रीय दृष्टि और अध्यापन कौशल से इन्होंने महती प्रतिष्ठा अर्जित कर ली थी। यद्यपि वे न्यायशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् हैं किन्तु श्रीमठ

---

१. 'अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ।।
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ।।
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता ।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ।।

(श्रीमद्भगवद्गीता, १६.१-३)

01.pmd 87 5/25/2015, 3:44 PM

का उत्तराधिकार ग्रहण करने के पश्चात् प्रमाण छूट गया, प्रमेय पर पकड़ और मजबूत हो गयी। जीवनधारा बदलने से प्रमेय का वह परोक्ष ज्ञान अपरोक्ष ज्ञान के स्वरूप में और अधिक निखर गया। न्याय में रमने वाला ज्ञानी अब श्रीराम में रमने वाला नवधाभक्तिपरायण हो गया। प्रमाणपारावरीण उपपत्ति-उपनय को छोड़कर भक्तिरसामृतसिन्धु में अवगाहन करके निश्चल प्रपत्तियुतराममय हो गया। न्याय के सरोकार से हटकर श्रीराममयता से सराबोर हो गया। जगद्गुरु के रूप में उसका नवावतार हो गया।

महाराजजी का व्यवहार-सूत्र अत्यन्त सहज है– 'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्? फिर भी अपनों के प्रति उनका ममत्व कुछ अधिक ही रहता है। राम और रामानन्द की शरण में जाने वाला प्रत्येक प्राणी उनका अपना है। वे उसका योग-क्षेम वहन करने के लिए सर्वात्मना सर्वदा तत्पर रहते हैं। वे यथायोग्य स्नेह और सम्मान देते हैं। उनके हृदय की उदारता और विचारों की उदात्तता का कोई पैमाना नहीं है। अन्तरङ्गता के क्षणों में वे अपना हृदय खोल कर रख देते हैं। उनके भक्तजन उनकी इस सहृदयता के प्रमाण हैं। उनकी ऊँची सोच सदा फलानुमेय होती है। वे एक विलक्षण साधक हैं, राम के आराधक हैं और दुष्प्रवृत्तियों के बाधक हैं। वे लोक और शास्त्र की मर्यादा के रक्षक हैं। इसीलिए वे लोकवन्द्य हैं और सन्तसमाज उन्हें बहुमान की दृष्टि से देखता है।

विगत वर्ष प्रयाग के महाकुंभ के पश्चात् वे जब श्रीमठ (पंचगंगा, वाराणसी) पधारे थे, तो एक दिन सायंकाल मैं उनके दर्शनों के लिए गया। वे ऊपरी तल पर बाहर विराज रहे थे। उनके दाहिने पार्श्व में चरणों के निकट एक कृशकाय जटाधारी महात्मा बैठे उनसे कुछ बातें कर रहे थे। मैं अभिवादन करके वाम पार्श्व में बैठ गया। वे महात्मा देखने में अतिसामान्य, नाममात्र का वह भी मलिन किन्तु कौशेय वस्त्र धारण किये हुए, बगल में (साधुओं वाली) पोटली जिसमें उनका मोबाइल भी था (एक बार बजने पर निकाल कर किसी को निर्देश देकर पुनः उसी में रख दिया)। शुष्क स्नान के कारण शरीर में खुजली होने से वे लगातार खुजलाते भी रहते थे और महाराजजी से बातें भी करते जाते थे। बात समाप्त होने पर महाराज जी ने मेरा कुशल क्षेम पूछा और उन महात्मा को अपने अन्दाज में मेरा परिचय दिया और उस महात्मा का परिचय देते हुए उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया– "ये सम्प्रदाय के बड़े महात्मा हैं। बड़ा ही रामभाव है इनमें। पूर्णिया (बिहार) में

01.pmd 88 5/25/2015, 3:44 PM

बहुत बड़ा आश्रम है। बहुत जमीन और बगीचा है। मुझे वहाँ एक बार ले चलने के लिए निमन्त्रित करने आये हैं। अभी प्रयाग कुम्भ से लौटकर अयोध्या जी में रुके हुए हैं। वहीं से मुझसे मिलने आ गये। राम जी की सेवा में लगे हैं। माया बहुत है किन्तु ये एकदम उदासीन हैं।'' महाराज जी के सम्पर्क में न जाने कितने ऐसे महात्मा होंगे। किन्तु महाराज जी द्वारा उनकी कितनी बड़ाई की गयी– यह देख सुनकर मुझे विस्मय भी हुआ और श्रद्धा भी बढ़ी।

वे महात्मा तो महाराज जी का प्रसाद पाकर दण्डवत् करके कुछ ही देर बाद निकल गये। अभी महाराज जी ने मुझसे कुछ बात करनी आरम्भ ही की थी कि सतुआ बाबा आश्रम के पदासीन नवाचार्य श्री संतोषदास जी के आने की सूचना आ गयी और तब तक कुछ लोगों द्वारा अनुगत एक युवा संत पधारे, महाराज जी को उन्होंने दण्डवत् किया। मैंने भी उठकर उनका अभिवादन किया। (महात्मा की आयु नहीं देखी जाती, उसकी तप:साधना देखी जाती है)। महाराज जी के समक्ष चरणों के पास विराजमान हुए। प्राय: बीस-पचीस मिनट की वार्ता के पश्चात् वे चलने के लिए उद्यत हुए तो महाराज जी ने हँसते हुए कहा कि आज ऐसे कैसे जाइएगा? पहले वाली बात अब तो बदल गई न! गद्दी पर बैठने के बाद पहली बार श्रीमठ आये हो। और, सेवक को बुलाकर टीका-तिलक की थाली मँगाई। उन्हें टीका किया। माला पहनाई और कौशेय उत्तरीय उढ़ाया तथा प्रसाद दिया और यह कहते हुए विदा किया कि आश्रम का नाम बढ़ाइए। मुझे आपसे बड़ी आशायें हैं। वे विनत भाव से प्रस्थित हुए। महाराज जी ने मुझसे उनकी प्रशंसा की– ''श्रद्धावान हैं। आचार्य गद्दी पर बैठने के बाद पहली बार श्रीमठ आये शिष्टाचार भेट करने। इनमें कृतज्ञता का बड़ा भाव है।''

मैं पहले भी पूज्य महाराज जी का अनेक अवसरों पर ऐसा सद्व्यवहार देख चुका हूँ। जो जैसा है, महाराज जी उसी भाव से उससे मिलते हैं और मान-सम्मान देते हैं।

राज्य, गृहस्थी और मठ बिना संग्रह के नहीं चलते। इस संसार में जो भी लौकिक व्यवहार है, उसके लिए संग्रह अनिवार्य है। श्रीमठ भी इसका अपवाद नहीं है। कहते हैं– ''सर्वारम्भा: तण्डुलप्रस्थमूला:' अथवा 'अर्थमूला: सकला: क्रिया:।'' पूज्य महाराज जी का संग्रह वैविध्यपूर्ण है और अर्थसंग्रह तो अनपचित है। इन्होंने पूर्वाश्रम में विद्या का अच्छा संग्रह किया, गुरुजन का भी संग्रह किया और शिष्यों का भी। तत्पश्चात् धर्म का संग्रह और तप

01.pmd 89 5/25/2015, 3:44 PM

का संग्रह करने में निरत हैं। जौहरी रत्नों का संग्रह करता है और महाराज जी भी रत्नों का निरन्तर संग्रह कर रहे हैं किन्तु ये रत्न पाषाणखण्ड नहीं है, उनसे विलक्षण हैं (जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमभिधीयते)। महाराज जी के द्वारा संगृहीत और संग्राह्य ये रत्न हैं श्रेष्ठ साधु, विद्वान्, भक्त-शिष्य और ग्रंथ। स्व-सम्प्रदाय और इतर सम्प्रदाय के जो धर्माचार्य हैं, उनके सम्बन्ध स्वामीजी से अत्यन्त मधुर और सौहार्दपूर्ण हैं। युधिष्ठिर की अजातशत्रुता स्वामी जी के प्रति भी सङ्गत है। महाराज जी के आयोजनों में वे विशिष्ट धर्माचार्य पधारते हैं और ये भी उनके आयोजनों में प्रेमपूर्वक सम्मिलित होते हैं। विद्वानों को जैसा आदर-सम्मान श्रीमठ से निरन्तर प्राप्त होता है वैसा तो कदाचित् ही कोई धर्मपीठ या धर्माध्यक्ष करता होगा। चूँकि पूज्य महाराजश्री स्वयं दर्शन आदि शास्त्रों के परम विद्वान् हैं अत: वैदुष्य की अवधारणा उनके हृदय में है। इसीलिए वे क्षणश: विद्वानों का संग्रह करते रहते हैं। विद्वज्जन भी उनकी इस प्रवृत्ति से उनके प्रति श्रद्धा सहित आकृष्ट होते हैं। भक्तों और शिष्यों का तो कहना ही क्या? श्रद्धेय महाराजश्री का अनुभाव ही ऐसा है कि जो भी राम जी का सेवक स्वामी जी के चरण शरण में आया, वह पूर्णमनोरथ होकर, सहज स्नेह से आप्लावित होकर रामभाव से अनुप्राणित होकर इनका ही होकर रह गया। आज, इसी कारण श्रीमठ परिवार विशाल से विशालतर होता जा रहा है और महाराजजी एक सद्गुरु के रूप में निरन्तर उनका सत्पथ आलोकित कर रहे हैं। महाराजश्री के शिवसङ्कल्पों को पूरा करने के लिए अर्थसंग्रह भी निरन्तर हो रहा है। 'त्यागाय सम्भृतार्थनाम्'– रघुवंशी राजाओं के लिए महाकवि का यह कथन भी महाराजश्री पर पूर्णत: चरितार्थ होता है। उनका अर्थसंग्रह भोग के लिए नहीं अपितु त्याग के लिए ही हो रहा है। श्रीमठ की जितनी सत्प्रवृत्तियाँ हैं, उनमें संगृहीत धन का सदुपयोग हो रहा है। भव्य दिव्य श्रीराम मन्दिर का निर्माण भी अयाचित (दान) धन से ही हो रहा है। 'सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रवि:।' यदि सूर्य जल का ग्रहण अपनी रश्मियों द्वारा करता है तो उसे हजार गुना करके बरसाने के लिए ही। इसी प्रकार पूज्य महाराजश्री का धनसंग्रह भी विविध कल्याणकारी कार्यों में विनियोग किया जाकर सार्थक हो रहा है।

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य की मूल भावना का निरन्तर ध्यान, सम्मान और अनुसरण करते हुए जगद्गुरु श्रीरामनरेशाचार्य जी भी रामभाव से सम्पृक्त समाज की संरचना में सतत प्रयत्नशील हैं। समाज निर्माण के लिए रामभक्ति

01.pmd 90 5/25/2015, 3:44 PM

आन्दोलन का मूल मन्त्र है– 'जातपाँत पूछे नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।।' समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ऐसी ही होनी चाहिए। आधुनिक सन्दर्भ में भी, एक अच्छा नागरिक सुसंस्कारों से ही बन सकता है। वह किसी भी वर्ण, जाति, धर्म सम्प्रदाय का भले ही क्यों न हो। रामभाव सुसंस्कार रूपी कल्पतरु का बीज है। समाज में इसी बीज के वपन का सत्कार्य श्रद्धेय स्वामी जी कर रहे हैं। वर्ग-विद्वेष को निर्मूल करके भेदभावरहित समाज की स्थापना का जो सङ्कल्प आज से सात सौ साल पहले पुण्यश्लोक स्वामी श्रीरामानन्दाचार्य जी ने लिया था, उसी मार्ग पर स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी भी अग्रसर हैं। समाज के निर्बल वर्ग को संरक्षण देना, पोषण करना और उनके अभ्युत्थान में सहयोग करना, श्रीमठ की गतिविधियों में प्रमुखता के साथ सम्मिलित है। समाज में नारी को उचित स्थान और सम्मान मिले, गो-संवर्धन हो और पर्यावरण में सन्तुलन हो– यह भी, 'इष्टं धर्मेण योजयेत्'– न्याय से स्वयमेव श्रीमठ के प्रकल्पों से जुड़ा हुआ है। संस्कृत और संस्कृति की रक्षा के लिए पूज्य महाराज जी की चिन्ता सर्वविदित है।

यद्यपि पूज्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज समग्र भारत राष्ट्र में धर्मयात्राएँ करते रहते हैं तथापि मध्य भारत, पश्चिम भारत तथा उत्तर भारत में आपका अनुग्रह सविशेष सक्रिय एवं प्रभावी है। आपके अधिकांश भक्त और शिष्य प्राय: इसी क्षेत्र से आते हैं। ये निरन्तर आपकी यथायोग्य सेवा में सादर सश्रद्ध संलग्न रहते हैं। काशी एवं काशी से बाहर आपके संरक्षण एवं निर्देशन में वर्ष पर्यन्त आध्यात्मिक, धार्मिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों तथा अनुष्ठानों का क्रम चलता ही रहता है। आपके चातुर्मास्य महोत्सव में उल्लेखनीय विविध कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं। अखिल भारतीय विद्वद्गोष्ठियाँ और सन्त सम्मेलनों की अपनी अलग ही गरिमा होती है। इसके अतिरिक्त समाजोत्थान के भी महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम होते हैं। महाराजश्री ने काशी के उत्सवों को भी एक नवीन आयाम दिया है। श्रीमठ को केन्द्र में रखकर राम और रामभक्ति से जुड़े हुए प्रमुख धर्मात्मा महापुरुषों की जयन्तियों का कार्यक्रम निरन्तर गौरवमय होता जा रहा है। विद्वत्सपर्या और किसी आचारनिष्ठ श्रेष्ठ विद्वान् को प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला एक लाख रुपये का **'श्रीरामानन्दाचार्य पुरस्कार'** महाराजश्री के समुदार स्वभाव को विशिष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है। महाराजश्री की सत्प्रेरणा से ही श्रीमठ के प्रकाशनों में भी उल्लेखनीय अभिवृद्धि हुई है। उच्चकोटि के धार्मिक और साहित्यिक

01.pmd 91 5/25/2015, 3:44 PM

प्रकाशन श्रीमठ की कीर्ति का चतुर्दिक् प्रसार कर रहे हैं।

श्रद्धेय जगद्गुरुरामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्यजी महाराज की षष्टिपूर्ति के शुभ पावन अवसर पर हमारी मङ्गल कामना है कि वे दीर्घायु, सुखायु और हितायु हों। उनके तप:तेज की वृद्धि हो। उनके द्वारा समस्त विश्व में रामभाव का प्रसार हो और श्रीमठ दिनानुदिन श्रीसमृद्धिसम्पन्न हो।

अन्तत:,

धर्मात्मा धर्मविद् धन्यो रामभक्तिधुरन्धरः ।
धर्मार्थं धृतदेहोऽसौ रामानन्दपथानुगः ।।
चिरंजीवतु सानन्दं श्रीमठपीठाधीश्वरः ।
वर्धतां तत्तपो नित्यं सततं तं वयं नुमः ।।

●

01.pmd 92 5/25/2015, 3:44 PM

स्वामीरामनरेशाचार्य : बहुआयामी व्यक्तित्व

बाबूराम त्रिपाठी

इस संसार में कुछ ऐसे महामानव हैं, जो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीते हैं। परहित उनके जीवन का मकसद होता है। दूसरों का सुख-दु:ख उनका अपना सुख-दु:ख होता है। संसार में सुख-शान्ति कैसे आये, इसके लिए वे रात-दिन प्रयास रत रहते हैं। स्वयं तो सत्कर्म करते ही हैं, साथ-साथ दूसरों को भी सत्कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे महामानवों में जगद्गुरु रामानंद पीठाधीश्वर स्वामी रामनरेशाचार्य महाराज हैं।

महाराज श्री जब से पीठासीन हुए तब से लेकर आज तक वे निरन्तर रामानन्द सम्प्रदाय के अन्य सभी पीठों का मार्ग-दर्शन करते चले आ रहे हैं। उनके कुशल निर्देशन में देश के सभी रामानन्द सम्प्रदाय से सम्बद्ध पीठ पल्लवित-पुष्पित एवं समृद्धि को प्राप्त होकर लोक कल्याण की दिशा में कार्यरत हैं। जगत्गुरु रामानन्दाचार्य द्वारा प्रवर्तित राम-भक्ति परम्परा का कोई भी इतिहास स्वामी रामनरेशाचार्य के उल्लेख के बिना अधूरा रहेगा। श्रीमठ पीठ पर जगत्गुरु के पद पर अभिषिक्त होने के पश्चात् भगवान राम के प्रति उनके अन्त:करण में जो पूर्णत: निगूढ़ श्रद्धा का बीज था, वह अंकुरित होकर कल्पवृक्ष का रूप धारण कर लिया है। महाराजश्री ने लोक में रामभक्ति के प्रसार का जो आन्दोलन प्रवर्तित किया, वह लोक मंगलमयी भावना के रूप में सर्वत्र प्रतिफलित दृष्टिगोचर हो रहा है। राम और रामभक्ति का आश्रय लेकर यद्यपि अपने को स्थापित करने के उद्देश्य से अनेक नकली रामानन्दाचार्य पद-प्रतिष्ठित हो गये हैं, किन्तु जो सुयश आभा मूल पीठ पर प्रतिष्ठित वर्तमान आचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य महाराज श्री की है वह अन्यों की कहाँ? इसका एकमात्र कारण यह है कि महाराज जी का मृदु एवं सदाशयी व्यक्तित्व।

स्वामी जी एक ऐसे सन्त हैं, जो धरती से जुड़े हुए हैं। उनके आदर्श व्यवहार के धरातल पर खरे उतरते हैं। वे यथार्थोन्मुखी आदर्श के हिमायती

प्रमुख, शब्द विद्या संकाय, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी

01.pmd 93 5/25/2015, 3:44 PM

हैं। उनकी कथनी-करनी में एकरूपता है। टण्ट-घण्ट, ढोंग-पाखंड से वे अपने को परे रखते हैं। वस्तुत: सन्त को जैसा होना चाहिए, महाराजश्री सर्वथा उसी प्रकार के हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी ने सन्तों के जो लक्षण बताये हैं– सन्त हृदय नवनीत समाना...।' वे सभी महाराजश्री में देखने को मिलते हैं। दूसरों के दुखों से उनका हृदय न केवल द्रवित होता है अपितु उसे वे दूर करने का भी यथा सम्भव प्रयास करते हैं। उनकी इस पर दु:खकातरता को देखकर इस उक्ति का स्मरण हो आना स्वाभाविक है– 'सन्ता: स्वयं परहितेषु कृताभियोगा:'। निरभिमानता एवं हृदय का औदार्य महाराजश्री में देखते ही बनता है। सबके साथ यथायोग्य व्यवहार करना कोई स्वामी जी से सीखें। उनका यह गुण प्रत्येक व्यक्ति के मन को छू जाता है। विद्वानों गुणज्ञों एवं कलाकारों, सबको महाराजश्री न केवल प्रश्रय देते हैं, अपितु उन्हें अपेक्षित सम्मान भी देते हैं। श्रीरामभक्ति के माध्यम से धर्म के संरक्षण एवं अभ्युन्नति के लिए वे निरन्तर देश के विभिन्न भागों में यात्राएँ करते रहते हैं। वैदिक सन्देश 'चरैवेति-चरैवेति' का अनुपालन करने में उनकी नित्य-चर्या ऋषिचर्या है।

महाराजश्री न्याय के विद्वान होने के नाते वार्तालाप में भी शास्त्र की बातें जिस सहज ढंग से कह जाते हैं, वह देखते ही बनती है। प्रवचन के दरम्यान शास्त्र-पुराणों के दृष्टान्त देकर अपनी बात को जिस सहजता से पुष्ट करते हैं और उसे जन सामान्य के लिए सम्प्रेषणीय बनाते हैं वह स्तुत्य है। वस्तुत: महाराजश्री में एक अच्छे एवं आदर्श अध्यापक के सारे गुण विद्यमान हैं। उन्हें अपने श्रोताओं की समझ का पूरा ज्ञान है तभी तो गूढ़ से गूढ़ विषय को बोधगम्य बनाकर उसे सभी तक पहुँचाते हैं। वस्तुत: उनके इस गुण के मूल में उनके व्यापक अनुभव एवं लोक शास्त्र का ज्ञान है। काशी की पाण्डित्य परम्परा के निकष पर महाराजश्री पूर्ण रूप से खरे उतरते हैं। वे न्यायशास्त्र के ज्ञाता तो हैं ही साथ-साथ उन्होंने संस्कृत वाङ्मय का भी गहन अध्ययन किया है। धर्म एवं दर्शन के गूढ़ विषयों को अपने अनुभव के आधार पर लौकिक दृष्टान्तों एवं उदाहरणों द्वारा वे इतनी सहजता से व्यक्त करते हैं कि वह सर्व सामान्य के लिए भी ग्राह्य हो जाता है।

महाराज श्री का वक्तृत्व कौशल उनके व्यक्तित्व का परिचायक है। उनके प्रवचन में अद्भुत आकर्षण रहता है। प्रवचन का विषय गम्भीर होने पर भी भावों के औदार्य के कारण श्रोताओं के सामने प्रत्यक्ष नाचता दिखाई देता है। सच पूछा जाय तो वे वक्तृत्व-कला के जादूगर हैं। विषय ज्ञात हो या अज्ञात, पर जब वे बोलना शुरू करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि भावों-

01.pmd 94 5/25/2015, 3:44 PM

विचारों का अथाह सागर लहरा रहा है। उनकी वाणी में श्रोताओं को बाँध लेने की अद्‌भुत क्षमता है। अनेक अवसरों पर ऐसा देखा गया है कि मंच के अन्तिम वक्ता के रूप में प्रस्तुत होने पर भी महाराजश्री ने उखड़ती सभा को जमा दिया। जो श्रोता जा रहे थे, वे तो लौटे ही, अन्य नये श्रोता भी उनकी वाणी के प्रभाव से उपस्थित हो गये। स्वामी श्री का विषय प्रतिपादन श्रोताओं के लिए कभी बोझिळ नहीं प्रतीत होता। वे गम्भीर से गम्भीर विषय की भी इतने सरलतम और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करते हैं कि श्रोता मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं। वस्तुत: महाराज श्री का प्रवचन सभी दृष्टियों से सहज एवं ग्राह्य है। उनमें श्रोताओं के मिजाज को भाँपने की विलक्षण प्रतिभा है। वे गम्भीर प्रतिपाद्य को पचाने के लिए और वक्ता को ऊबने से बचाने के लिए कुछ प्रेरक एवं हास्यप्रद प्रसंगों का भी समावेश करते चलते हैं, पर वे प्रकृत विषय से असम्बद्ध नहीं होते। उनकी यह वक्तृत्व-कला अन्य वक्ताओं में कम देखने को मिलती है।

'जाति-पाँत पूछे ना कोई हरि का भजै सो हरि का होई' यह उक्ति उनके परिमंडल में चरितार्थ होती है। उनके यहाँ ऊँच-नीच की भावना को तनिक भी प्रश्रय नहीं मिलता। सभी जाति एवं धर्म के लोग श्रद्धा से आते हैं और उनका आशीर्वाद पाकर कृतकृत्य होते हैं। उनके भण्डारे में बिना किसी भेद-भाव के लोग एक टाट पर बैठकर प्रसाद ग्रहण करते हैं और महाराज श्री की सहजता तो तब देखते बनती है जब वे खड़े होकर प्रसाद की व्यवस्था का स्वयं निरीक्षण करते हैं और कार्यकर्त्ताओं को निष्ठापूर्वक कार्य करने का निर्देश देते रहते हैं। भण्डार-गृह में किस वस्तु की कमी है और कौन-सी सामग्री पर्याप्त है इसका ऑकलन वह करते रहते हैं।

भक्ति को जब साहित्य का सान्निध्य मिल जाता है तो उसकी सार्थकता बढ़ जाती है। ऐसे कम सन्त हैं जो अपनी साधना को साहित्य एवं 'संस्कृति के उन्नयन में लगाते हैं, वे पूजा-पाठ, प्रवचन आदि में ही उलझकर रह जाते हैं। लेकिन महाराज श्री का साहित्य और उसके सृजन के प्रति अत्यधिक लगाव है। वे विद्वानों को बहुत सम्मान देते हैं। 'स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते, उक्ति उनके परिमंडल में चरितार्थ होती है। उनका कहना है कि विद्वान् सबसे बड़ा होता है। वह समाज को एक नूतन दिशा तो देता ही है साथ-साथ उसमें नैतिकता एवं आदर्शों की स्थापना भी करता है। वे अपने प्रवचन के बीच-बीच में विद्वानों की महत्ता का प्रतिपादन करते रहते हैं। उनके भक्तों में विद्वानों की पर्याप्त संख्या है। समय-समय पर वे महाराजश्री

01.pmd 95 5/25/2015, 3:44 PM

का आशीर्वाद तो पाते ही हैं, साथ-साथ वे स्वामी जी के द्वारा साहित्य-सेवा के लिए प्रोत्साहन एवं प्रेरणा भी प्राप्त करते हैं।

अपने चातुर्मास के दौरान रामानन्द सम्प्रदाय के कवियों एवं उनकी रचनाओं से सम्बद्ध किसी एक विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन करवाते हैं जिसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्वानों की सहभागिता होती है। संगोष्ठी में आये सभी विद्वान् निबन्ध-पाठ करते हैं और पढ़े गये निबन्धों पर खुलकर चर्चा होती है। गोष्ठी के अन्त में उन्हें अंगवस्त्र एवं मानदेय से सम्मानित किया जाता है। इतना ही नहीं, प्रत्येक वर्ष भक्ति एवं सन्त साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्य करने वाले किसी एक विद्वान् को पुरस्कृत भी किया जाता है। उनके साहित्यिक मंत्री डॉ. उदयप्रताप सिंह जी हैं। विद्वानों से सम्पर्क करना, संगोष्ठी में उन्हें आमंत्रित करना पुरस्कार के लिए विद्वानों के चयन में सहयोग एवं सुझाव देना आदि कार्यों में डॉ. सिंह का योगदान स्तुत्य है।

स्वामी जी की सोच अत्यधिक रचनात्मक है। उन्होंने अनेक जीर्ण-शीर्ण मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाया है और वहाँ नियमित रूप से पूजन-अर्चन की स्थायी व्यवस्था करवाई। आपके निर्देशन में हरिद्वार में अद्वितीय श्री राममन्दिर का निर्माण हो रहा है। महाराजश्री यज्ञों को लोक-कल्याण के लिए आवश्यक मानते हैं। उनके अनुसार यज्ञों से न केवल वातावरण पवित्र एवं शुद्ध होता है अपितु उनके वर्षा के भी होने की सम्भावना बढ़ जाती है। तभी तो वे समय-समय पर बड़े पैमाने पर यज्ञ करवाते रहते हैं।

स्वामीजी की भक्त-वत्सलता देखते ही बनती है। भक्तों की समस्याएँ सुनकर उनकी सहानुभूति द्रवित हो जाती है। कोई सन्तान-प्राप्ति के लिए आशीर्वाद माँगता है तो कोई मिल-कारखाने को सुचारु रूप से चलते रहने के लिए उनकी कृपा का आकांक्षी होता है। कुछ लोग अपने बेटे-बेटी की शादी की भी समस्याओं को उनके सामने रखने से बाज नहीं आते। लेकिन महाराज श्री का अपने भक्तों के प्रति स्नेह देखिए, वे सभी को ध्यान से सुनते हैं और 'राम का नाम लो' सब ठीक हो जायेगा' कहकर उन्हें आश्वस्त करते हैं। उनके इस महामंत्र के जाप से सब ठीक हो भी जाता है।

ऐसे दिव्य महापुरुष को मेरा कोटि-कोटि नमन है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे महाराजश्री को सुख-शान्ति एवं दीर्घायु प्रदान करें ताकि वे लोकमंगलकारी प्रवृत्तियों का अधिकाधिक प्रसार कर सकें।

●

01.pmd 96 5/25/2015, 3:44 PM

अभिनवरामानन्दाचार्य और नया भारत

शत्रुघ्न प्रसाद

यह अतीव हर्ष का विषय है कि भारतवर्ष बीसवीं सदी के अनेकानेक भीषण द्वन्द्वों तथा संघर्षों पर विजय पाता हुआ इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर नयी आशा और नयी आकांक्षा से ऊर्जावान हो उठा है। परन्तु अभी अनेक सांस्कृतिक-धार्मिक समस्याओं से जूझना हो रहा है। इस स्थिति में हमारे समक्ष आचार्य प्रवर पूज्य रामानन्द जी की सांस्कृतिक क्रांति-चेतना, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की चरित्र गाथा और नये भारत के नवनिर्माण की यात्रा– तीनों जुड़ कर हमें मार्ग निर्देश कर रही हैं। परन्तु अवतारी पुरुष, संस्कृति पुरुष, राष्ट्रपुरुष श्रीराम के विरुद्ध षड्यन्त्र बीसवीं सदी में ही शुरू हो गये थे। श्रीराम की ऐतिहासिकता, श्रीरामजन्मभूमि के अस्तित्व तथा दक्षिण महासागर में स्थित रामसेतु– तीनों की अस्मिता पर प्रहार भी होने लगे थे। वर्णों एवं जातियों-उपजातियों में साँस लेता विश्व का सर्वाधिक प्राचीन मानव समूह– हिन्दू अपनी सामूहिकता एवं एकात्मकता को खो रहा था। पश्चिम, आर्य और द्रविड़ का भेद पैदा करके तमाशा देखता रहा है। तमिलनाडू का तमिलभाव राम के विरुद्ध होता रहा है। इन विषम परिस्थितियों में काशी का श्रीमठ (रामावत सम्प्रदाय) के पूज्य श्रीरामानन्दाचार्य की क्रांति चेतना को श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज बौद्धिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक स्तर पर प्रस्तुत कर रहे हैं। काशी, उज्जैन, प्रयाग, हरिद्वार, जयपुरआदि अनेक सांस्कृतिक केन्द्रों को नये रूप में जागृत कर वैष्णवता की नूतन यज्ञशिखा प्रज्ज्वलित कर रहे हैं।

मुझे काशी की उस सांस्कृतिक गोष्ठी का स्मरण हो रहा है। वहाँ दो दिनों तक विभिन्न महाविद्यालयों-विश्वविद्यालयों के संस्कृत तथा हिन्दी के विद्वान् एवं साहित्यकार रामसंस्कृति से संबद्ध विषयों पर विचार-विमर्श कर रहे थे। पूज्यश्री रामनरेशाचार्य जी की उपस्थिति में सभी मुक्तभाव से अपने-अपने तर्कों तथा विचारों को रख रहे थे। सामाजिक समता-समरसता पर बल प्रदान कर

समीक्षक, कथाकार एवं 'सदानीरा' के सम्पादक, पटना

01.pmd 97 5/25/2015, 3:44 PM

रहे थे। यह प्राचीन शास्त्रार्थ शैली से अनुप्राणित आधुनिक विमर्श प्रभावी और सार्थक लगा। मैं एक नयी प्रेरणा तथा पूज्य श्रीरामनरेशाचार्य से आशीष पाकर लौटा था। मैंने अनुभूत किया था कि कुछ बुद्धिजीवी इतिहासकार तथा पत्रकार प्रतिबद्ध राजनीति की दृष्टि से राम की आलोचना कर रहे हैं। साथ ही सन् १९९२-१९९३ ई. में अनेक प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में राम की ऐतिहासिकता तथा रामजन्मभूमि के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न उठाये जा रहे हैं। रामसेतु (सेतुबन्ध रामेश्वरम्) को प्राकृतिक कहकर विध्वंस की तैयारी चलती रही है। परन्तु सभी विरोधी अपने आप पराजित होकर मौन हो रहे हैं।

इस ज्वलन्त विषय पर श्रीमठ ने पूज्य रामनरेशाचार्य जी के निर्देशन में अपनी सांस्कृतिक गोष्ठियों में भारत की संस्कृति की साम यज्ञ को प्रज्ज्वलित कर दिया है। इस आधुनिक शास्त्रार्थ का प्रवर्तन अभिनव रामानन्दाचार्य श्री रामनरेशाचार्य जी ने किया है। मध्यकाल के अन्य सम्प्रदायों की गतिविधियाँ मात्र मन्दिरों तक सीमित हैं। कुछ नये संगठन अपनी नयी दृष्टि से भारतीयता के यज्ञ में आहुति दे रहे हैं। परन्तु श्रीमठ-रामावत सम्प्रदाय ने अपने विचारों-सिद्धान्तों को व्यापकता का प्रकाशन प्रदान कर दिया है। श्रीराम के सम्बद्ध मन्दिरों की शृंखला को नये युग के अनुकूल नया आलोक अपेक्षित है।

यह सत्य है कि भारत में चिंतन और उपासना की स्वतंत्रता युगों से रही है। यह विश्व संस्कृति की हिन्दू दृष्टि है। चिर-युगीन लोकतान्त्रिक दृष्टि तो पूर्णत: भारतीय है। अन्य सामी चिन्तक इस स्वतंत्रता को स्वीकार नहीं करते। ये सेमेटिक दूसरों की स्वतंत्रता छीनने का प्रयत्न करते हैं यानी मतान्तरण-धर्मान्तरण का अमानवीय षड्यन्त्र करते हैं। इसी का क्रूर रूप है– आतंकवाद। भारत ने आतंकवाद को प्रश्रय कभी नहीं दिया। आपस में मतभेद रहे हैं। प्रतियोगिता रही है। मतभेद मिटे भी हैं। कभी वैदिक और श्रमण का मतभेद रहा है। शैव और वैष्णव का मतभेद रहा है। वैष्णवता की दो धाराएँ– रामभक्तिधारा और कृष्णभक्तिधारा तो विद्यमान हैं। रामभक्ति की सगुणवादी तथा निर्गुणवादी धाराएँ हैं।

यह भी सत्य है कि पुराण प्रसिद्ध सिद्ध दशावतार कथा ने सांस्कृतिक शैली में मतभेदों का निवारण किया है। सभी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं– ऐसी मान्यता हृदय को स्पर्श करती है श्रद्धा से शीश झुक जाता है और पूज्य रामानन्दाचार्य जी ने सगुण तथा निर्गुण भक्ति– दोनों को स्वीकृति दी थी। साथ ही विषमता से जकड़े समाज में समता-समरसता को– सबकी

01.pmd 98 5/25/2015, 3:44 PM

रामभक्ति को अन्दर से मान्यता दी थी। 'रामावत संप्रदाय'– श्रीसम्प्रदाय की शिष्य परम्परा के तुलसीदास ने शिव तथा राम को आद्यन्त जोड़ दिया है। शैव और वैष्णव के मतभेद-मनभेद– दोनों को मिटा दिया था। 'मानस' प्रमाण है। शिव ने राम को पूज्य माना है, राम ने शिव को। श्रीराम ने सुदूर दक्षिण सागर तट पर रामेश्वर शिव की प्रतिष्ठा की थी। यह गाथा कितनी उज्ज्वल है!

चौदहवीं शती के पूज्य श्रीरामानन्दाचार्य की क्रांतिचेतना के परिणामस्वरूप एक ओर कबीर तथा रैदास हैं, दूसरी ओर संत तुलसीदास हैं और आधुनिक वैष्णव कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। उसी पद पर प्रतिष्ठित श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज उसी क्रांतिचेतना के विमर्श को आधुनिक युग के अनुकूल अग्रसर कर रहे हैं। इसीलिए 'हरिद्वार समग्र (डॉ. उदयप्रताप सिंह सम्पादित) में उन्होंने 'मंगलाशासन' में लिखा है– 'अज्ञान के कारण शैवों और वैष्णवों का परस्पर विरोध-असहनशीलता तथा युद्ध प्राय: शांत हो गये हैं। दूसरे तीर्थों की अपेक्षा सामंजस्य अधिक है। इसके सम्पादन में रामावत परम्परा की भगवान शिव के प्रति अत्यधिक नैष्ठिकी भावना है, जिसको गोस्वामी तुलसीदास जी ने ऐतिहासिक रूप से प्रतिष्ठित किया।''

प्रयाग कुम्भ के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी तदुपरान्त डॉ. उदयप्रताप सिंह के सम्पादन में प्रस्तुत 'तीर्थराज प्रयाग और रामभक्ति का अमृत कलश' नामक ग्रंथ में अभिनव रामानन्दाचार्य-श्रीरामनरेशाचार्य जी ने मंगलाकांक्षा' प्रदान की है। इसमें अमृत कुम्भ और कुम्भ मेला के माध्यम से अपनी संस्कृति के अपूर्व आध्यात्मिक अमृत का अवदान दिया है। इसमें इनका अतल स्पर्शी चिंतन दृष्टिगत् हो रहा है। वे लिखते है– ''वैसे मनुष्य अनादिकाल से समुद्रमंथन से नि:सृत अमृतकलश की खोज में तल्लीन है। प्रारम्भ में अमृत अन्वेषण की इस आदि यात्रा में हम एकाकी ही रहे होंगे। इस क्रम में सदा ही असफल होते हुए हमने मिलकर अमृत कलश खोजना शुरू किया होगा। मिलकर सत्य, अमृत व सुख खोजने का क्रम ही मेला है। वस्तुत: यही अमृत अन्वेषण की साधुरीति है। मिलकर अमृत खोज की प्रक्रिया की सुचारुता की प्रामाणिकता पुराण के उस सुप्रसिद्ध आख्यान से भी सिद्ध होती है। वैदिक सनातन धर्म का कुम्भ मेला अमृत खोज का अनुपम गौरववर्धक विराट् एवं प्रामाणिक निदर्शन है।

देवताओं एवं दानवों के समुद्रमन्थन से जो अमृत कलश प्राप्त हुआ था उसके पहले ही विषकलश भी प्राप्त हुआ था जिसको भगवान शंकर

01.pmd 99 5/25/2015, 3:44 PM

ने पीकर पचाया एवं मन्थन करनेवालों को बचाया। मन्थन की सम्पूर्णता भी कच्छपावतार भगवान् विष्णु के सहयोग से ही हुई जो वस्तुत: अमृतकलश ही नहीं, अमृत सागर है। संसार का सम्पूर्ण अमृत उनके द्वारा ही वितरित एवं प्रसारित है।''

भगवान विष्णु के अवतार श्रीराम की चरित कथा को सर्वप्रथम संस्कृत के आदि कवि वाल्मीकि ने 'रामायण' में प्रस्तुत किया। तमसा के तट पर क्रौंच युगल में एक के आहत होने पर उनमें जो अथाह मानवीय संवेदना-करुणा उत्पन्न हुई तो अपने आप स्वत: स्फूर्त लौकिक संस्कृत का छन्द 'श्लोक' प्रकट हुआ। श्री नारद के निर्देश पर कविवर ने राम कथा की रचना की। इसी के बाद 'अध्यात्म रामायण' तथा 'आनन्द रामायण' की रचनाएँ हुईं। युगों बाद श्रीरामानन्दाचार्य की शिष्य परम्परा में तुलसीदासजी ने रामचरितमानस की रचना करके मुगलकालीन भारत को रामकथा रस में सबको मग्न कर दिया। अकबर के सेनानी रहीम ने भी श्रद्धा से श्रीराम स्मरण किया। यह है भारत की सांस्कृतिक गौरव गरिमा! विश्वनाथ की काशी में रामचरितमानस की रचना हुई और काशी के पंडित मधुसूदन सरस्वती ने ही लोकभाषा की रामचरितकथा को मान्यता प्रदान की। यह काशी शिव की काशी श्रीराम की भी काशी बनी। वैसे पहले से पास के सारनाथ में भगवान बुद्ध ने तपाख्यान किया था। इस प्रकार काशी क्षेत्र त्रिवेणी संगम संस्कृति का दूसरा क्षेत्र बना। पहला तो प्रयाग है ही।

नि:सन्देह भारत की संस्कृति गंगा जमुनी **तहजीब नहीं त्रिवेणी संगम संस्कृति की पावनभूमि है।** भारत सबको मान्यता देता है। सबको सम्मान देता है। वैदिक संस्कृति-सरस्वती तो नींव में है। यमुना तथा गंगा के क्षेत्र की सभी मान्यताएँ समन्वित हो जाती हैं। गंगा ही आगे बढ़ती हैं। राम गंगा तो आधुनिक युग में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के प्रबन्ध काव्य 'साकेत' तथा नरेन्द्र कोहली की रामकथा उपन्यास शृंखला से ही सर्वदा आगे बढ़ रही हैं। मेरी दृष्टि में निर्गुण राम के भक्त कबीर और सगुण राम के भक्त प्रवर तुलसी– दोनों ने मिलकर रामभक्ति की गंगा बहायी है। मुगलकाल के भयावह वातावरण में जन-जन में रामभक्ति की आस्था जगायी है। यह भी सत्य है कि कबीर ने सगुण उपासना तथा विषम वर्ण व्यवस्था की आलोचना की है। तुलसी ने उनकी आलोचना की है। यह उस युग के चिंतन की स्वाधीनता का प्रमाण है। यह भी ध्यातव्य है कि कबीर आदि निर्गुण सन्तों का प्रभाव

01.pmd 100 5/25/2015, 3:44 PM

बंगाल के निर्गुणवादी बाउल गायकों की वाणी पर पड़ा है। इनके प्रभाव से विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' पर भी कबीर का प्रभाव लक्षित है। यह असाधारण प्रसंग है। यह सब पूज्य आचार्य श्रीरामानन्द के विराट व्यक्तित्व का अवदान है।

मेरी मंगलकामना है कि अभिनव रामानन्दाचार्य श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज की इस सांस्कृतिक साधना से इक्कीसवीं शती में वही समता मूलक-समरसता प्रधान और असीम आस्था पर आधारित श्री रामगंगा का प्रवाह अविरल होता जायेगा। असीम श्रीराम की साधना भी असीम हो, व्यापक हो और अन्ततः इक्कीसवीं शती के उपयुक्त हो।

इस अवसर पर कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं। अपनी एक छोटी रचना देने का साहस कर रहा हूँ–

शील का सौन्दर्य
काव्य का अनुष्टुप छन्द
कला का पंचम स्वर है
वह धनुर्धर है।।१।।

कबीर और नानक का
निर्गुण निराकार
तुलसी का सगुण साकार
आदि कवि का आदर्श
वह नराकार है।।२।।

राज भवन का राम
बनवासी है
सबका विश्वास
मलय निःश्वास
आसेतु हिमाचल का वासी है।।३।।

किसी का वात्सल्य
किसी का सख्य
किसी का माधुर्य

01.pmd 101 5/25/2015, 3:44 PM

सबका मन प्राण है
दीन दुखी का त्राण है।।४।।

उसने सब को जोड़ा था
हृदय से हृदय को
नगर से ग्राम को
ग्राम से तपोवन को
वह सबसे एकात्म हुआ
सबका परमात्म हुआ।।५।।

●

01.pmd 102 5/25/2015, 3:44 PM

आचार्यश्री के कतिपय संस्मरण

कमलेश झा

नवो नवो भवति जायमनोऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम् ।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचन्द्रमस्तिरते दीर्घमायुः ।।

श्रीहनुमत्सहायश्रीराम चिन्मय परमार्थ हैं। वह स्वात्माराम सच्चिदानन्द परम ज्योति हैं। ये ही चराचर जगत् के आश्रय हैं। सर्वविध विद्या एवं तपश्चर्या के प्रकाशक आप स्वयम्प्रकाश हैं। प्रणव एवं गायत्री आपकी स्तुति में सदा सम्प्रवृत्त हैं। वेद, तन्त्र, वेदाङ्ग एवम् अष्टादश विद्या स्थानों में आपकी ही स्तुत्यरूपता प्रतिपादित है। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने आपकी रामायण-कथा का मधुमय गान किया है। त्रिदेव, देवर्षि, महर्षि, योगिजन, विविध भागवत, आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी तथा ज्ञानिजन द्वारा अनादिकाल से निरन्तर आपकी स्तुति की जा रही है, आज तक वह पूरी हुई नहीं। अतः हमारे प्रभु का स्वरूप स्तुत्य है– यह मान्य सिद्धान्त है। कभी भी समाप्त नहीं होने वाली प्रभुस्तुति सदा सम्प्रवृत्त रहेगी।

सिद्धधर्मस्वरूप श्रीराम, वेदविहित यागादि साध्य-धर्म के रूप में भी उपस्थित होकर सदैव स्वजन-कल्याण मार्ग का अनुविधान करते हैं। एवञ्च 'रामो विग्रहवान् धर्मः'– सिद्धान्तसूक्ति एवं 'रामस्य दासोऽस्म्यहम्' –अनुभूति-सूक्ति सुतरां सुप्रथित होती हैं।

जलप्रवाहरूपा त्रैलोक्य पावनी गङ्गा, प्रदूषण भीतिनिर्मुक्त नहीं है किन्तु वाल्मीकि पर्वत से उद्गत होकर श्रीराम-रत्नाकर से समाविष्ट होनेवाली रामायणी कथा गंगा प्रदूषण भीति निर्मुक्त रहकर त्रैलोक्य पावन विधान निपुण है। तभी तो कविताशाखारूढ महिर्ष वाल्मीकि ने कोकिलस्वर में मधुराक्षर– 'राम-राम' का मधुर संकीर्तन किया है जिससे भक्त हृदय, विवश होकर आवर्जित हो जाता है। अयोध्याऽधिपति-दम्पती की अनेक जन्माचरित तपश्चर्या, कौशल्या-हृदयरञ्जन को दशरथ भवन में क्रीडा लीलोत्सुक बना देती है। 'वज्रादपि कठोराणि

अध्यक्ष : धर्मागम विभाग, संस्कृत विद्या धर्मविज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-२२१००५

01.pmd 103 5/25/2015, 3:44 PM

मृदूनि कुसुमादपि। लोकोत्तराणां चेतांसि'– सूक्ति को चरितार्थ करने वाले भरताग्रज के कोमलाङ्गी प्रियानुवनानुव्रजनान्वित राज्य-त्याग एवम् बलवत्सागरत्रासपुरः सरबन्धन समन्वित दुष्टदवदहन– 'रक्षिष्यतीति' विश्वासदादर्य को पोषित करते हैं।

शास्त्रयोनि अयोनि शिवानुध्यात द्वयक्षर श्रीरामनाम मन्त्रवर्ण को आचार्यवर-श्रीमुखत से प्राप्त कर शिष्यभक्त, इष्टसायुज्य-चमत्कृतिरसप्लाविथ होकर कृतकृत्य हो जाता है। तभी तो श्रुतिवचन 'आचार्यवान् पुरुषों वेद' की अभ्यर्हितता अध्यात्मजगत में विश्रुत है।

श्रीरामोत्तरतापनीयोपनिषद् में संवादक्रमोपवर्णित मन्त्रवचनों द्वारा उपर्युक्त श्रुतिवचन सुव्याख्यायित होता है। यथा–

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः सभगवान् यस्तारकं ब्रह्म भुर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमोनमः।
ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः सभगवान् यश्च महेश्वरोभुर्भुवः स्वस्तस्मैवैनमोनमः ।।

सद्गुरु आचार्य, सच्छिष्य को उत्सात-भैरव की जागृति के साथ दिव्य चक्षुष का उन्मीलन कर प्रभु के आन्तर ऐश्वर्यजगत् में प्रवेश की अधिकारिता प्रदान करते हैं हैं। करुणासंप्रवृत्त भागवत आचार्य ने प्रभु की स्वशक्तिसाहाय्य संवलित सृष्टादिलीला का मनोहारी प्रतिपादन किया है–

एकः स्वयं सञ्जगतः सिसृक्षयाऽद्वितीययाऽऽत्मन्यधियोगमायया ।
सृजस्यदः पासि पुनर्ग्रसिष्यसे यथोर्णनाभिर्भगवन् स्वशक्तिभिः ।।

आचार्य सद्गुरु की संगति से सुप्राप अतिशय महत्त्वपूर्ण वस्तु 'शील' है जो हमें शास्त्रानुमोदित ऐहिक सुखभोग से सन्तृप्त करता है तथा भगवत्प्राप्तिरूप पारमार्थिक ऐश्वर्य में सुप्रतिष्ठित कर अतिसन्तुष्ट कर देता है। शास्त्रों में 'शीलं परं भूषणम्–' वचननिचय से प्रशंसित शील के बिना निरतिशय भूतहित प्रभुश्रीराम का साक्षात्कार तो दूर प्रभावी कृपावृष्टि का बिन्दुमात्र भी दुर्लभ होता है। आचार्य-कृपा से प्राप्य सम्पत्प्रकर्ष अनिर्वचनीय होता है। जिस शिष्यभक्त ने प्रभुमय गुरुदेव से स्वात्माभेद को स्थापित कर लिया हो उसे प्रभु विभूतिपात्रता स्वरसतः प्राप्त हो जाती है। यथा–

अभिन्नं वेत्ति यो विद्वान् स्वात्मानंच गुरुं शिवम् ।
तन्नौमि मुक्तमात्मानं विद्याविद्योभयात्मकम् ।।
प्रभुणा भवता यस्य जातं हृदयमेलनम् ।
प्राभवीणां विभूतीनां परमेकः स भाजनम् ।।

यह सनातन धर्म के अतिशय माहात्म्य का आविष्करण है– परम कारुणिक भगवान् स्वयं ही आचार्य रूप में अवतरित होते हैं। यद्वत् श्रीरामदैवत शिव

01.pmd 104 5/25/2015, 3:44 PM

स्वयमेव दक्षिणामूर्ति एवं शंकराचार्य भगवत्पाद के रूप में गृहीतावतार होते हैं तद्वत् स्वयं प्रभु श्रीराम श्रीरामानन्दाचार्य के रूप में सुगृहीतावतार होते हैं। यथा–

रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले ।

आगम एवं निगम-वाङ्मय में शास्त्र एवं शास्त्रयोनि परमेश्वर की अपेक्षा श्रीगुरु-आचार्य की समधिक महिमा गायी जाती है। आचार्यश्री, अत्यन्त दृढ़ता से इस सिद्धान्त का प्रकाशन करते हैं– स्तोत्रसाहित्य की गुरुस्तुति में समस्त शास्त्रीय सिद्धान्तों की अशेष सूत्रकुसुमावली विकीर्ण है।

आश्चर्यकर्मा अरूप उस रूप परमेश्वर श्रीराम के सुदृढ़ साक्षात्कार में आचार्य एवम् शास्त्र के अतिरिक्त पुरुषप्रयत्न की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यथा–

गुरुतः शास्त्रतः स्वतः ।

× × ×

यत्नवद्भिर्दढाभ्यासैः प्रज्ञोत्साह समन्वितैः ।
मेरवोऽपि निगीर्यन्ते कैवप्राक् पौरुषे कथा ।।
क्रियया स्पन्दधर्मिण्या स्वार्थसाधकता स्वयम् ।
साधुसङ्गमसच्छास्त्रतीक्ष्णयोन्नीयते धिया ।।
अनन्तसमतानन्दं परमार्थं स्वकं विदुः ।
सयेभ्यः प्राप्यते यत्नात् सेव्यास्ते शास्त्रसाधवः ।।

स्वच्छ-संवेदन सम्प्राप्त भक्त साधकों की अनुभूति नितरां वन्दनीय है। शास्त्र, आचार्य एवं साधक-सद्भक्तों में प्रकटित स्वच्छता के आश्रयण से अरविन्दाक्ष प्रभु का प्रतिफलन हमारे हृदयारविन्द को उत्फुल्ल कर देता है।

प्रयागराज सङ्गमक्षेत्र के श्रीरामानन्दाचार्य प्राकट्यभूमि में स्थित श्रीहरितमाधवमन्दिर का संरक्षण-संवर्धन, स्वयं श्रीरामानन्दाचार्य जी सिद्धलोक से श्रीरामनरेशाचार्य के रूप में अवतारग्रहण पुरःसर सम्यक्तया सम्पादित कर रहे हैं– यह विवेकी को अदृष्टिगलोचर नहीं है।

१९७४ ई. के निज छात्रावस्था में जन्मभूमि मिथिला से काशी आकर मैं संस्कृतविद्यार्जन में व्यापृत था तभी गङ्गास्नानानुध्यानक्रम की गतागतवेला में इदम्प्रथमतया मैं अत्यन्त मेधावी आपादमस्तक शुभ्रवस्त्रधारी किशोर अध्येता के स्वतः स्फूर्त आभा-वैराग्य-मय मुखमण्डल का अवलोकन किया था। किन्तु गोस्वामी जी के शब्दों में– **तब मैं रहेऊ अचेत।**

01.pmd 105 5/25/2015, 3:44 PM

महान् 'गुरुजन सान्निध्य', एक ओर न्यायागमादिकी प्रखर विद्वत्ता को उक्त किशोर सन्त में आपूरित कर रहा था तथा दूसरी ओर मुझे शैवागमोन्मुख विधा का उपासक बनाया जा रहा था। चिन्मयी श्रीकाशी में प्रभु-कृपा से अन्योन्न स्निग्ध मौनप्रीति परिपोषण हेतु सुमधुर परिपाक स्वरसत: सम्पादित हो रहा था। तात्कालिक छवि तदाप्रभृति निरन्तर विरक्त उत्कृष्ट साधक में विजतृम्भित हो रही है। तत्प्रद्योतनार्थ आज की तिथि में योगवासिष्ठीय वचननिचय हमें आह्लाद-भरित करता है–

तद् वैराग्यं परंश्रेय: स्वतो यदभिजायते ।
× × ×
शमशालिनि सौहार्दवति सर्वेषु जन्तुषु ।
सुजने परमं तत्त्वं स्वयमेव प्रसीदति ।।

समय प्रवाह निज गतिशीलता का अविराम एवम् अभिराम द्रष्टा होता है। विश्वेश्वर-प्रेरणा से विरक्त विद्वान् अध्ययन वेलारब्ध अध्यापन तनुकला का विस्तारण, हरिद्वार समाश्रित होकर सन्तविद्वज्जन के मध्य करने लगे तथा मैं संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा से सम्बद्ध हो गया।

दशनामी के गिरिसाम्प्रदायिक विद्वद्-यतिप्रवराधिष्ठित मठ में ससम्मान प्राप्ताश्रय साधुप्रवर श्रीरामनरेशदास के प्रति सम्बद्ध वैरागी सम्प्रदाय के साधनसम्पन्न साधुओंकी अन्त:प्रेरणा क्रियान्वित हो उठी और आप निजावतारोंद्देश्यपूर्ति हेतु लौकिक संसाधनरिक्त किन्तु आध्यात्मिक समृद्धि से सम्भरित श्रीबिन्दुमाधवाधिष्ठित श्रीमठ, पञ्चगङ्गा, वाराणसी के जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पीठाधीश्वर पर प्रतिष्ठ हुए।

श्रीकाशी प्रेम विरहानलपरिपाकवशाद् नवनवाभिनव होता रहा। १९९० के दशक में महामाहेश्वर गुरुवर रामेश्वर झा की दैनन्दिनियों के पारमहंसश्लोकों के प्रकाशन-सम्पादन निमित्त मैं काशी आया था। उस क्रम में सद्य: आचार्यपद सुप्रतिष्ठि श्रद्धेय जगद्गुरुजी का दर्शन अनियोजित रूप में मुझे प्राप्त हुआ था।

स्वातन्त्र्यसम्प्राप्ति समकाल में भारतीय मनीषा के सम्राट् स्वामी श्रीकाशिकानन्द गिरि, श्रीकाशीनगरी की महाप्रतिभा को औज्ज्वल्य प्रदान कर चुके थे। अद्यावधि वह प्रतिभा सम्राट्, काशी के अनुरूप सम्मानाभिनन्दन से पूजित नहीं हो पाये थे। जगद्गुरु की इच्छा श्रीविश्वेश्वरेच्छा से अभिन्न होकर मचल उठी थी। स्वनामधन्य गिरिजी के अभिनन्दन पद्यविनिर्मिति की

01.pmd 106 5/25/2015, 3:44 PM

आचार्याज्ञाशी: मुझे कृपान्वित कर दी।

क्या यह अभिनन्दनपत्र चलेगा? शब्दावली के साथ मैं आचार्य श्री के चरणों में उपस्थित हुआ। कृपाधायक आचार्यश्री ने– 'चलेगा क्या यह तो दौड़ेगा'– कहकर मुझे प्रोत्साहित कर अभिनन्दन-पत्र-वाचनार्थ यथा समय काशी पुनरागमन की आज्ञा भी कर दी।

जीवन के ऐसे क्षण प्रायेण अविस्मरणीय होते हैं। शनै:-शनै: आचार्य श्री के गुरुस्थान बड़ी पियरी- श्री-विहारम् में विद्यामयी गतिविधि भी प्रसृत होने लगी। चातुर्मास्य-अनुष्ठान में मासावधि आचार्यश्री के अभिभावकत्व में काशी-वास का अवसर मिला। प्रतिदिन कथा-प्रवचनारम्भ में पाँच मिनट बोलने का अवसर भी मुझे प्राप्त होता था।अकस्मात् अनन्तवैशिष्ट्य विशेषित काशी की प्रशंसा करने के क्रम में आचार्यश्री के मुखारबिन्द से शुभाशीष नि:सृत हो उठी–

चिकीर्षिते कर्मणि चक्रपाणौ ना पेक्षतेतत्र सहाय सम्पत् ।
पाञ्चालराजतनयापटसन्निधाने न तन्तवो नैव तुरी न वेमा ।।

'ऐसे काशी के रहते कोई दरभंगा में रहे– यह कैसी बात है?' मेरा रोम-रोम खिल उठा था– मुझसे सन्तयोगी का आशीर्वचनान्वित अनुग्रह प्राप्त हो चुका था। छह महीने के मध्य ही मुझे विश्वेश्वर काशी ने बुला ली। अब मैं काशी-विश्वेश्वर का होकर रह गया हूँ।

परमेश्वर, ब्रह्माण्ड-घट के निर्माण में मृत्पिण्डादि उपादान सम्भार के बिना संकल्पमात्र से प्रवृत्त होकर चरितार्थ होते हैं। दु:शासन द्वारा निर्वस्त्र की जाने वाली पाञ्चाल राजपुत्री की लज्जा रक्षण हेतु जगद्रक्षक प्रभु ने परिधानवस्त्र का निर्माण किया था। तुरी, तन्तु, वेमाप्रभृति योग्य सहायक सामग्री के अभावों में भी प्रभु की इच्छा से ही वह वस्त्र निर्मित हुए थे। दृष्टान्त रूप में योगी सन्तआचार्य का उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है– **'योगीव निरुपादानमर्थजातं प्रकाशयेत् ।'**

प्रभु की व्यापक आङ्गन में सर्वत्र आचार्यश्री की अव्याहत मन्त्रसिद्धि', भक्तजन को अनुगृहीत करती है। मैंने कतिधा अपनी सन्तान एवम् उपस्थित कतिपय अनुग्राह्य जन के प्रति आचार्यश्री की शुभाशीष को लागू होने की प्रत्यक्ष अनुभूति की है।

हमारे गुरु ने पढ़ा रखा है– समस्त चराचर जगत् की आत्मा परमेश्वर हैं। आत्मानुराग तो निसर्गसिद्ध स्वारसिक है। अतएव देवभक्ति हमें अवश्य

01.pmd 107 5/25/2015, 3:44 PM

अनुगृहीत करेगी। भक्तगण की यह प्रबल इच्छा रहती है– परमेश्वरशक्ति सदैव मुझसे अवियुक्त बनी रहे।

'आचार्यश्री' कठिनतम योग, तपस तथा अर्चा-यागादि में स्वयं प्रवृत्त होते हैं किन्तु अपने शिष्य-भक्तों के मध्य वह सहज भाव से भावपूर्ण भक्ति की ही प्रधानता प्रतिपादित करते हैं।

आप, भक्तिरूप महौषधिचर्वण जनित चर्वणानन्दरस– 'जविन्मुक्ति' को वरेण्यरूप में स्वीकारते हैं।

हमारे आचार्य ने हमें भक्तिलता में नानासिद्धिसमाश्लिष्ट मुक्ति एवम् मुक्ति-फलों के जन-धारण सामर्थ्य का अवलोकन कराया है। मनस शास्त्र (अन्त:करण) को दु:खबीज कहा गया है। पर जब वह भक्तिरसायन से आसेचित होता है तो नि:श्रेयस एवं साध्यभक्तिस्वरूप महामृत फल का उपजनन करता है। बाह्य रूपतया समुदित साधनभक्ति, नानाविध विभूतियों का उपलम्भ करती है पर जब वह आन्तर रूप से समुदित होती हुई साध्यभक्तिरूप में विजृम्भित होती है तो मुक्ति उसकी अनुचरी बनकर सेवायें करती हैं।

आचार्य के मार्गदर्शन में भागवत निज उपास्य को मनोवृत्तिविशेष रागादिक का भोग चढ़ा देता है। प्रभु उसमें अमृत रस भरकर उसको सुस्वाद बनाकर चरवते हैं एवं भक्तों के मध्य उस प्रसाद का वितरण कर देते हैं।

मैं श्रीमठ-पञ्चगंगा, वाराणसी की आकाशवृत्ति समाश्रित विभिन्न तीर्थनगराधिष्ठित पूजार्चन-सत्सङ्ग नवमन्दिर-गोशालादि निर्माण की प्रसृमर विधाओं से सुपरिचित नहीं हूँ। तथापि मुझे इस बात का आह्लाद होता है कि जन्माष्टमी महोत्सव के अवसर पर बालकृष्ण की तथा श्रीरामनवमी महोत्सव में बाल राम की चिन्मय उपस्थिति को व्यवहार निर्वाहार्थ निज मनोमुकुर से नि:सारित करने में असमर्थ होकर हमारे आचार्य समाधि एवं व्युत्थान की अन्तरालभूत भेदभूमि के अपसारण में अनायास समर्थ होते हैं।

प्रथम दिवस के पश्चिम में आबालबद्ध नवागन्तुक भी आचार्य सान्निध्य में अमृतोपम आनन्द की अनुभूति करते हैं। अन्योन्यविरोधी भी त्यक्त वैर हो उठते हैं। अनवसर मौनी भी मुखर हो उठते हैं। प्रसुप्त-आस्तिक्य भी जागृत आस्तिक होकर सेवापरायण बन जाते हैं। विभिन्न प्रान्तादिभेद से गरबा-प्रभृति नृत्यगीतादि में आचार्यश्री को केन्द्रित कर पूर्णगोपीभाव में भक्तजन प्रवृत्त होकर आत्म-विभोर हो उठते हैं।

सामान्यतया यह देखा जाता है कि आज का राजनेता देश (राष्ट्रिय)

01.pmd 108 5/25/2015, 3:44 PM

स्तर से स्वयं को अलग-थलग देखता है। इसके विपरीत वह स्वयं को पार्टी स्तरीय बना लिया है। कभी उनकी राजनीति-बहस छिड़ उठती है तब अखबार के अनध्येता आचार्यश्री, स्वप्रतिभोच्छलन से राजनीतिज्ञों के मध्य कुशल स्पृहणीय वक्तृता की भूमिका का निर्बहण नैपुणी के साथ करते हैं। धर्माचार्यों का राजनैतिक दलीय संकीर्णता से उत्तीर्ण होना सहजधर्म होता है। अस्तु'

'तवकथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवण मङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्तिते भूरिदाजनाः ।।

इस गीत सूक्ति बलायात महादानी आचार्यश्री को नमन कर निज आनन्दभावना को आनन्द धाम में समर्पण करता हुआ मैं कृतार्थ होता हूँ–

सर्वसंविन्नदीभेदाभिन्न विश्रान्तिभूमये ।
नमः प्रमातृवपुषे शिवचैतन्य सिन्धवे ।।

× × ×

सर्वस्य तत्त्वस्य च तत्त्वभूतो गुरु; सएको नहिकश्चिदन्यः ।
विभासमानोऽपि नभास्य ते यो गुप्तो गुरुः सोऽभिनवः सतास्ते ।।

× × ×

रामे चित्तरमयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धरेः ।

●

01.pmd 109 5/25/2015, 3:44 PM

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि

ब्रह्मानन्द शुक्ल

लोकोत्तराणां चेत्तासि को न विज्ञातुमर्हति ।।

वज्र से भी कठोर एवं पुष्प से भी कोमल लोकोत्तर पुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है?

'उत्तररामचरित' के महाकवि भवभूति का यह पद्य अक्षरश: घटित होता है अनन्त श्री विभूषित श्रीमज्जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पद प्रतिष्ठित पूज्य पाद स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज श्रीमठ पञ्चगंगा काशी के स्वभाव एवं आचरण में। जागतिक कार्यों में अत्यन्त व्यावृत्त होने पर भी अपने नित्य नैमित्तिक कार्य के प्रति सदा सजग चरित्र को अवलोकित करने पर यही प्रतीत होता है कि पूज्य पाद स्वामी जी का स्वभाव वज्र से भी कठोर है, तथा सहज समझ में न आने वाला है। अभी कुछ ही दिवस पूर्व मैं दर्शनार्थ श्रीमठ गया था। महाराजश्री का दर्शन मार्ग में ही हो गया मन अत्यन्तप्रसन्न हुआ, किन्तु मुझे यह ज्ञात नहीं था कि महाराज श्री कहाँ से पधार रहें हैं। श्रीमठ पहुँचने पर सम्मुख बैठ कर यात्रा प्रसङ्ग की चर्चा में यह ज्ञात हुआ कि पूज्यश्री बहुत दूर की यात्रा से आ रहे हैं। मैं विचार कर रहा था कुछ उच्छिष्ट प्रसाद का सौभाग्य भी सम्प्राप्त होगा। किन्तु नीचे आने पर विदित हुआ कि महाराज जी का वही पुराना कठोर नियम रात्रि में मात्र एक गिलास गो दुग्ध ही ग्रहण करना है। इसके बाद स्वाध्याय चिन्तन एवम् भजन सामान्यत: लोगों को पता भी नहीं चलता कि रात्रि में शयन भी होता है या नहीं। पूज्य पाद स्वामी चरण का आगमन कहाँ से हो रहा है, यह पूछने पर ज्ञात हुआ कि श्रीमठ के लिए पूर्ण समर्पित परम तपस्विनी श्रीमहन्त उमावा पालियाद का पाञ्चभौतिक शरीर शान्त हो गया। पूज्यश्री चरण वहीं से प्रत्यावर्तित हो रहे हैं।

वैसे कोई भी यह नहीं जान सकता कि पूज्य चरण का सर्वाधिक स्नेह आशीर्वाद किसको मिल रहा है। कई बार तो मुझे ऐसा लगा करता है कि सर्वाधिक कृपा भाजन तो मैं ही तथा यह पूर्णतया सत्य भी है ऐसे ही मेरी तरह

संस्कृत प्राध्यापक, चुनार, मिर्जापुर

01.pmd 110 5/25/2015, 3:44 PM

आम लोगों के मुख से भी यही सुना जाता है। इसमें भी सत्यता है क्योंकि जीव भाव के लिए अपार कारुण्य एवं वात्सल्य श्रीचरणों का सहज स्वभाव है। हरिद्वार में मर्यादापुरुषोत्तम सर्वावतारी परम प्रभुश्रीराम का अद्वितीय विशाल मन्दिर निर्माणाधीन है। प्रभूतधन की अपेक्षा है किन्तु श्रीराम मन्दिर के लिए भी अमयार्पित विधि से धन संग्रह नहीं हो सकता। जबकि विश्वभर में फैले हुए केवल अपने शिष्य समुदाय मात्र से भी यह बात प्रचारित कर दी जाय तो मुझे विश्वास है कि एक मास का समय सौ करोड़ रुपये का संग्रह के लिए सामान्य बात है। गहराई से विचार करने पर यह बात समझ में आती है कि पूज्य चरण का विचार कितना महान है, किसी भी परिस्थिति में मर्यादा का अति क्रमण नहीं हो सकता है।

श्रीमठ में स्वामी रामानन्द जी के प्रस्तर चित्र के साथ ही प्रधान शिष्यों के चित्र स्थापित करना एक अत्यन्त उत्कृष्ट विचार एवं औदार्य का उदाहरण है। स्वामी अनन्तानन्द, रैदास, कबीर आदि का चित्र आद्य आचार्य चरण की बराबरी में करना आपकी दूर दृष्टि का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इतना ही नहीं साहित्य के माध्यम से स्वामी रामानन्द जी के सिद्धान्त को जन-जन में प्रचार में करना 'सर्वेप्रपत्तेराधिकारिणो मता:'' का अक्षरश: अनुपालन करते हुए जिज्ञासु श्रद्धावान् जनों को रामतारक मन्त्र का सदुपदेश करना तथा उन्हें पूर्ण रूप से राममय बना देना आपका सहज स्वभाव हो गया।

श्रीराम सहस्रार्चन का प्रतिष्ठापन तो आपके द्वारा ही हुआ है जिसके फलस्वरूप अनेक घरों में नित्य श्रीतुलसी जी के सहज पत्र श्री रामसहस्र स्तोत्र के मन्त्रों के उच्चारण के साथ किया जाता है। श्री नारायण को तुलसी कितनी प्रिय है। यह प्राय: सभी जानते हैं।

तुलसी दल समर्पण से ठाकुर जी कितने प्रसन्न होते हैं। यह सहज ही समझा जा सकता है। पर्यावरण की शुद्धि मन की शुद्धि तन की शुद्धि धन की शुद्धि के लिए परमावश्यक यज्ञों का सम्पादन पूर्ण वैदिक विधि से साङ्गोपाङ्ग पूर्ण करना आपके व्यक्तित्व का सहज आदर्श है। शास्त्रों की रक्षा के लिए अपनी विधा के उत्कृष्ट विद्वानों का एक लाख रुपये के पुरस्कार से सम्मानित करना आपकी शास्त्र निष्ठा का जीवन्त प्रमाण है।

आपका यह परमौदार्य ही है कि जिनसे कोई विशेष परिचय नहीं सम्बन्ध नहीं वे भी यदि श्री चरणों से अपनी व्यथा सुना देते हैं तो उन्हें भी सन्तृप्त करके

01.pmd 111 5/25/2015, 3:44 PM

ही जाने की अनुमति प्राप्त होती है। मुझे पूरी जानकरी है श्रीमठ में रहकर पढ़ने वाले छात्रों का पूर्णतया भरण पोषण तो होता है। न जाने कितने ऐसे परिवार हैं जिनके बच्चों की उच्च शिक्षादि की व्व्यवस्था अत्यन्त गोपनीयता के साथ सम्पन्न करते हैं।

मैं गुरुदीक्षा प्राप्ति के लिए बहुत प्रयत्न करता था। अनेक उत्तम कोटि के सत्पुरुषों से मेरा परिचय रहा है। उनका मेरे ऊपर प्रगाढ़ स्नेह रहा है। मैं चिर ऋणी हूँ, किन्तु पूज्यश्री चरण ने मुझे अपनाया इससे मैं अत्यन्त अह्लादित हूँ तथा अवर्णनीय सुख मुझे प्राप्त होता है।

●

01.pmd 112 5/25/2015, 3:44 PM

एक सत्त्वसम्भृत व्यक्तित्व : स्वामीश्रीरामनरेशाचार्य

पवनकुमार शास्त्री

।।श्रीगुरुः शरणं मम।। इससे अधिक प्रमोद का कोई कारण नहीं हो सकता कि अखिल विश्व को पवित्र करने में समर्थ श्रीरामनाम महामंत्र को सर्वजन सुलभ कराने वाले जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जी की पावन पीठ पर आसीन वर्तमान जगद्गुरु श्रीरामनरेशाचार्य जी महाराज की षष्ठिपूर्त्ति एवं पीठासीन होने की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रकाश्यमान अभिनन्दन ग्रन्थ में मुझ अकिंचन को किंचिद्वाक्यकुसुमाञ्जलि समर्पित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

मैं काशी निवासी हूँ। मैं बाल्यकाल से ही स्थानीय पञ्चगंगा घाट एवं उससे सटे हुए बालाजी घाट पर गंगा स्नान हेतु नित्य जाया करता था और वहाँ से लौटते समय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जी की पुण्य-भूमि (आश्रम, सिंहासन एवं चरणपादुका आदि) की परिक्रमा करते हुए श्री बालाजी एवं श्री विन्दुमाधव जी के चरणोदकों का पान करके घर पहुँचता था। अत: परमपूज्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी के दर्शनों का अवसर तो मुझे उनके पीठासीन होने के तत्काल बाद से ही मिलने लगा था और सांगवेद विद्यालय आदि स्थानीय विद्याभूमियों में सारस्वत-साधनारत विद्वन्मण्डली में प्रसृत आप की कीर्त्तियों को सुनने का भी अवसर मिलने लगा था किन्तु स्वामी जी से मेरा विशेष सम्पर्क जनवरी सन् २००१ ई. में सम्पन्न हुए जगद्गुरु श्रीरामानन्द सप्तशताब्दी महोत्सव के समापन सत्र में बन पड़ा जो निरन्तर वृद्धिगत होता हुआ अद्यावधि पर्यन्त बना हुआ है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्र जी की आराधना में सतत संलग्न रहने वाले स्वामी जी अपने पूर्वाचार्यों सहित आदि जगद्गुरु श्रीरामानन्द जी के श्रीचरणों में अगाध निष्ठा रखते हैं। उक्त सप्तशताब्दी महोत्सव का वर्ष-पर्यन्त चलने वाला राष्ट्रव्यापी अनुष्ठान, शतमुखकोटि रामनाम महायज्ञ का

01.pmd 113 5/25/2015, 3:44 PM

सांगोपांग भव्य आयोजन, श्रीमठ के लुप्त हो रहे भौतिक स्वरूप का पुनः भव्यतम रूप में अवस्थापनादि कार्य इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। सप्तशताब्दी महोत्सव के उक्त समापन समारोह की पूर्वसन्ध्या में परमादरणीय श्री गणेश्वरशास्त्री द्रविड़ जी के साथ मैं स्वामी जी के समक्ष उपस्थित हुआ। उस समय स्वामीजी को जैसे ही यह पता लगा कि मैं रामानन्द सम्प्रदाय में वंशपरम्परा से दीक्षित हूँ तो उन्होंने तत्काल मुझे शतमुखकोटि यज्ञ में एक कुण्ड पर सविधि हवन करने का दायित्व साशीर्वाद सौंप दिया और कहा कि एतदर्थ आप सर्वाधिक उपयुक्त सत्पात्र हैं।

उस अमित तेजस्वी यज्ञ में 'ह्रीं रां रामाय नमः स्वाहा', 'ह्रीं रां रामाय नमः स्वाहा की निरन्तर उच्चरित होने वाली मंगलमय मंत्रध्वनि आज भी कानों में गूँजती है। यज्ञकुण्डों से निकलने वाली अग्नि की लाल-पीली ज्वालायें, उनमें आचार्य-ब्रह्मा होता एवं यजमानों द्वारा दी जाने वाली आहुतियाँ तथा यज्ञमण्डप के बिल्कुल मध्य में प्रधान देवता श्रीरामचन्द्र जी की अपार करुणा बिखेरती उपस्थिति-विषयक स्मृतियाँ आज भी आँखों के समक्ष तैरने लगती हैं। मन उस 'न भूतो न भविष्यति' वाले आनन्दोल्लास से उल्लसित हो उठता है। महोत्सव में पधारे कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य स्वामी श्री जयेन्द्र सरस्वती जी के अमृतोपम उपदेश एवं उनके स्वागत में व्यक्त किये गये आदरणीय श्री स्वामी रामनरेशाचार्य जी के उद्‌गार आज भी हृदय में आनन्द उच्छलित करते हैं।

स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी ने आदि जगद्‌गुरु श्री रामानन्दाचार्य की यशः पताका को दिग्‌-दिगन्त में फहराने के लिए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसन्धान एवं अनुशीलन हेतु व्यापक कार्य किया है। संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी के कई राष्ट्रीय स्तर के ख्यातिप्राप्त विद्वानों ने इस विषय में व्यापक परिशीलन करके कई ग्रन्थों की रचना की है और उन्हें श्रीमठ द्वारा प्रकाशित किया गया है। डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' का 'पायसपायी', आचार्य देवर्षिकलानाथशास्त्री का, Swami Ramanand : The Pioneer of Rambhakti प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी के 'श्रीरामानन्दचरितम्‌' एवं 'श्रीरामानन्द सतसई' तथा डॉ. मंगलाप्रसाद का 'रामानन्द विजय' नामक ग्रन्थ इस दिशा में विशेष उल्लेखनीय है। कुम्भस्थलों तथा सप्तशताब्दी महोत्सव आदि पर डॉ. उदयप्रताप सिंह द्वारा सम्पादित कई विशिष्ट ग्रन्थ भी श्रीमठ ने प्रकाशित किये हैं जिनमें अनेक राष्ट्र विश्रुत विद्वानों

01.pmd 114 5/25/2015, 3:44 PM

ने श्रीमठ एवं स्वामी जी के सम्बन्ध में अपने भाव व्यक्त किये हैं।

नाना शास्त्रों के तलस्पर्शी स्वामी जी ने सारस्वत साधना, विद्यार्जन एवं विद्वत्पूजन (सत्कार) के क्षेत्र में भी महनीय कार्य किये हैं। श्रीमठ के समीप में आपकी प्रेरणा से पालियादगादीपतिधर्म-गौरव श्रीमहान्त उमाबा ने अपने पति श्री अमराबापू की पुण्यस्मृति में अमराबापू संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की है, जिसमें संस्कृत के छात्र वेद-वेदांग एवं शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। पूज्यश्री स्वामी जी द्वारा प्रतिवर्ष रामानन्द जयन्ती पर एक विद्वान् को एक लाख रुपये का 'जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पुरस्कार' दिया जाता है। सन् १९९५ ई. से प्रारम्भ किये गये इस अभियान में अब तक राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त १५ विद्वानों को सम्मानित किया जा चुका है। इन अवसरों पर आयोजित किये गये विद्वत्पूजन के क्रम में सहस्राधिक अन्य विद्वानों को भी सत्कृत किया गया है। स्वामी जी के प्रताप से आज पूरे देश में विभिन्न क्षेत्रों के अनेक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् श्रीमठ से जुड़ चुके हैं और निरन्तर जुड़ते जा रहे हैं।

आदरणीय स्वामी जी के प्रयासों से केन्द्र सरकार ने जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य की महत्ता को स्वीकार किया तथा सन् २००२ ई. के फरवरी माह में उन पर डाक टिकट जारी किया। काशी में पियरी स्थित श्री विहारम्, डुमरी स्थित रामानन्दाचार्य गोशाला एवं उद्यान, प्रयाग का जगद्गुरु रामानन्दाचार्य प्राकट्य धाम, जबलपुर का प्रेमानन्द आश्रम एवं हरिद्वार का श्रीराम मन्दिर आदरणीय श्रीस्वामी जी की मंगल-साधनाओं के प्रतिरूप हैं।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये– 'परमपूज्य श्री स्वामीजी भक्तों द्वारा समर्पित दक्षिणादि समस्त चलाचल सम्पत्तियों को भगवान् श्रीराम की धरोहर मानते हैं तथा लेने-देने के व्यवहार से स्वयं को असम्पृक्त रखते हैं। रावण जैसे महाबलशाली राक्षस का वध करके भी जिस प्रकार भगवान् श्रीराम ने उसका श्रेय सुग्रीवादि प्रियसखाओं को दे दिया था (तुम्हरें बल मैं रावनु मारयो–मानस ६/११७/४) उसी प्रकार आदरणीय श्रीस्वामी जी भी विभिन्न अनुष्ठानों के प्रमुख कर्णधार होते हुए भी उसका श्रेय सहयोगियों को दे देते हैं। विद्वानों को दिये जाने वाली रामानन्दाचार्य पुरस्कार प्राय: शिष्यगण ही अपने हाथों से देते हैं। स्वामी जी की यह उदारता मन को मोह लेती है।

स्वामी जी की वाणी में मधुरता, व्यवहार में विनय भाव, शास्त्रों में तलस्पर्शी पाण्डित्य तथा विश्वप्रसृत शुभ्रयश के सम्बन्ध में मेरे शोध निर्देशक

01.pmd 115 5/25/2015, 3:44 PM

पूज्य प्रो. कैलासपति त्रिपाठी जी (सम्प्रति स्वर्गीय कहते थे कि यह निश्चय ही स्वामी जी के लोकोत्तर पुण्य प्रभाव एवं गुरुदेवतादि के प्रसाद का फल है। सच ही कहा है कि ''त्रेता युग में श्रीरामचन्द्रजी अपने उदात्त गुणों के आधार पर जगदाराध्य बन गये थे, मध्यकाल में स्वामी रामानन्द जी इन्हीं गुणों के कारण रामावतार कहे गये थे तथा वर्त्तमान में स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य जी इन्हीं गुणों के आधार पर अभिनव रामानन्द बन गये हैं।'' (डॉ. यू.पी. सिंह एक आलेख में)। परम करुणावरुणालय आनन्दकन्द श्रीरामचन्द्र जी से मेरी तथा मेरा परिवार की यह विनम्र प्रार्थना है कि वे पूज्य श्री स्वामी जी को शतायु करें ताकि स्वामी जी की वात्सल्यपूर्ण छत्र-छाया में हम शिष्यगण तथा यह सम्पूर्ण जगत् उत्तरोत्तर समृद्धि के पथ पर अग्रसर होता रहे। हरि:शरणम्।।

●

01.pmd 116 5/25/2015, 3:44 PM

'श्रीरामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भतो महीतले'

स्वामी फूलडोल बिहारीदास

श्री आचार्य माँ विजानीयात् 'श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यौ द्वितीय हेतु जगतरण कियो' 'तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा' इन आर्यवचनों के अनुसार भगवतपाद् जगत्गुरु श्री रामानन्दाचार्य सर्वेश्वर प्रभु, शरणागत वत्सल, कलिपावनावतार हिन्दू धर्मोद्धारक द्वादश महाभागवतो के साथ साक्षात् श्री परमब्रह्म परमात्मा श्री रामजी ही इस धराधाम पर अवतरित हुए।

सगुण वैष्णव भक्ति सिद्धान्तों को रूप देने वाले, ब्रह्मसूत्रों में दर्शनशास्त्रीय तत्व चिन्तन को खोल कर रख देने वाले चार प्रमुख आचार्य रामानुज, श्रीमाधवाचार्य, श्रीविष्णुस्वामी, श्रीनिम्बार्काचार्य, श्रीवल्लभाचार्य जिन्होंने विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत आदि के साम्प्रदायिक सिद्धान्तों के प्रवर्तक आचार्य दक्षिण भारत के रहे, अद्वैत वेदान्त के शिखर आचार्य शंकराचार्य केरल के थे सगुण वैष्णव भक्ति भगीरथी को सर्वजन-सुलभ शुचि शीतल सन्देश उत्तर भारत में प्रवाहित करने वाले श्री रामानन्दचार्य एवं कलिपावनावतार प्रेमधन लुटाने वाले श्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु समााज के साधारण से साधारण व्यक्ति भक्ति की संजीवनी पहुँचाना उनकी मुख्य भूमिका रही है। **जाति पाँति पूछे न कोई, हरि को भजै सो हरि को होई ।।**

श्री वैष्णव निष्ठा समुन्नायक, श्री राम की पराशक्ति के प्रदर्शक वैष्णव समाज के गौरवभूत परम शास्त्रज्ञ विद्वान् श्री स्वामी श्री रामानन्दाचार्य जगद्गुरु पंचगंगापीठ के वह परमपुरुष, वह जागृत पुरुष जिसने सत्य ही राह पर चलते हुए, साधना की भट्टी में अपने को तपाकर कुन्दन की भाँति कीर्तिमान कर दिया है, सत्य के साक्षात्कार और परमतत्व के प्रकाश से अपने रोम रोम को आनन्दित कर लिया है। ऐसे जागृति पुरुष को ही हमारी संस्कृति ने सद्गुरु के नाम से श्री जगत्गुरु के नाम से विभूषित किया है ऐसे सत्गुरु के हृदय से ही करुणा की विशालधारा प्रवाहित होती है। समाज के दुःखदर्द तनाव चिन्ता को दूर करने के

श्रीमहांत, अखिल भारतीय चतुःसम्प्रदाय श्री चैतन्यकुटी, वृंदावन मथुरा, (उ.प्र.)

01.pmd 117 5/25/2015, 3:44 PM

लिये इन समस्त गुणों को प्रकृति तत्वदर्शी तपस्वी, वीतराग महापुरुषों का चरित्र जीवन को महान बनाने की एक साथ प्रेरणा देता है। जीवन का मूल क्या है? किस हेतु से प्राप्त हुआ है? मानव जीवन और उसकी लक्ष्य की प्राप्ति कैसे हो सकती है? मानव में निहित अपार अलौकिक संभावनाओं क्षमताओं को कैसे प्रगट किया जा सकता है? महापुरुषों का जीवन स्वयं में एक समाधान होता है, इन सब जिज्ञासाओं को साधन पथ में जब जब विश्वास डगमगाने लगे निश्चय लड़खड़ाने लगें, संयम, संतोष, सहनशीलता की कसौटी पर साधना खरी नहीं उतर रही हो तब तक विशेष आवश्यकता है किसी अनुभव सिद्ध सन्त महापुरुष के जीवन दर्शन की त्याग, वैराग्य अन्यता, एकनिष्ठा, साधन पथ की परिपक्वता प्रभृति अध्यात्मिक प्रेरणाओं का एक अनूठा उदाहरण, अध्यात्म पथ के पथिकों, साधकों, ज्ञान पिपासुओं के लिए एक दिव्य आदर्श है।

अनन्तश्री विभूषित आचार्य जगत्गुरु स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज के श्री चरणों में प्रथम मेरी ओर से शत-शत, सहस्र कोटि-कोटि दण्डवत् प्रणाम स्वीकार करें।

प्रेम के फूल, प्रार्थना के फूल, समर्पण के फूल, श्रद्धा के फूल उनके श्री चरणों में समर्पित है। मैं क्या भेट करूँ, क्या पूजा करूँ, बस मेरा नम स्वीकार करें।

श्वाँस-श्वाँस से, रोम रोम से प्राणों के कण कण से यही प्रार्थना सदा- अनुभव करता हूँ कि आप सदा सुखी रहें, आनन्द में रहें, शतायु हो सदा भजन, साधन संस्कृति के लिए, सम्प्रदाय के लिये शरीर से स्वस्थ, भजनसाधन में मस्त, तन्दुरुस्त रहें। भटके हुओ को राह दिखायें, नास्तिकों को आस्तिक बनाएँ आप सच्चे सन्त, सच्चे सत्पुरुष, सच्चे महात्मा हैं। 'आप शतायु, चिरायु हों'।

इति शुभ कामना के साथ।

01.pmd 118 5/25/2015, 3:44 PM